

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

[سورة قمر: ١٤] . وَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ .

तर्जमा : और हमने कुर्आन को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया है,
तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है.

कुर्आन का पैगाम

मुन्ताख़ख़ आयात

गुजराती

पेहला अेडीशन

रमजानुल मुबारक १४४० | मई २०१९

دینیات
DEENIYAT

पेश लङ्ग

कुर्आने करीम अल्लाह तआला की वो किताब है जिस की बढौलत जलील व इस्वा ठन्सानों को ठञ्जत मिली, इस में गौर व फ़िक करने वालों को लिदायत मिली, इस की तिलावत करने वालों को येन व सुकून मिला, इस पर अमल करने वालों को काम्याबी का परवाना मिला. ये ठन्सानों को अंधेरो से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाने वाली, लटके लूओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली और बिछड़े लूओं को अल्लाह से मिलाने वाली किताब है. इस के फ़ाँदल और फ़वाँद भेशुमार हैं. इस जैसा कलाम आज तक न कोई ला सका है और न कियामत तक ला सकेगा.

लूअरे अकरम ﷺ का एरशाह है के कुर्आने करीम जैसा सिफ़ारिशो है जिस की सिफ़ारिश कुबूल की जाये, अंदों की अपिशो के लिये जैसी कोशिश करने वाला है के जिस की कोशिश कुबूल की जाये. जे इस को अपना एमाम और रेहबर बनायेगा, उस को ये जन्नत में ले जायेगा और इस पर अमल न करने वाले को जहन्नम की तरफ़ ले जायेगा. (शोअबुल एमान : २०१०, ज़ाबिर र.ह.)

कुर्आन की तिलावत को लाजिम पकडो, वो तुम्हारे लिये जमीन पर लिदायत का नूर है और आभिरत के लिये ज़मीरा है.

(मोअजमे सगीर : ८४८, अबू सईद र.ह.)

अँके कुर्आने करीम अरबी ज़बान में है, इस लिये उम्मत का जडा तफ़का उस की तालीमात से दूर और जे-जबर है. इसी वजह से हमारे अस्लाह ने उम्मत के इस तफ़के को कुर्आनी लिदायत और रब्बानी तालीमात से वाकिफ़ कराने की गरज से मुफ़्तलिफ़ ज़बानों में कुर्आने करीम का तर्जमा शायेअ किया. इस की मुफ़्तसर और जडी जडी तफ़सीरें लिर्भी और इस के उलूम व मआरिफ़ को लोगों तक पहुँचाने की कोशिशें इरमाई, उस के जावबूद शिद्दत से इस जात का तकाज़ा था के इन्तिलाई मुफ़्तसर वक़्त में कुर्आने करीम के पैग़ाम और इस की तालीमात का जेक जैसा हसीन गुलदस्ता तय्यार किया जाये, जिस के जरीये कुर्आने करीम के मुतालजे और तकाज़ों का अचछी तरह एल्म हो जाये और उन के अंदर अमल करने का जेहसास और ज़जबा पैदा हो जाये. युनांये एदार-जे-दीनियात अल्लाह की तौईक से कुर्आन का पैग़ाम नामी किताब उम्मते मुहम्मदिया के सामने मुफ़्तलिफ़ ज़बानों में पेश करने की सआहत हासिल कर रहा है.

इस किताब में मुफ़्तलिफ़ अफ़्लाकी व इस्लाही इन्वानात के तहत मुन्तजज कुर्आनी आयतें और उन का तर्जमा जैनल कौसेन में वज़ाहत के साथ दिया गया है और कहीं कहीं तर्जमे के ज़ाबु कुर्आनी आयात का जुलासा और मफ़हूम पेश किया गया है. इस किताब से फ़ाँदल उठाने वाले हज़रात से गुज़ारिश है के

- ▶ वो कुर्आन के इस पैग़ाम को समज कर अमल करने और किसी मोअ्तबर आलिमे दीन की रेहनुमाई में मुक़म्मल कुर्आने करीम को पढने की कोशिश करें.
- ▶ इस मुफ़्तसर किताब में कुर्आने करीम के हर पारे को लेकर उस के चंद मज़ामीन पर रोशनी डाली गई.
- ▶ तीन सफ़े पर जेक ही पारे के मज़ामीन दर्ज किये जाये हैं.
- ▶ इस किताब को जगैर वुजू व तलारत के हाथ न लगायें.
- ▶ तरावीह व वित्र के जाद जेक पारे की तर्तीब के जेतिबार से यह मज़ामीन पढ कर सुनाये जा सकते हैं. इन्शा अल्लाह आप १० मिनट के अंदर कुर्आने करीम के इस अहम पैग़ाम को सुनने की सआहत हासिल कर लेंगे.
- ▶ अहम्म-जे-किराम से गुज़ारिश है के तरावीह के जाद वक़्त कम और मुफ़्तसर होने की वजह से कुर्आने करीम की आयात की तिलावत न करें, जेके उस का तर्जमा और मफ़हूम पढ कर सुना दें.
- ▶ कुर्आन के पैग़ाम को आम करने के ज़जबे के पेशे नज़र मसाहिद में, स्कूल की असेंबली में और घरों में इज्तिमाई तौर पर पढने का मामूल बनायें.

अज़ीर में दूया है के अल्लाह तआला इस कोशिश को कुबूल इरमा कर अजाम व जवास के लिये नज़ा जफ़ा और हमारे लिये आभिरत का ज़मीरा बनाये. आमीन या रब्बल आलमीन

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۗ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أُنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢﴾

● **अेक अल्लाह ही की ध्यात करो :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : २१, २२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे लोगो! अपने उस परवरद्विगार की ध्यात करो, जिस ने तुम्हें और उन लोगों को भी पैदा किया, जे तुम से पेहले गुजरे हैं ताके तुम अल्लाह से डरने वाले बन जाओ. (वो परवरद्विगार अैसा है) जिस ने तुम्हारे लिये जमीन को बिछौना बनाया और आस्मान को छत बनाया और आस्मान से पानी बरसाया, फिर उस के अरीये तुम्हारे रिजक के तौर पर इल निकाले, लिहाजा अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठेहराओ, जब के तुम (ये सभ बातें) जानते हो.

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣﴾ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِنَارِ الْآزْفَىٰ ۗ وَلَهُمْ فِيهَا آزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤﴾

● **कुर्आने करीम अल्लाह की सखी किताब है :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : २३, २४ में ये बात बताई गई है के कुर्आने करीम अल्लाह ही का कलाम है : अहले अरब कुर्आने करीम को अल्लाह की सखी किताब मानने के बजाये मुहम्मद ﷺ का बनाया हुआ कलाम कहते थे. अल्लाह तआला ने उन को साइ और वाजेह अल्लाह में इरमाया : अगर तुम को कुर्आन के अल्लाह का कलाम होने के बारे में शक है, तो कुर्आन जैसी अेक छोट्टी सी सूत ही बना कर ले आओ और अल्लाह के अलावा जिस की मदद हासिल करना चाहो कर लो, मगर वो अपनी इसाहत, बलागत और जमान दानी पर नाज करने के बावजूद आज तक इस बात का कोई जवाब नहीं दे सके और न आठन्दा दे सकेंगे. ये इस बात की अलामत है के कुर्आने करीम अल्लाह का कलाम है.

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأْتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا ۚ وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾

● **नेक अमल करने वाले मोमिन अंदों के लिये जन्नत में नेअमते :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : २५ में अल्लाह तआला वतआला का इरशाह है : जे लोग धमान लाये हैं और उनहोंने नेक अमल किये हैं, उन को भुशाभबरी दे दो के उनके लिये (जन्नत में) अैसे आगात (तय्यार किये गये) हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जब कभी उनको उन (आगात) में से कोई इल रिजक के तौर पर दिया जायेगा, तो वो कहेंगे : ये वही है जे हमें पेहले भी (दुन्या में) दिया गया था और उनहें वो रिजक अैसा ही दिया जायेगा जे हमने में (दुन्या के इल जैसा) मिलता बुलता होगा, (लेकिन इस का मजा दुन्या के इल से बिलकुल अलग होगा) और उन के लिये वहां पाकीजा बीवियां होंगी और वो धन (जन्नत के आगों) में हमेशा हमेशा रहेंगे.

وَلَا تَشْكُرُوا بِالْبَيْتِ الَّذِي بُنِيَ لِلَّهِ ۖ وَإِنَّمَا تَأْكُلُونَ مِنْهُ لَحْمًا طَيِّبًا ۗ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكعُوا مَعَ الرَّكعِينَ ﴿٧﴾

● **इक आत को मत छुपाओ :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ४१ ता ४३ में अल्लाह तआला वतआला का इरमान है : मेरी आयतों को मामूली सी कीमत लेकर न बेचो और (किसी और के बजाये) सिर्फ मेरा भौइ दल में रभो और इक को आतिल के साथ मत मिलाओ और न इक आत को छुपाओ जब के (असल इकीकत) तुम अखी तरह जानते हो और नमाज काधम करो और अकाल अदा करो और इकूअ करने वालों के साथ इकूअ करो.

اتَّمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَيْتِ وَتَنْسُونَ أَنْفُسَكُمْ ﴿٨﴾

● **नेक काम की दावत देते हुअे भुद भी अमल करो :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ४४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : क्या तुम (दूसरे) लोगों को तो नेकी का हुकम देते हो और भुद अपने आपको लूल जाते हो?

وَأَسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٩﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلاقُوا رَبَّهُمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ راجِعُونَ ﴿١٠﴾

● **किसी नेअमत के न मिलने पर सअर करो और नमाज पढो :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ४५, ४६ में अल्लाह तआला वतआला इरशाह इरमाते हैं : सअर और नमाज से मदद हासिल करो, नमाज लारी अइर मावूम होती है, मगर उन लोगों को नहीं जे भुशरू (यानी ध्यान और आबिज्ज) से पढते हैं, (और) जे इस आत का अयाल रभते हैं के वो (कियामत के दिन) अपने परवरद्विगार से मिलने वाले हैं और उनको उसी की तरफ लौट कर जाना है.

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْرِي فِيهِ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١١﴾

● **कियामत के दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ४८ में अल्लाह तआला वतआला का इरशाह है : उस (कियामत के) दिन से डरो, जिस दिन कोई शअस भी किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, न किसी से कोई सिफारिश कुबूल की जायेगी, न किसी से किसी किस्म का मुआवजा लिया जायेगा और न उनको कोई मदद पहुंचेगी (अल्के उस दिन हर आदमी का अपना अमल काम आयेगा).

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ إِذَا شُدُّ قَسْوَةً ۖ وَإِنْ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنْ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

● **गुनाह करने से अयो :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ७४ में ये अबर ही गई है के गुनाहों से दल सप्त हो जाता है : अल्लाह तआला ने ध-सान के दल में इक व सय आत के कुबूल करने की सलाहियत अता इरमाई है. लेकिन ध-सान अल्लाह की नाइरमानी और गुनाह कर के धतना आगे अढ जाता है के उस का दल पत्थर से भी अयादा सप्त हो जाता है. फिर न तो वो इक आत को कुबूल करता है और न अल्लाह के भौइ से डरता है. गुनाहों की कसरत से दल में सप्टी पैदा हो जाती है. इस लिये हमें तमाम गुनाहों से मुकम्मल परहेज करना चाहिये.

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٣﴾

● **नमाज की पाबंदी करो और अकाल वक्त पर अदा कर दो :** सू-अे-अकरा आयत नंबर : ११० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम नमाज काधम करो और अकाल अदा करो और (याद रभो के) जे ललाई का अमल भी तुम भुद अपने इाधे के लिये आगे भेज दोगे उस (के बहतरीन अदले) को अल्लाह के पास पाओगे, अेशक जे अमल भी तुम (दुन्या में) करते हों अल्लाह उसे (यकीनन) देभ रहा है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २

فَأَسْتَبِقُوا الْعَجَلَاتِ

● नेक कामों में दूसरों से बढ़ने की कोशिश करो: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १४८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम नेक कामों में अके दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो.

فَأَذْكُرُوا لِي وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ

● हर वक्त अल्लाह को याद करो और उस का शुक्र अदा करो: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १५२ में अल्लाह तआला व तआला इरशाह इरमाते हैं : (तुम हुन्या में जहां कहीं भी रहो) मुझे याद करो, मैं तुम्हें (हुन्या और आभिरत में) याद रपूंगा, (यानी तुम को बेहतरीन बढला दूंगा) और (मेरी दी हुई नेअमती पर) मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुकी न करो.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

● अल्लाह तआला सप्र करने वालों के साथ हैं: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १५३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे इमान वालो! सप्र और नमाज से मदद हासिल करो, बेशक अल्लाह सप्र करने वालों के साथ है.

وَلَقَبَلُوا نَكْمَ بَشِيءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ، وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٤﴾ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٥﴾ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٦﴾

● मुसीबत आने पर यह सोचें के हमारे पास जो कुछ है, सभ अल्लाह ही का दिया हुआ है: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १५५ ता १५७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : देभो हम तुम्हें अरर आजमायेंगे, (कभी) भौक से और (कभी) लूक से और (कभी) माल व जान और इला में कमी कर के और जो लोग (अैसे हालात में) सप्र से काम लें, उन को भुशभबरी सुना दो, ये वो लोग हैं के जब उनको कोई मुसीबत पड्यती है तो ये केहते हैं के हम सभ अल्लाह ही के (पैदा किये हुअे) हैं और हम को (मरने के बाद) अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है, ये वो लोग हैं जिन पर उन के परवरदिगार की तरफ से भुसूसी धनायतें हैं और रहमत है और यही लोग हैं जो हिदायत पर हैं.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا، وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ، إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَإِن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٥٩﴾

● शैतान की पैरवी मत करो: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १६८, १६९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे लोगो! जमीन में जो हलाल (और) पाकीजा चीजें हैं, वो भाओ और शैतान के पीछे न चलो; यकीन जानो के वो (शैतान) तुम्हारे लिये अके भुला दुश्मन है, वो तो तुम को (गुम्राह करने के लिये) यही हुकम देगा के तुम भुराई और बेहयाई के काम करो और अल्लाह के जिम्मे वो भातें लगाओ जिनका तुम्हें धल्म नहीं है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَكُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ كُنتُمْ لِيَاةٍ تَعْبُدُونَ ﴿١٦٠﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ ذَرَّيْمٌ ﴿١٦١﴾

● हलाल और पाक रिज्जत हासिल कर के भाओ: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १७२, १७३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे इमान वालो! जो पाकीजा चीजें हमने तुम्हें रिज्जत के तौर पर अता की हैं, उन में से (जो याहो) भाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो, अगर वाकई तुम सिर्फ उसी की बढगी करते हो, उस ने तो तुम्हारे लिये अस भुरदार जानवर, भून और सुप्पर हराम किया है, नीज वो जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, (यानी अल्लाह के अलावा किसी और के नाम पर अजल किया गया हो, वो भी हराम हो जाता है) हां! अगर कोई शप्स धितीहाई मजभूरी की हालत में हो (और उस के पास आने पीने के लिये कोई और चीज न हो और धन हराम करदा चीजों में से कुछ आले) जब के उस का मकसद न लज्जत हासिल करना हो और न वो (अररत की) हद से आगे अढे, (यानी धतना ही भाअे, जिस से जान बच जाअे) तो उस पर कोई गुनाह नहीं है, यकीनन अल्लाह बहुत बपशाने वाला, बडा महेरबान है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٦٣﴾

● रोजा रभना इर्र है: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १८३ में अल्लाह तआला इरशाह इरमाते हैं : अे इमान वालो! तुम पर (रभजान के) रोजे इर्र कर दिअे गअे हैं, जिस तरह तुम से पेहले लोगों पर इर्र किये गअे थे ताके तुम्हारे अंदर तकवा पैदा हो.

شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ؕ فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ؕ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٦٥﴾

● भीमार और मुसाफिर शप्स रभजान के बाद रोजों की कजा रभ सकता है: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १८५ में अल्लाह तआला का इरशाह है : रभजान का महीना वो है, जिस में कुर्आन नाजिल किया गया जो सरापा हिदायत और अैसी रोशन निशानियों का हाभिल है जो सहील रास्ता दिभाती और हक व भातिल के दरभियान दो टोक इंसला कर देती हैं, लिहाजा तुम में से जो शप्स भी ये महीना पाअे, वो धस में अरर रोजा रभे और अगर तुम में से कोई शप्स भीमार हो या सफर पर हो (और कुछ रोजे छूट गअे हों) तो वो दूसरे दिनों में उतनी ही तादाद (में रोजों की कजा) पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का मुआमला करना याहता है और तुम्हारे लिये मुज्जिल पैदा करना नहीं याहता ताके (तुम रोजों की) गिनती पूरी कर लो और अल्लाह ने तुम्हें जो राह दिभाई, उस पर अल्लाह की तकबीर कडो और ताके तुम शुक्रगुजार बनो.

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۚ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلِقَائِهِمْ يَوْمَ يُشْدُونَ

● हुआ करने वाले की हुआ अल्लाह तआला अरर सुनते हैं: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १८६ में अल्लाह का इरमान है : (अे पैगामबर!) जब मेरे बढे आप से मेरे बारे में पूछें तो (आप उन से केह दीजिये के) मैं धतना करीब हूँ के जब (भी) कोई मुझे पुकारता है, तो मैं पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ, लिहाजा वो भी मेरी भात हिल से कुभूल करें और मुज पर इमान भी लाअें ताके वो सीधे रास्ते पर आजाअें.

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ

● गलत तरीके से दूसरों का माल न भाओ: सू-अ-अकरा आयत नंबर : १८८ में अल्लाह तआला ये नसीहत करते हैं : आपस में अके दूसरे का माल नाहक तरीकों से न भाओ.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर 3

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ يَوْمٌ لَا يَبِيعُ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ

● अपना माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करो, आभिरत में भूख सवाब मिलेगा: सू-अ-अकरा आयत नंबर : २५४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे धिमान वालो! जे रिजक हम ने तुमहें दिया है, धस में से (कियामत का) अैसा दिन आने से पेहले पेहले (अल्लाह के रास्ते में) अर्च कर लो, जिस दिन न कोई सौदा होगा, न कोई दोस्ती (काम आयेगी) और न कोई सिफारिश हो सकेगी।

مَنْ لَمْ يَنْفِقْ مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ يَوْمٌ لَا يَبِيعُ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَاللَّهُ يُضِعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَسِيعٌ عَلِيمٌ ۝

● माल अर्च करने के बाद अेहसान न जताओ : सू-अ-अकरा आयत नंबर : २६१, २६२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जे लोग अल्लाह के रास्ते में अपने माल अर्च करते हैं, उनका मिसाल अैसी है जैसे अेक दाना सात बालें उगाये (और) हर बाल में सौ दाने हों (धसी तरह अल्लाह तआला अेक नेकी का सवाब सात सौ नेकियों तक बढ़ाता है) और अल्लाह जिस के लिये खालता है (अंटे के धप्लास की वजह से सवाब में सात सौ से भी अयादा) कर्ण गुना धअा कर देता है, अल्लाह अलुत वुरखत वाला (और) अडे धल्म वाला है, (और) जे लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में अर्च करते हैं, फिर अर्च करने के बाद न अेहसान जतलाते हैं और न कोई तकलीफ पहुंचाते हैं, वो अपने परवरदिगार के पास अपना सवाब पाअेंगे; न उनको कोई भौंफ पहुंचेगा और न कोई गम।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ ۗ وَلَا تَيْبَسُوا الْخَيْبِثَ مِنْهُ تَنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَنِّي حَمِيدٌ ۝

● नेक कामों में धटिया माल देने से अयना खालिये: सू-अ-अकरा आयत नंबर : २६७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे धिमान वालो! जे कुध तुमने कमाया हो और जे पैदावार हमने तुमहारे लिये अमीन से निकाली हो, उस की अच्छी चीजों का अेक हिस्सा (अल्लाह के रास्ते में) अर्च किया करो और ये निखत न रभो के अस अैसी अराब किरम की चीजें (अल्लाह के नाम पर) दिया करोगे जे (अगर कोई दूसरा तुमहें दे तो नइरत के मारे) तुम उसे आँपें अंटे किये अगैर न ले सको और याद रभो के अल्लाह अैसा अेनियाअ है के हर किरम की तारीफ उसी की तरफ लौटती है।

اللَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْإِثْمِ أَوْ عِلَاقِيَّةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

● कइरत से अर्च करने वालों को अल्लाह तआला अेहतररीन अदला देगा : सू-अ-अकरा आयत नंबर : २७४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जे लोग अपने माल दिन रात अामोशी से भी और अुल्लम अुल्ला भी अर्च करते हैं, वो अपने परवरदिगार के पास (कियामत के दिन) अपना सवाब पाअेंगे और न (उस दिन) उन्हें कोई भौंफ होगा और न कोई गम पहुंचेगा।

اللَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا أَلَّا يَكْفُرُوا بِالرِّبَا أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَكَبِّرُونَ ۗ وَالَّذِينَ يَتَّبِعُ الشَّيْطَانَ مِنَ الرِّبَا ۗ أُولَئِكَ هُمُ السَّيِّئُونَ ۗ وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوا الشَّيْطَانَ مِنَ الرِّبَا ۗ أُولَئِكَ هُمُ السَّيِّئُونَ ۗ وَالَّذِينَ يَتَّبِعُوا الشَّيْطَانَ مِنَ الرِّبَا ۗ أُولَئِكَ هُمُ السَّيِّئُونَ ۗ

● सूद आने वाले का अंजाम : सू-अ-अकरा आयत नंबर : २७५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जे लोग सूद आते हैं वो (कियामत में) उठेंगे, तो उस शअ्स की तरह उठेंगे जिसे शैतान ने छू कर पागल बना दिया हो, ये धस लिये होगा के उन्होंने कडा था के अेअ (अरीदना और अेयना) भी सूद ही की तरह है, अलाके अल्लाह ने अेअ को अलाल किया है और सूद को अराम करार दिया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدِينِكُمْ إِلَىٰ آجَلٍ مُّسَمًّى فَاتَّبِعُوهُ ۗ وَلْيُكْتَبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۗ

● उधार का अुआमला करते वकत उसे लिअ लेना खालिये : सू-अ-अकरा आयत नंबर : २८२ में अल्लाह तआला ये नसीअत इरमाते हैं : अे धिमान वालो! जब तुम किसी तै किये अुअ के लिये उधार का कोई अुआमला करो, तो उसे लिअ लिया करो और तुम में से जे शअ्स लिअना अनता हो, ध-साइ के साथ तअरीर लिअे।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ أَنْتَ مَوْلَانَا ۗ

● अल्लाह तआला से मांगने की अेहतररीन दुआ : सू-अ-अकरा आयत नंबर : २८६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (अुसलमानो! अल्लाह से ये दुआ किया करो के) अे हमारे परवरदिगार! अगर हम से कोई अूल अूक हो अंअे, तो हमारी पकड न इरमाधये और अे हमारे परवरदिगार! हम पर धस तरह का अोज न अालिये जैसा आपने हम से पेहले लोगों पर अाला था और अे हमारे परवरदिगार! हम पर अैसा अोज न अालिये जिसे उदाने की हम में ताकत न हो और हमारी गलतियों से अर-अुअर इरमाधये, हमें अअशा धीअये और हम पर अहम इरमाधये, आप ही हमारी अिआयत करने वाले और अददगार हैं।

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا ۗ وَمِنْ يَكْفُرُ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

● अल्लाह तआला के अहं धीने धरस्लाम ही अकअूल है : सू-अ-आले धमरान आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अेशक (अुअतअर) धीन तो अल्लाह के नअधक धरस्लाम ही है और जिन लोगों को (कुर्आन से पेहले जे) किताय धी गध थी, उन्होंने अलग रास्ता न अनने की वजह से नहीं अल्के धल्म आ अनने के बाद (अन-अूअ कर) अहअ आपस की अिअ की वजह से धपितयार किया और जे शअ्स भी अल्लाह की आयतों (यानी उस के अहकाम) को अुटलाअे, तो (उसे याद रअना खालिये के) अल्लाह अलुत अल्द अिसाय लेने वाला है।

كُلٌّ مِنْ أَقْوَافِهِمْ وَأَتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

● अुआअदे को पूरा करने पर अुश-अअरी और तोअने पर वधेद : सू-अ-आले धमरान आयत नंबर : ७६, ७७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अ्यों नहीं! जे अपने अहद को पूरा करेगा (यानी अल्लाह और उस के असूल और आभिरत वगैरा पर धिमान लाअेगा) और गुनाह से अयेगा, तो अल्लाह अैसे परअेअगारों से अुअअत करता है, (धस के अरअिलाइ) जे लोग अल्लाह से किये अुअे अहद और अपनी आध अुध कइरमों का सौदा कर के थोडी सी कीमत असिल कर लेते हैं, उनका आभिरत में कोई अिस्सा नहीं होगा और कियामत के दिन न अल्लाह उन से आत करेगा, न उन्हें (रिआयत की नअर से) देअेगा, न उन्हें पाक करेगा और उनका अिस्सा तो अस अअाय होगा, धतिलाध अदनाक!

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ४

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

● अपने पसंदीदा मालों में से अल्लाह के रास्ते में भर्च करो : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : ६२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम नेकी के मुकाम तक उस वक्त तक हरगिज नहीं पहुंचोगे, जब तक उन चीजों में से (अल्लाह के लिये वो माल) भर्च न करो, जो तुम्हें पसंद हैं और जो कुछ भी तुम भर्च करो, अल्लाह उसे भूष जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥١﴾

● गुनाहों से बचने में अपनी पूरी ताकत लगा दो : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १०२ में अल्लाह तआला नसीहत करते हुये इरमाते हैं : अ-इम्रान वालो! अल्लाह से डरते रहो, जैसे के उस से डरने का हक है। और तुम्हें मौत न आये मगर इस हालत में के तुम मुसलमान हो।

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٢﴾

● कामयाबी हासिल करने के लिये नेकी का हुकम करो और बुराई से रोको : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १०४ में अल्लाह तआला ये हिदायत देते हैं : तुम्हारे दरमियान एक जमात ऐसी होनी चाहिये, जिस के अफराह (लोगों को) भलाई की तरफ बुलाये, नेकी का हुकम करें और बुराई से रोकें, जैसे ही लोग हैं जो कामयाबी पाने वाले हैं।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ﴿٥٣﴾

● नेकी का हुकम, बुराई से रोकने और अल्लाह पर इम्रान की वजह से तुम बेहतरीन उम्मत हो : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : ११० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम वो बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के इअदे के लिये वुखूह में लाई गई है, तुम नेकी का हुकम करते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर इम्रान रभते हो।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٥٤﴾

● अल्लाह तआला दिल की हर बात जानता है : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : ११६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अल्लाह सीने में छुपी हुई बातों को भूष जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّكُوا الرِّبَا أضعافاً مضاعفةً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٥٥﴾

● सूद भाने से बचो : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १३० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अ-इम्रान वालो! तुम कई गुना बढ़ा कर सूद मत आया करो और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम कामयाब हो जाओ।

وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ﴿٥٦﴾

● शुक्र करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन बदला देंगे : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १४५ में अल्लाह का इरमान है : जो लोग शुक्र अदा करने वाले हैं, उन को हम जल्द ही उनका अज्र अता करेंगे।

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿٥٧﴾

● जो अल्लाह पर लरोसा करता है, अल्लाह उस से मुहल्लत करते हैं : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १५६ में अल्लाह तआला ये भु-शभबरी सुनाते हैं : अल्लाह यकीनन उस की जात पर लरोसा करने वालों से मुहल्लत करता है।

وَلَا يَحْسِبَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ۚ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۚ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٥٨﴾

● जकात अदा न करने वालों का अज्राम : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १८० में ये बताया गया है के जकात न देने वाले को अज्राब होगा : जो लोग मालदार और साहिबे निसाब होने के बावजूद अभीली व कंबूसी की वजह से अपने मालों की जकात अदा नहीं करते हैं और माल जमा कर के रभते हैं, अल्लाह तआला इरमाते हैं के कल कियामत के दिन उनका माल सांप बना कर उन के गले में डाल दिया जायेगा और कियामत के दिन उन के माल की तफ्तियां बना कर उन के जिस्म को दागा जायेगा। तमाम मुसलमानों को आभिरत के अज्राब से डरना चाहिये और माल जमा कर के रभने के बजाये अपने मालों की पूरी पूरी जकात अदा करना चाहिये।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْعُرُورِ ﴿٥٩﴾

● दुन्या की जालिरी यमक दमक सिर्फ़ एक धोका है : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १८५ में अल्लाह तआला का यह इरमान है : ये दुन्यावी जिंदगी तो (जन्नत के मुकामले में) धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं।

لِكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلَّذَّابِرِ ۚ ﴿٦٠﴾

● नेक लोगों का इन्शाम : सू-अ-आले इम्रान आयत नंबर : १६८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हुये अमल करते हैं, उन के लिये जैसे बागात हैं, जिनके नीचे नेहरें बहती हैं, अल्लाह की तरफ से मेजबानी के तौर पर वो हमेशा उन में रहेंगे और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो नेक लोगों के लिये कहीं बेहतर है।

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿٦١﴾

● रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करो : सू-अ-निसा आयत नंबर : १ में ये तरगीब दी गई है के रिश्तेदारों के साथ सिला रहनी और अच्छा बरताओ करना चाहिये, सिला रहनी की बडी ताकीद आई है और इस पर बडे अज्र व सवाब का वाय्दा है, आभिरत के सवाब के साथ साथ इस से दुन्या में भी बडे इअदे हासिल होते हैं। जैसे उम्र में इअझा होना और रिज्ज में अरकत का होना वगैरा।

وَلَا تَكْفُرُوا بِاللَّهِ وَأَنْتُمْ كَاذِبُونَ ﴿٦٢﴾ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٦٣﴾

● यतीमों का माल भाना बडा गुनाह है : सू-अ-निसा आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला नसीहत करते हुये इरमाते हैं : यतीमों का माल अपने माल के साथ मिलाकर मत आओ, भेशक यह बडा गुनाह है।

وَعَاشِرُهُمْ وَالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُمْ فَاعْسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿٦٤﴾

● अपनी बीवीयों के साथ अच्छा सुलूक करो : सू-अ-निसा आयत नंबर : १६ में अल्लाह तआला ने शोहरों को यह हिदायत दी : तुम बीवीयों के साथ लते अंदाज में जिंदगी बसर करो और अगर तुम उन्हें पसंद नहीं करते, तो हो सकता है के तुम किसी चीज को पसंद न करते हो और अल्लाह ने उस में बहुत कुछ भलाई रभ दी हो।

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ५

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۗ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٣٠﴾ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُضَلِّيهِ نَارًا ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣١﴾

● **दूसरों का माल नाहक तरीके से मत भाओ:** सूर-अ-निसा आयत नंबर : २९, ३० में अल्लाह तआला का हुकम है : अरे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के माल को नाहक तरीके से न भाओ, मगर यह के कोई तिजारत आपस की बुशी से बुजूद में आई हो (तो वो ज़ाहज़ है) और अपने आपको कतल न करो (यानी दूसरे को हलाक कर के अपने आपको हलाकत में न डालो) यकीन ज़ानो के अल्लाह तुम पर बहुत महेरबान है और (कुर्आनी हिदायात के भावजूद) अगर कोई शप्स अयाहती और जुल्म के तौर पर अइसा करेगा, (यानी किसी का माल नाहक लेगा या किसी को नाहक कतल करेगा) तो हम उस को ज़हन्नम में दाखिल करेंगे और ये बात अल्लाह के लिये बिलकुल आसान है।

إِنْ تَجْتَنِبُوا كِبَاءَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نَكْفُرْ عَنْكُمْ سِيئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مَدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣٢﴾

● **कपीरा गुनाहों से बचने पर छोटे गुनाह माफ़ होते हैं :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला एरशाद इरमाते हैं : अगर तुम उन बड़े बड़े गुनाहों से बचोगे, जिन से रोका गया है, तो तुमहारे छोटे गुनाहों को हम भुद माफ़ कर देंगे और तुम को (पाक साफ़ कर के) एज्जत की जगह (यानी जन्नत) में दाखिल करेंगे।

إِلَّا جَاءَ قَوْمًا عَلَىٰ الرِّسَالَةِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالَّذِينَ بَلَغُوا نُبُوَّةً فَإِنَّهُمْ رَبُّهُمْ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِظَ اللَّهُ ۚ

● **घर में औरतों के सारे इतिजामात का पूरा करना मर्द के जिम्मे है :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : मर्द औरतों के निगरां हैं, क्यूंके अल्लाह तआला ने उनमें से एक को दूसरे पर (यानी मर्दों को औरतों पर कुदरती तौर पर) इज्जिलत दी है और क्यूंके मर्दों ने औरतों पर अपने मालों (यानी महर और बीवी की अज़रियात मसलन : पाने पीने वगैरा की चीज़ों) को भर्य किया है, ज़े औरतें नेक हैं वो (मर्द के इन इजायल व हुकूक की वज़ह से) इताअत व इर्मांनदारी करती हैं और मर्द की गैर मौजूदगी में (बी अपनी एज्जत और शोहर के माल की) अल्लाह की तौफ़ीक से इइजात करती हैं (अइसी औरतों की इस्लाम में बडी इज्जिलत है)।

وَأَعِدُّوا لِلَّهِ وَاللَّهُ لَا يُغَيِّبُ مَنْ كَانَ مُحْسِنًا وَلَا فَحُورًا ﴿٣٥﴾

● **अल्लाह और बंदों के हुकूक अदा करो :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला हुकम देता है : अल्लाह की एबाहत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ और वालिद्देन के साथ अरछा सुलूक करो, नीज़ रिश्तेदारों, यतीमों, भिस्कीनों, करीब वाले पडोसी, दूर वाले पडोसी, साथ बैठे (या साथ भेडे) हुमे शप्स और मुसाफ़िर के साथ और अपने गुलाम बांदि्यों के साथ भी (अरछा भरताओ रभो)। भेशक अल्लाह तआला एत्राने वाले और बडाई जताने वाले को पसंद नहीं करता।

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ رَبُّكُمْ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ ۚ

● **अेक दिन अज़र मौत आयेगी :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ७८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम जहां भी होगे (अेक न अेक दिन) मौत तुमहें आ पकडेगी, चाहे तुम मजभूत किलों में क्यूं न रहे रहो।

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٣٦﴾

● **ज़ाहज़ सिफ़ारिश पर सवाब और नाज़ाहज़ सिफ़ारिश पर वप्याल :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ८५ में अल्लाह तआला एरशाद इरमाते हैं : ज़े शप्स कोई अरछी सिफ़ारिश करता है, उस को उस में से हिस्सा (यानी सवाब) मिलता है, ज़े शप्स कोई बुरी सिफ़ारिश करता है, उसे उस बुराई से हिस्सा (यानी गुनाह) मिलता है और अल्लाह हर चीज़ पर नज़र रभने वाला है।

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٣٧﴾ وَمَنْ يَكْسِبِ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٨﴾ وَمَنْ يَكْسِبِ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرَوْهَا بَرًّا يُغْفِرْ فَحَسْبُ إِثْمِهَا تَأْوِيلُهَا وَمَنْ يَكْسِبِ إِثْمًا ثُمَّ يَرَوْهَا بَرًّا يُغْفِرْ فَحَسْبُ إِثْمِهَا تَأْوِيلُهَا ﴿٣٩﴾

● **दूसरों पर एल्जाम लगाने वालों को दोहरा अज़ाब होगा :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : ११० ता ११२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : ज़े शप्स कोई बुरा काम कर गुज़रे या अपनी ज़ान पर जुल्म कर बैठे, फिर अल्लाह से माफ़ी मांग ले, तो वो अल्लाह को बहुत बपशाने वाला, बडा महेरबान पायेगा और ज़े शप्स कोई गुनाह का काम करे, तो वो इस से भूद अपने आप को ही नुकसान पहुंचाता है और अल्लाह पूरा एल्म भी रभता है, इइकमत का भी मालिक है और अगर कोई शप्स कोई गलती या गुनाह का काम करे, फिर उस का एल्जाम किसी बेगुनाह के जिम्मे लगा दे, तो वो बडा भारी बोहतान और भुला गुनाह अपने ऊपर उठा लेता है।

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفُسُهُمْ أَلْقُوا فِي النَّارِ وَأُولَىٰ بِهِنَّ ۗ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدُوا ۗ وَإِنْ تَلَاَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَأَنْ أَلَّ اللَّهُ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٤٠﴾

● **एन्साफ़ करो और सच्ची गवाही दो :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : १३५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अरे ईमान वालो! एन्साफ़ कायम करने वाले बनो, अल्लाह की जातिर गवाही देने वाले (बनो) चाहे वो गवाही तुमहारे अपने खिलाफ़ पडती हो, या वालिद्देन और करीबी रिश्तेदारों के खिलाफ़, वो शप्स (जिस के खिलाफ़ गवाही देने का हुकम दिया ज़ा रहा है) चाहे अमीर हो या गरीब, अल्लाह दोनों किस्म के लोगों का (तुम से) अयाहद भैरप्याल है, लिहाज़ा अइसी नज़्जानी ज्वाहिश के पीछे न चलना, ज़े तुमहें एन्साफ़ करने से रोकती हो और अगर तुम तोड मरोड करोगे (यानी गलत गवाही दोगे) या (सच्ची गवाही देने से) पेहलू बचाओगे, तो (याद रभना के) अल्लाह तुमहारे तमाम कामों से पूरी तरह बाबबर है।

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّذِينَ آمَنُوا أَلْقُوا فِي النَّارِ وَأُولَىٰ بِهِنَّ ۗ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدُوا ۗ وَإِنْ تَلَاَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَأَنْ أَلَّ اللَّهُ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٤٠﴾

● **अल्लाह, रसूल और तमाम आस्मानी किताबों पर ईमान लाना इर्ज़ है :** सूर-अ-निसा आयत नंबर : १३६ में अल्लाह तआला का इरमान है : अरे ईमान वालो! अल्लाह पर ईमान रभो और उस के रसूल पर और उस किताब पर ज़े अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है और हर उस किताब पर ज़े उसने पेहले उतारी थी और ज़े शप्स अल्लाह का, उस के इरिस्तों का, उस की किताबों का, उस के रसूलों का और थोमे आभिरत का एन्कार करे, वो लटक कर गुमराही में बहुत दूर ज़ा पडा है।

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ६

تَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

● नेक कामों में दूसरों की मदद करो और बुराई में किसी का साथ न दो : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (ये ईमान वालो!) नेकी और तक्वा के कामों में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और जुल्म में एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो, भेदक अल्लाह का अजाब बडा सभ्त है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَقْوَمِينَ ۖ لِلَّهِ شُهَدَاءُ بِالْقِسْطِ ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَتَانُ قَوْمٍ عَلَىٰ آلَاتِكُمْ لِيُعَذِّبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

● दुश्मनों के साथ भी ईन्साइ करो : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : ये ईमान वालो! जैसे बन जाओ के अल्लाह (के अहकाम की पाबंदी) के लिये हर वक्त तय्यार हो (और) ईन्साइ की गवाही देने वाले हो और किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें नाईन्साइ करने पर न उभारे, ईन्साइ से काम लो, यही तरीका तक्वा से अयादा करीब है और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह यकीनन तुम्हारे तमाम कामों से पूरी तरह बाबबर है.

لَيْسَ أَقْبَلُكُمْ الصَّلَاةَ وَالزَّكَاةَ وَأَتَيْتُمُ الرِّكْوَةَ وَأَمْنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّا كُفْرَانَ عَنْكُمْ سِيَّئَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٨﴾

● ईमान और नेक आमाह का बहला जन्नत है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : १२ में अल्लाह तआला बनी ईशराईल को तालीम देते हुये उम्मत मुहम्मदिया को यह इहदायत दे रहे हैं : अगर तुम ने नमाज काईम की, अकत अदा की, भेरे पैगम्बरों पर ईमान लाये, ईज्जत से उनका साथ दिया और अल्लाह को अच्छा कर्ज दिया (यानी किसी गरीब की मदद की या किसी नेक काम में जैसे भर्च किये), तो यकीन जानो के मैं तुम्हारी बुराईयों का कफ़ारा कर दूँगा और तुम्हें उन बागात में दाखिल कर्गा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, फिर उस के बाद भी तुम में से जो शरफ़स कुई ईप्तिथार करेगा, तो हर हकीकत वो सीधे रास्ते से भटक जायेगा.

يَا هَلْ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۖ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿٩﴾ يَهْدِي إِلَى اللَّهِ مِنَ اللَّهِ مَنِ اتَّبَعَ ۚ وَرَضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ ۚ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٠﴾

● कुर्आन ईन्सानों को सीधा रास्ता दिभाता है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : १५, १६ में अल्लाह तआला ईशराद इरमाते हैं : तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी आई है और (वो रोशनी) एक असी किताब (यानी कुर्आन है) जो एक को वाअेह कर देने वाली है जिस के जरीये अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिभाता है, जो उस की भुशानही चालते हैं और उन्हें अपने हुकम से अंधेरियों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाता है और उन्हें सीधे रास्ते की इहदायत अता इरमाता है.

وَاللَّهُ مَلِكٌ السَّمِوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١١﴾

● पूरी दुनिया पर हुकूमत सिई अल्लाह तआला ही की है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : १७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : आरमानों पर और अमीन पर और जितनी थीअें इन दोनों के दरभियान हैं, अल्लाह तआला ही के लिये हुकूमत है और वो जिस थीअ को चाले पैदा कर दे और अल्लाह तआला को हर थीअ पर पूरी कुदरत है.

وَمَنْ أَحْبَبَهَا فَكَأَنَّمَا أَحْبَبَ النَّاسَ جَمِيعًا ﴿١٢﴾

● ईन्सानियत का अहतिराम सारी दुनिया के लिये इहदायत का जरीया है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जिसने किसी ईन्सान की जान बचाई, तो गोया उसने तमाम ईन्सानों की जान बचाई.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَابْتَغُوا الْيُسْبِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣﴾

● अच्छे आमाह अंदों को अल्लाह तआला से करीब कर देते हैं : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ३५ में तालीम दी गई है के आमाहे सालेहा अल्लाह के कुर्ब का जरीया हैं : अल्लाह तआला ने अंदों को दो अहम थीअों का हुकम दिया है : (१) अल्लाह तआला को हाअिर नाअिर सभज कर हर वक्त नाइरमानी और गुनाहों के बारे में अल्लाह से डरते रहो. (२) ईबाहदत व ईताअत, इराईअ व वाजिभात, सुनन व नवाक़िल और हीगर आमाहे सालेहा के जरीये अल्लाह तआला का कुर्ब तलाश करो, ईस लिये के अच्छे आमाह अल्लाह से कुर्ब का जरीया हैं.

وَإِنْ حَكَمْتَ فَأَحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿١٤﴾

● हुमेशा ईन्साइ के साथ ईसला करना चालिये : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ४२ में अल्लाह तआला का इरमान है : अगर ईसला करो, तो लोगों के दरभियान ईन्साइ के साथ ईसला करो, यकीनन अल्लाह तआला ईन्साइ करने वालों से मुहब्बत करते हैं.

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْفُرُوا مِنْ فُوقِهِمْ وَمَنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۚ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۚ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

● ईमान और अल्लाह से डर कर अिदगी गुजारना रिज्क में बरकत का सभब है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ६६ में ये बात अताई गई है के हुज़ूर ﷺ पर ईमान लाना और तक्वे ईप्तिथार करना नुज़्जे बरकत का सभब है : अल्लाह तआला ने अहले किताब के बारे में इरमाया के अगर वो तौरत व ईज्जल में अताये गये हुकम के मुताबिक हुज़ूर ﷺ पर ईमान ले आते और तक्वा व परहजगारी ईप्तिथार करते, तो आरमान से भूब पारिश होती और अमीन से आने पीने की थीअें पैदा होती और उन के रिज्क में भूब वुरअत व बरकत होती, ईस से मालूम हुवा के ईमान व ताअत और तक्वा व परहजगारी रिज्क में भेरे व बरकत का सभब है.

كَأَنَّهُ لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٦﴾

● एक दूसरे को बुराईयों से न रोकना अहुत बडा गुनाह है : सू-अ-मा'दहा आयत नंबर : ७८ में ये अिम्मेदारी अताई गई है के ईमान वालों को हुज़ूर ﷺ की लाई हुई शरीअत पर अमल करना अज़री है : ईमान वालों को शरीअत के अहकाम की मुकम्मल पाबंदी करनी चालिये और दूसरों को भी ईस्लामी तालीमात पर चलने की तरगीब देते रहेना चालिये. कोई बह अमली चाले अपने अंदर हो या दूसरों के अंदर, उस को दूर करने की भरपूर कोशिश करनी चालिये. असा करने से अल्लाह तआला की रजा व भूशानही नसीब होगी और न रोकने की वजह से पेहली कौमों की तरह अल्लाह तआला की लानत और अजाब में मुब्तला होने का अतरा है, ईस लिये चालिये के हुज़ूर ﷺ जो दीन और शरीअत हम को देकर गये हैं, हम उस के मुताबिक अमल कर के अपनी दुनिया और आभिरत को संवारने की इइ करें.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ७

وَكُؤَامِرًا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

● अल्लाह तआला ने हलाल और पाकीजा गिजा आने का हुक्म दिया है : सू-अ-माइदा आयत नंबर : ८८ में अल्लाह तआला इरशाद इर-माते हैं : अल्लाह ने तुम्हें जो रिजक दिया है, उस में से हलाल पाकीजा चीजें भाओ और जिस अल्लाह पर तुम इमान रभते हो, उस से डरते रहो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۗ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥١﴾

● पेहले अपनी हिदायत की फ़िक्र करना थालिये : सू-अ-माइदा आयत नंबर : १०५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अ-इमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र करो, अगर तुम सही रास्ते पर होगे, तो जो लोग गुमराह हैं वो तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते, अल्लाह ही की तरफ़ तुम सब को लौट कर ज़ाना है, उस वक़्त वो तुम्हें बतायेगा के तुम (हुन्या में) क्या अमल करते रहे हो।

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِينَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٢﴾ لِلَّهِ الْمُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٣﴾

● अल्लाह तआला की रजा सब से बड़ी काम्याबी है : सू-अ-माइदा आयत नंबर : ११९, १२० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : ये वल हिन है जिस में सच्चे लोगों को उनका सच फ़ाइदा पहुंचायेगा, उन के लिये वो बागात होंगे, जिनके नीचे नहरें बेल रही होंगी, जिन में ये लोग हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे भुश है और ये अल्लाह से भुश हैं, यही बड़ी ज़बरदस्त काम्याबी है, तमाम आरमानों और ज़मीन और उन में जो कुछ है, इन सब की बाइशाही अल्लाह ही के लिये है और वो हर चीज़ पर पूरी कुदरत रभता है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَ ۗ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمُرُّونَ ﴿٥٤﴾

● अल्लाह तआला ने तै कर रभा है के कौन कब तक जिंदा रहेगा? : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : २ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अल्लाह ही वो ज़ात है, जिसने तुम को गीली मिट्टी से पैदा किया, फिर (तुम्हारी जिंदगी का) अक वक़्त मुकरर कर दिया (यानी तुम्हें हुन्या में इतने इतने दिन रहना है) और (फिर मौत देने के बाद दोबारा जिंदा होने का) अक मुतअय्यन वक़्त उसी के पास है (यानी मौत देने के बाद तुम दोबारा जिंदा कब होगे? वो अल्लाह ही को मालूम है) फिर भी तुम शक में पड़े हुये हो।

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۗ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَنَجْوٰكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴿٥٥﴾

● इन्सान का कोई राज अल्लाह तआला से छिपा हुवा नहीं है : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : वही अल्लाह आरमानों में भी है और ज़मीन में भी, वो तुम्हारे छिपे हुये बेह भी ज़ानता है और भुले हुये हावात भी और जो कुछ कमाई तुम कर रहे हो, उसे भी ज़ानता है।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا لَعِبٌ وَهَلْوٰءٌ ۗ وَكَذٰلِكَ اُخْرِجُوْهُ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥٦﴾

● गुनाहों से बचने वालों के लिये आभिरत बेलतरीन घर है : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : हुन्यवी जिंदगी तो अक बेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं और यकीन ज़ानो के जो लोग तक्वा इभितयार करते हैं, उन के लिये आभिरत वाला घर कहीं ज़यादा बेलतर है, तो क्या इतनी सी बात तुम्हारी अकल में नहीं आती?

وَعِنْدَهُ مَفَآئِجُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ اِلَّا هُوَ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي ظَلْمِثٍ اِلَّا رَآهَا وَلَا يَاسٍ اِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يَنْزِلُكُمْ بِالْاَيْلٰنِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ۗ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضٰى اَجَلَ ۗ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٨﴾

● हर तरह का इल्म अल्लाह तआला ही के पास है : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : ५९, ६० में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं : उसी (अल्लाह) के पास गैब की थालियां हैं, जिनमें उस के सिवा कोई नहीं ज़ानता और समंहर और भुशकी में जो कुछ है वो उस से वाकिफ़ है (उस के इल्म में है), किसी दरभत का कोई पत्ता नहीं गिरता, जिस का उसे इल्म न हो और ज़मीन की अंधेरियों में कोई दाना या कोई भुश या तर चीज़ असी नहीं है, जो अक भुली किताब में दर्ज न हो और वही है जो रात के वक़्त (नींद में) तुम्हारी इह (अक हद तक) कब्ज कर लेता है और हिन लर में तुम ने जो कुछ किया होता है, उसे भूज ज़ानता है, फिर उस (अन्धे हिन) में तुम्हें नई जिंदगी देता है ताके (तुम्हारी उम्र की) मुकरर मुदत पूरी हो जाये, फिर उसी के पास तुम को लौट कर ज़ाना है, उस वक़्त वल तुम्हें बतायेगा के तुम क्या क्या करते थे।

وَاَنْ اَقْبِمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِي اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۗ ذٰلِكَ يَوْمُ يَنْفَعُ فِي الصُّوْرِ ۗ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْحَمِيْدُ ﴿٦٠﴾

● नमाज़ की पाबंदी करो और अल्लाह से डरो : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : ७२, ७३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : नमाज़ काइम करो और उस (अल्लाह की नाइरमानी) से डरते रहो और वही है जिसकी तरफ़ तुम सब को ज़मा कर के ले जाया जायेगा और वही ज़ात है जिसने आरम-ानों और ज़मीन को बरहक पैदा किया है और जिस हिन वो (कियामत के हिन से) कहेगा के तू हो जा, तो वो हो जायेगा (यानी अल्लाह तआला ज़ब थालेगा, कियामत को वुजूह में आने का हुक्म दे देगा और वो वुजूह में आ जायेगी), अल्लाह का कौल बरहक है और जिस हिन सूर कूका जायेगा, उस हिन बाइशाही उसी की होगी, वो गाइब व हाज़िर हर चीज़ को ज़ानने वाला है और वही बड़ी हिकमत वाला, पूरी तरह बाभबर है।

وَلَا تَسْبُوْا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ فَيَسْبُوْا اللَّهَ عَدُوًّا وَّابْغِيْزًا ۗ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦١﴾

● दूसरे मज़ालिब के भाबूहों को भुरा-बला नहीं केलना थालिये : सू-अ-अन्आम आयत नंबर : १०८ में ये तालीम दी गई है के दूसरे मज़ालिब के भाबूहों को भुरा मत कलो : अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दूसरे मज़ालिब के भाबूहों को भुरा बला केलने से मना इरमाथा के कहीं असा न हो के तुम उनके जूटे भुदायों की भुराई बयान करने लगो और वो ज़ज्बात में आकर अल्लाह तआला को भुरा बला केलने लगें, इस तरह तुम इस भुराई का ज़रीया बन जाओ। इस हुक्म से मालूम हुवा के जो काम भुद करना ज़इज नहीं है। दूसरे के लिये उस का ज़रीया और सबब बनना भी हुदस्त नहीं है।

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ८

وَذُرَّاطَاهُ الرِّقْمُ وَبِاطْنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يُكْسِبُونَ الرِّقْمَ سَيُجْرَوْنَ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٧﴾

● गुनाह की सजा ज़रूर मिलेगी: सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १२० में अल्लाह तआला धरशाह फरमाते हैं: तुम आहिरी और आतिनी दोनों क्रिम के गुनाह छोड दो, यह यकीनी बात है के जो लोग गुनाह करते हैं, उन्हें धन तमाम जुर्मा की जल्द ही सजा मिलेगी जिनको वो किया करते थे.

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّاتٍ مَعْرُوشَاتٍ وَغَيْرِ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ وَالرَّيْعُونَ وَالرُّمَانَ مُمْتَشَاهَا وَغَيْرِ مُمْتَشَاهَا ۗ كُلُّوا مِنْ ثَمَرِهَا إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهَا ۗ وَلَا تَسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣٨﴾

● धरशाह करने वालों को अल्लाह पसंद नहीं करता : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १४१ में अल्लाह तआला फरमाते हैं : अल्लाह वो है जिसने बागात पैदा किये जिन में से कुछ (बैलदार हैं जो) सलारों से जीपर यदाये जाते हैं, कुछ सलारों के बगैर बुलंद होते हैं और भजूर के बागात और भेतियां, जिनके जाईके अलग अलग हैं और जैतून और अनार, जो अक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और अक दूसरे से मुप्तलिफ भी, जब यह दरपत इल दें तो उन के इलों को भाने में धरतेअमाल करो और जब उनकी कटाई का दिन आये, तो अल्लाह का हक अदा करो (यानी उस का हसवां हिस्सा अल्लाह के रास्ते में भर्य करो) और कुजूलभर्यी न करो, याद रभो! वो कुजूलभर्यी लोगों को पसंद नहीं करता.

وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٣٩﴾

● शैतान धन्सान का भुला हुवा दुश्मन है : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १४२ में अल्लाह तआला फरमाते हैं : शैतान के पीछे न यलो, यकीन जानो, वो तुम्हारे लिये अक भुला दुश्मन है.

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ أَمْلَاقٍ ۚ نَحْنُ نُرْزِقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرُبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ ۚ

● हमारा और हमारी औलाह का रिजक अल्लाह तआला के जिम्मे है : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १५१ में अल्लाह तआला हुकम सुनाते हैं : गरीबी की वजह से अपने बच्चों को कत्ल न करो, हम तुम्हें भी रिजक देंगे और उनको भी और बे-हयाई के कामों के करीब भी न जाओ, याले वो बे-हयाई भुली हुई हो या छिपी हुई हो.

وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدُوا ۚ وَأَلْوَكَانَ دَافِرِي ۚ

● हमेशा हक बात केहना याहिये : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १५२ में अल्लाह का हुकम है : जब कोई बात कहे, तो धन्साह से काम लो, याले मुआमला अपने करीबी रिश्तेदार ही का हो.

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّيْنَاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٤٠﴾

● दीने धरलाम पर यलने ही में नजात है : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १५३ में यह रेलनुमाई की गई है के सीराते मुस्तकीम (सीधे रास्ते) के मुताबिक जिंदगी गुजारना ज़रूरी है : अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ को आपरी रसूल बना कर दुन्या में लेजा और उन्हें धस बात का हुकम दिया के तुम लोगों को सीराते मुस्तकीम पर यलने की दावत दो और शैतानी कामों और उस के बताये हुये रास्तों के पीछे न पडो, वनां तुम सीधे रास्ते से लटक जाओगे, लिहाजा मुतकी व परहजगार बनने के लिये आपकी दावत को कुभूल कर के हर मुसलमान को सीराते मुस्तकीम पर यलना ज़रूरी है.

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤١﴾

● अक नेकी का सवाब हस गुना मिलता है : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १६० में अल्लाह तआला फरमाते हैं : जो शप्स कोई नेकी लेकर आयेगा, उस के लिये उस जैसी हस नेकियों का सवाब है और जो शप्स कोई भुराई लेकर आयेगा, तो उस को सिर्फ उसी अक भुराई की सजा ही जायेगी और उन पर कोई जुल्म नहीं होगा.

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٢﴾

● कियामत के दिन कोई शप्स किसी दूसरे का गुनाह अपने सर नहीं लेगा : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १६४ में अल्लाह तआला फरमाते हैं : जो कोई शप्स कोई कमाई करता है, उस का नफा नुक्सान किसी और पर नहीं, भूद उसी पर पडता है और (कियामत के दिन) कोई भोज उठाने वाला किसी और का भोज नहीं उठायेगा, फिर तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ तुम सब को लौटना है, उस वक्त वो तुम्हें वो सारी बातें बतायेगा, जिन में तुम धिपतिलाह किया करते थे.

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۚ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿٤٤﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْذُومًا وَمَذْمُومًا ۚ لَنْ تَبْعَكَ مِنْهُمْ لَأَمَلْنَا جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٥﴾

● शैतान के मक व फरेब से हमेशा होशियार रेलना याहिये : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : १६६ ता १८ में यह बताया गया है के शैतान के धोके से होशियार रेलना याहिये : जब शैतान ने अल्लाह के हुकम के मुताबिक हजरते आदम ﷺ को सज्दा न किया, तो कियामत के दिन तक अल्लाह से मोहलत मिलने पर केहने लगा के मैं तेरे बंधों को यारों तरफ से गुमराह करने की कोशिश कर्गा, जिसके नतीजे में अकसर लोग शुक्गुजार नहीं रहेंगे, अल्लाह तआला ने शैतान को अपने दरबार से जलील कर के निकाल दिया और फरमाया के मैं तुज से और तेरी पैरवी करने वालों से जलन्म को लर दूंगा. लिहाजा हमें हर वक्त शैतान के मक व फरेब से होशियार रेलना याहिये और जन्त में ले जानेवाले आमाल में लगे रेलना याहिये.

وَكُلُّوا وَأَشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٤٦﴾

● भाने पीने में हद से लजापुज न करो : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला हिदायत देते हैं : भाओ और पियो और कुजूलभर्यी न करो, याद रभो! के अल्लाह कुजूलभर्यी करने वालों को पसंद नहीं करता.

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ حَقًّا وَطَعْمًا ۚ إِن رَحِمَ اللَّهُ قَرْيَبًا مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٧﴾

● भौंक और उम्मीद के साथ अल्लाह तआला से दुआ करना याहिये : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : ५६ में अल्लाह तआला फरमाते हैं : जमीन में उस की धरलाह के बाद इसाद मत डैलाओ और उस (अल्लाह) की धयाहत धस तरह करो के हिल में भौंक भी हो और उम्मीद भी, यकीनन अल्लाह की रहमत नेक लोगों से करीब है.

فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ ۚ

● नाप तौल में कमी नहीं करना याहिये : सू-अ-अन्-आम आयत नंबर : ८५ में अल्लाह तआला का हुकम है : नाप तौल पूरा पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीजें कम कर के न दिया करो.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ९

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَرْجَاهُ وَآخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَا تَوَكَّلْ بِكُلِّ سَجِرٍ عَلَيْنَا ﴿١١٢﴾ (إلى الآية ١١٦)

● **माल व अरब्याव न होते हुअे ली एक पर काथम रहो:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : ११० ता १२१ में यह बशाारत दी गई है के अल्लाह तआला की मदद एक के साथ होती है: एक पर काथम रहने वाला चाहे अकेला ही क्यूं न हो, गालिब आकर ही रहता है. फिरयौन ने उअरत मूस़ा عليه السلام को ज़हूर के ल कर अपने मुल्क के अडे अडे ज़हूरों को उनके मुकाबले की दावत दी, ज़हूरों ने नअरबंदी कर दी, जिस से उनकी रस्सियां सांप की तरह रेंगती हुई नअर आने लगीं, उअरत मूस़ा عليه السلام ने अल्लाह के हुकम से अपना असा डाला, जे उनकी सारी रस्सियों को निगल गया. एक का गलबा हुआ और ज़हूर सज्दे में गिर कर ईमान ले आये. लिहाजा हमें हमेशा एक वाले रास्ते पर चलना चाहिए.

قَالَ عَدَائِي أَصِيبُ بِهِ مِنْ أَشَاءِ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكُفُّهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١٣﴾

● **अल्लाह से डरने वाले और उक़ात अदा करने वाले मोमिन अंदों के लिये रहमत:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : ११६ में अल्लाह तआला ने इरमाया : अपना अजाब तो मैं उसी पर नाज़िल करता हूँ, जिस पर चालता हूँ और जहां तक मेरी रहमत का तात्वुक है, वो हर चीज़ पर छाई हुई है, युना-ये में यह रहमत (मुकम्मल तौर पर) उन लोगों के लिये लिभूंगा जे तक्वा इफ्तियार करें और उक़ात अदा करें और जे हमारी आयतों पर यकीन रभें.

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْنُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ ۚ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ يُجِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١١٤﴾

● **शरीअत पर अमल करने वालों के लिये काभ्याबी है:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : ११७ में बताया गया है के तौरात व इंजिल में ली आप عليه السلام की सिफ़ात का जिक्र है: तौरात व इंजिल में उअरत मुहम्मद عليه السلام की सिफ़ात बयान की गई हैं और आपसी रसूल होने की बशाारत दी गई है के वो आपसी रसूल उम्मी होगा, यानी हुआ में किसी से कुछ नहीं पड़ेगा, बल्के वही के उरीये उस को उलूम अता किये जाअेंगे, वो लोगों को अचछी बातों का हुकम करेंगे और बुरी बातों से रोकेंगे, उनके लिये पाकीजा चीज़ों को हलाल और नापाक व गंदी चीज़ों को हराम करार देंगे और उन से सभ्त अहक़ाम व पाबंदियां हटा कर आसान तरीक़े मुकरर करेंगे, लिहाजा हमें चाहिए के नभिये करीम عليه السلام को अल्लाह के सच्ये और आपसी नबी मान कर उनकी लाई हुई शरीअत के मुताबिक अमल करें इसी में हमारी हुआ व आपिरत की काभ्याबी है.

وَإِذَا خَذَبُوا مِنِّي مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۚ قَالُوا بَلَىٰ ۗ شَهِدْنَا ۗ أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿١١٥﴾

● **तमाम इन्सान अल्लाह के अक़ होने का इकरार कर चुके हैं:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : ११२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अ रसूल! लोगों को वो वक़्त याद दिलाओ) जब तुमहारे परवरदिगार ने आदम के अेटों की पीठ से उन की सारी औलाद को निकाला था और उन को भुद अपने डीपर गवाह बनाया था (और पूछा था) के क्या मैं तुमहारा रब नहीं हूँ? सभ ने जवाब दिया था के क्यूं नहीं? (यकीनन आप हमारे रब हैं) हम सभ इस बात की गवाही देते हैं, (अल्लाह तआला इरमाते हैं के यह इकरार हमने इस लिये लिया था) ताके तुम कियामत के दिन ये न केह सको के हमें तो ये बात मालूम न थी (और हमें आपसे किया हुआ वअदा याद ही नहीं था).

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١١٦﴾

● **कुर्आने पाक को गौर से आभोशी के साथ सुनना चाहिए:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : २०४ में अल्लाह तआला का इरमान है : जब कुर्आन पढा जाअे, तो उस को कान लगा कर सुनो और आभोश रहो ताके तुम पर रहमत हो.

وَإِذْ يُرَىٰ رَبُّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرَّعًا وَخَيْفَةً وَوَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۚ وَلَا تَكُن مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿١١٧﴾

● **सुबह व शाम अल्लाह तआला का जिक्र करो:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : २०५ में अल्लाह तआला का इरशाद है : अपने रब का सुबह व शाम जिक्र किया करो, अपने दिल में ली, आबिज़ी और भौक के जअबात के साथ और उबान से ली, आवाज बहूत बुलंद किये बगैर और उन लोगों में शामिल न हो जना जे गइलत में पडे हुअे हैं.

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

● **अल्लाह और रसूल की कामिल इताअत ईमान की अलामत है:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : १ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: तुम अल्लाह से डरो और आपस के तात्वुकत को हूइस्त कर लो और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो, अगर तुम वाकई ईमान वाले हो.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا أَعْنَافَهُمْ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿١١٩﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُورُ ۗ الَّذِينَ لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْهِ

● **अल्लाह और रसूल की इताअत से मुंह नहीं मोडना चाहिए:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : २० ता २२ में अल्लाह तआला ने इरमाया : अे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और इस इताअत से मुंह न मोडो, जब के तुम (अल्लाह और रसूल के अहक़ाम) सुन रहे हो और उन लोगों की तरह न हो जना जे केहते तो हैं के हमने सुन लिया, मगर वो (इकीकत में) सुनते नहीं हैं, यकीन रभो के अल्लाह के नअदीक अदतरीन ज़नवर वो बेहरे गूंगे लोग हैं जे अकल से काम नहीं लेते.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّخِذُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخَوُّوا أَلْمَنِيكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٢١﴾

● **अमानत में अयानत मत करो:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : २७ में अल्लाह तआला इरमाता है : अे ईमान वालो! अल्लाह और रसूल से अेवइअई मत करो और ज़नते बूअते अपनी अमानतों में अयानत मत करो.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٢﴾

● **तक्वा का इन्आम:** सूर-अ-अअर्राफ़ आयत नंबर : २९ में अल्लाह तआला का इरशाद है : अे ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो वो तुम्हें (एक व आतिल की) तमीअ अता कर देगा और तुम से तुमहारे गुनाह हूर कर देगा और तुम को बअश देगा और अल्लाह तआला अडे इअल वाला है.

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَتَّخِذُوا عَاقِبَتِمْ فِئْتَانًا يَلِيكُمْ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٨٤﴾

● आपस में लडाई जगडा के दो ँडे नुक्सान: सू-अ-अन्फाल आयत नंबर : ४६ में यल नसीहत की गई है के आपस में लडने जगडने से बडा नुक्सान होता है : ईमान वालों को आपस में लडने जगडने से बना किया गया है और ये बताया गया है के अगर ईमान वाले आपस में लडाई जगडा करेंगे, तो उनके दो नुक्सान होंगे, एक तो यल के ईमान वाले बुज्जिल और कमजोर हो जायेंगे क्यूं के जब आपस में धत्तिलाह और धत्तिलाह होता है, तो हर एक शप्स अपने अंदर तन्हा होने के भावबूद पूरी जमात की ताकत मलसूस करता है और जब आपस में धत्तिलाह होगा, लडाई जगडा होगा, तो कोई किसी का साथ देने के लिये तय्यार न होगा. दूसरा नुक्सान यल बताया गया के तुम्हारा रोब अत्तम हो जायेगा और तुम्हारी हवा उभड जायेगी, जिस की वजह से तुम दुश्मन की नजर में हकीर और अलील हो जाओगे.

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِجَنَّةٍ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

● हलात आने पर जमे रहो: सू-अ-तौबा आयत नंबर : १६ में यल लिहायत दी गई है के मुसीबतों पर सभ्र से काम लेना चाहिये, मुसीबत और हलात अल्लाह की तरफ से आते हैं और हलात का आना अल्लाह की तरफ से आजमाईश होती है, इसी लिये अल्लाह तआला कुर्आने करीम में अपने बंदों को भिताब कर के इरमाते हैं, जिस तरल पेलली उम्मतों को आजमाईश में डाला गया, तकलीफें पलुंयाई गई और दुश्मनों से मुकाबला करना पडा, इसी तरल उम्मते मुलम्हदिया को भी धत्तिलाह में डाला जायेगा, इस धत्तिला के भावबूद उन के लिये यल अउरी है के अमन व आइयत और सलामती की हुआ करते रहें और अगर अल्लाह की तरफ से कोई आजमाईश आ जाये, तो सभ्र के साथ अल्लाह तआला की रजामंदी हासिल करने के लिये जमे रहें.

وَالَّذِينَ يُكْفَرُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبِشْرِهِمْ بِعَذَابِ اللَّهِ ﴿٨٦﴾ يَوْمَ يُخْلِى عَابَتُهُمْ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ فَتُكْوَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۗ هَذَا مَا كُنْتُمْ لَا تَنْفُسُكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٨٧﴾

● अकाल न देने वालों की सजा: सू-अ-तौबा आयत नंबर : ३४, ३५ में अल्लाह तआला ने इरमाया : जो लोग सोने चांदी को जमा कर के रभते हैं और इस को अल्लाह के रास्ते में अर्थ नहीं करते, उन को एक दहनाक अजाब की भुशा-भभरी सुना दो, जिस दिन इस माल व दौलत को जलन्मम की आग में तपाया जायेगा, फिर इस से उन लोगों की पेशानियां और उन की करवटें और उन की पीठें दागी जायेंगी (और कला जायेगा के) यल है वो भजाना जो तुमने अपने लिये जमा किया था! अब यभो उस भजाने का मजा जो तुम जमा कर के रभा करते थे.

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٨﴾

● माल व औलाह तुम्हें सीधे रास्ते से लटका न दें : सू-अ-तौबा आयत नंबर : ५५ में यल बात भयान की गई है के माल और औलाह इन्सान की आजमाईश का अरीया हैं: अल्लाह तआला ने माल और औलाह के बारे में हुकम भयान इरमाया के अगर हलाल माल भैर के कामों में अर्थ करोगे, तो यल तुम्हारी नेकियों में अयादती और आभिरत में काम्याबी का अरीया होगा, वना यली माल दुन्या में वनाले जान और आभिरत में सभ्त अजाब का सभभ भनेगा, इसी तरल अगर औलाह के हीन और आभिरत की डिक की, तो दुन्या में मां भाप की आंभों की ठंडक और आभिरत में नजात का अरीया भनेगी और अगर हीन से दूरी और आभिरत से गाइल रभ कर सिई दुन्या के अश व राहत में मसइक रभा, तो यली औलाह उन के लिये दुन्या में तकलीफ और आभिरत में अजाब का सभभ भनेगी.

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۗ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۗ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٨٩﴾ وَعَدَّ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِينٌ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۗ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩٠﴾

● ईमान वालों से अल्लाह का वयूदा : सू-अ-तौबा आयत नंबर : ७१, ७२ में अल्लाह तआला ने इरमाया : भोभिन मई और भोभिन औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं, वो नेकी का हुकम करते हैं और भुराई से रोकते हैं और नमाअ काठम करते हैं और अकाल अदा करते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की इर्माबरदारी करते हैं, ये अैसे लोग हैं जिनको अल्लाह अपनी रहमत से नवाजेगा, यकीनन अल्लाह तआला अबरहस्त लिहमत वाला है, अल्लाह ने भोभिन मई और भोभिन औरतों से वयूदा किया है, उन भागात का जिन के नीचे नहरें भेहती होंगी, जिनमें वो हमेशा रहेंगे और उन पाकीअ मकानात का जो हमेशा रहने वाले भागात में होंगे और अल्लाह की रजामंदी सभ से बडी थीअ है (जो जन्नत वालों को नसीब होगी) यली तो अबरहस्त काम्याबी है.

وَمِنْهُمْ مَّنْ عَاهَدَ اللَّهُ لَئِنِ آتَيْنَاهُم مِّنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٩١﴾ فَلَمَّا آتَاهُم مِّنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٩٢﴾ فَأَعْقَبَهُمْ نِقَافًا ۗ قُلُوْبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَآ أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٩٣﴾

● अल्लाह से किये हुअे अहद को पूरा न करने का अंजाम : सू-अ-तौबा आयत नंबर : ७५ ता ७७ में यल हुकम दिया गया है के अल्लाह से किये हुअे अहद को पूरा करना चाहिये: दुन्या में माल व दौलत के भलुत से हरीस व लालची अैसे भी हैं जो हिल ही हिल में अल्लाह से यल अहद करते हैं के अगर हमें दौलत हासिल हो जाये, तो हम अल्लाह की राह में अर्थ करेंगे, अल्लाह और उस के बंदों के हुकूक अदा करेंगे, फिर जब अल्लाह उन्हें अपनी नेअ्मतों से नवाअता है, तो भुदा से किये हुअे वयूदों को भूल जाते हैं, जिस के नतीजे में अल्लाह तआला उनके हिलों में निइक पैदा कर देता है और उनके ईमान व आमाह अतरे में पड जाते हैं, लिहाजा अल्लाह से किये हुअे अहद को पूरा करना चाहिये.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर ११

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۗ قُلْ لَا تَعْتَذِرُونَ وَالنُّؤْمَانُ لَكُمْ قَدْ نَبَأْنَا اللَّهُ مِنْ خُبْرِكُمْ ۗ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٧﴾

● **जूट से बचो :** सूर-अ-तौबा आयत नंबर : ६४ में यह नसीहत की गई है कि जूट उज्र और बहानाबाजी की बुराई से बचो : गजब-अ-तबूक में शरीक न होने वाले मुनाफ़ि़कीन रसूलुल्लाह ﷺ के पास आकर जूट उज्र पेश करने लगे, तो उन से कहा गया कि जूट आते बनाने से कोई फ़ाएदा नहीं, अल्लाह तआला तुम्हारे निफ़ाक व जूट पर हम को मुत्तले कर चुका है, उस के यहां तुम्हारी कोई मकारी छिपी छुपी नहीं है, वो बहुत जल्दी तुम्हारे काले करतूतों की तुम को सजा देगा. अल्लाह की सजा से बचने के लिये हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि जूट उज्र से अपने आपको बचाये.

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا لِلَّهِ وَعِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ ۗ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ ۖ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٨﴾

● **हर अमल में इफ़लास ज़रूरी है :** सूर-अ-तौबा आयत नंबर : ६८ में यह बात बताई गई है कि अल्लाह की राह में इफ़लास के साथ अर्घ्य करने वाले अल्लाह की रहमत के मुस्तहिक हैं: जो लोग अल्लाह और योमे आभिरत पर इमान रखते हैं और इफ़लास के साथ अल्लाह की रज़ा और उस का कुर्ब हासिल करने और रसूलुल्लाह ﷺ की हुआयें लेने के लिये अपना माल अर्घ्य करते हैं, अल्लाह तआला उनको ज़रूर अपनी रहमत में जगल दे कर जन्नत में दाखिल इरमायेगा, अल्लाह तआला हम सब को इफ़लास के साथ अर्घ्य करने की तौफ़ीक अता इरमाये और अपनी रहमत के साथे में जगल अता इरमाये.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصّٰدِقِينَ ﴿٦٩﴾

● **सख्यों की सोलभत इफ़ितयार करो :** सूर-अ-तौबा आयत नंबर : ११६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अ-इमान वालो! अल्लाह से डरो और सख्ये लोगों के साथ रहो करो.

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ

● **अल्लाह ने छः दिनों में आरमान व जमीन को पैदा किया :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला ने इरमाया : बेशक तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है, जिसने सारे आरमानों और जमीन को छः दिन में पैदा किया.

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْنَ يَبْلُغُكَ السَّخٰوٰةُ وَالْأَبْصَارُ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۗ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٧٠﴾

● **हमें सब कुछ अल्लाह ही ने दिया है :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : ३१, ३२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (अ-पैगम्बर! लोगों से) कलु के कौन है जो तुम्हें आरमान और जमीन से रिज़क पहुंचाता है? और कौन है जो सुनने और देखने की कुव्वतों का मालिक है? और कौन है जो ज़नदार को जेज़न से और जेज़न को ज़नदार से निकाल लाता है? और कौन है जो हर काम का इतिज़ाम करता है? तो यह लोग कहेंगे कि (असौ ज़ात तो) अल्लाह (ही की है), तो तुम उन से कलु के क्या इर ली तुम अल्लाह से नहीं डरते? यही अल्लाह तुम्हारा सख्या रब है, इर हक वाज़ेह हो ज़ने के बाद गुम्राही के सिवा क्या बाकी रह गया? उस के बावजूद तुम क्यूं उल्टे रास्ते पर ज़ रहे हो.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧١﴾

● **कुर्आन सरासर नसीहत, हिल की बीमारियों के लिये शिफ़ा और हिलायत की किताब है :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : ५७ में यह हिलायत ही गई है कि कुर्आन हिलों की बीमारी के लिये शिफ़ा है : कुर्आन मज्हद को **الشِّفَاءُ لِمَا فِي الصُّدُورِ** कहा गया है, यानी उस के अरीया हिलों की बीमारियों का इलाज होता है, मतलब यह है कि जो शप्स उस की हिलायत पर अमल करे, उस का हिल इलानी बीमारियों से शिफ़ायाम हो जाता है. हसद, कीना, तकब्बुर, बुज्ज, भूहपसंदी, हुन्या की मुहब्बत और वो सब उमूर जो लोगों के हिलों को तबाह कर देते हैं, कुर्आन मज्हद में इन सब का इलाज है, बशर्ते कि इस इलाज को इफ़ितयार किया जाये. लिलाज़ा कुर्आन की हिलायत पर अमल करो, उस करीम आका की ज़ात से क्या बर्ह है कि वो ज़िस्मानो बीमारियों से ली शिफ़ा अता इमा दे.

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٧٢﴾

● **अल्लाह पर बोलतान बांधने वाले कल्मी काम्याब नहीं हो सकते :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : ६६ में अल्लाह तआला ने इरमाया : जो लोग अल्लाह पर जूटा बोलतान बांधते हैं, वो इलाह व काम्याबी नहीं पायेंगे.

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ

● **अल्लाह के सिवा कोई व नुक्सान नहीं पहुंचा सकता :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : १०६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अल्लाह तआला को छोड कर किसी अैसे को न पुकारना जो तुम्हें न कोई फ़ाएदा पहुंचा सकता है, न कोई नुक्सान.

وَإِنْ يَسْأَلْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۗ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۗ يُصِيبُ بِهٖ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٧٣﴾

● **नफ़ा व नुक्सान पहुंचाने का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : १०७ में अल्लाह का इरमान है: अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचा दे, तो उस के सिवा कोई नहीं है जो उसे हूर कर दे और अगर वो तुम्हें कोई ललाई पहुंचाने का इरादा कर ले, तो कोई नहीं है जो उस के इज़ल का इज़र दे, वो अपना इज़ल अपने बंदों में से जिस को चाहता है पहुंचा देता है और वो बहुत बप्शने वाला, बडा महेरबान है.

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۗ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٧٤﴾

● **हिलायत का नफ़ा और गुम्राही का नुक्सान भुद इन्सान ही को मिलेगा :** सूर-अ-यूनस आयत नंबर : १०८ में अल्लाह तआला ने इरमाया : (अ-पैगम्बर!) केल ह्यो के लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक (यानी सख्या हीन) आ गया है, अब जो शप्स हिलायत का रास्ता अपनायेगा, वो भुद अपने फ़ाएदे के लिये अपनायेगा और जो गुम्राही इफ़ितयार करेगा, उस की गुम्राही का नुक्सान भूद उसी को पहुंचेगा और मैं तुम्हारे कामों का जिम्मेदार नहीं हूं.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १२

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رُزُقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿١٠﴾

● **रोजी का मालिक सिर्फ अल्लाह ही है :** सू-अ-हूद आयत नंबर : ६ में यह पंखर ही गढ़ है के मजलूक को रोजी देने वाली ज्ञात सिर्फ अल्लाह ही की है : अल्लाह तआला ने तमाम ज़नदार और धन्सानों की रोजी अपने जिम्मा ले रभी है, पैदाइश से ले कर वफ़ात तक वही उन की रोजी का मुकम्मल धितिजाम करता है, कोई भी धन्सान अपनी रोजी मुकम्मल किये भगैर हुन्या से इत्सत नहीं हो सकता, इस लिये हर मुसलमान को इस बात पर यकीन करते हुये ज़रूत व हलाल रोजी हासिल करना चाहिये और नाज्ज़त व हराम से भयने का अलतिमाम करना चाहिये.

﴿١١﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّتْهَا نُوْفُ إِلَيْهِمْ أَعْمَالُهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١١﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْأَجْرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَسَحَبٌ مَصْنَعٌ وَفِيهَا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

● **हुन्या थाहने वाले आभिरत में मइत्तम रहेंगे :** सू-अ-हूद आयत नंबर : १५, १६ में इस बात की तालीम दी गढ़ है के नेक अमल से हुन्या का इधद तलभ करना अलुत पुरी बात है : कोई धन्सान अगर अपने नेक अमल से सिर्फ हुन्या के इधदे मसलन : शोहरत व धिज्जत वगैरा की नियत करे, अल्लाह तआला को राजी करने का कोई धरादा न हो, तो जैसे अमल का कोई अतिभार नहीं, अगर वो गैर धिमान वाला है, तो आभिरत में हमेशा की दोज़भ में ज़अेगा और अगर मोमिन है, तो उस के अमल का अज़ व सवाभ नहीं मिलेगा. हाँ! हुन्या में ज़िस गरज के लिये वो अमल किया होगा अल्लाह अगर चाहेंगे, तो उसे उस में काभ्याभ कर देंगे, मगर आभिरत में वो बिलकुल मइत्तम रहेगा, लिहाज़ा मालूम हुवा के नेक अमल से हुन्या का इधद तलभ करना अलुत पुरी बात है.

﴿١٣﴾ وَيَقَوْمِ اسْتَعْجِلُوا رَبَّكُمْ فَمَا رَبُّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ فِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مَجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

● **तौबा व धिस्तिग़फ़ार रहमत व अरकत का सभ्य है :** सू-अ-हूद आयत नंबर : ५२ में यह पशारत दी गढ़ है के सखी तौबा करने के अलुत से इधदे हैं : अज़रत हूद عليه السلام ने अपनी कौम के लोगों को गुनाहों से तौबा और आधन्दा गुनाह न करने का हुकम देकर इरमाया के जैसे करने पर अल्लाह तआला तुम्हारे साथ रहमत का मुआमला इरमायेगा, तुम्हारी कलतसाली व तंगदस्ती को पुशालाली में तपदील कर के तुम्हारी कुव्वत व ताकत में धिज़ाफ़ा इरमायेगा, मालूम हुवा के गुनाहों से भयने और सखी तौबा करने पर अल्लाह तआला हर मुश्किल से नज़ात और ज़ैर व अरकत और तरक़ियात से नवाज़ता है.

﴿١٤﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿١٤﴾ وَتِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الَّتِي كُنَّا نُزِّلُهَا عَلَيْكَ لَعَلَّ لَكَ تَحْفَظُهَا وَتُذَكِّرُهَا لِلْعَامِلِينَ ﴿١٥﴾ وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا أَعْتَابَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَارْتَبِعُوا صَوْتَهُمْ هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿١٥﴾

● **नपी की नाइरमानी से भयना चाहिये :** सू-अ-हूद आयत नंबर : ५८ ता ६० में यह अताया गया है के अल्लाह के लेजे हुये रसूल की नाइरमानी का अंजाम अलुत पुरा होता है: अज़रत हूद عليه السلام ने अपनी कौम आद को अल्लाह की धिवादत और गुनाहों से तौबा करने की दावत दी, तो लोगों ने कला के हम तुम्हारी वजह से अपने माबूहों को बिलकुल नहीं छोड सकते, हूद عليه السلام ने साइ तौर पर केह दिया के मैं अपना इज़ पूरा कर चुका, अगर तुम गुनाहों से भाज नहीं आओगे, तो अल्लाह तआला तुम्हें हलाक कर के दूसरी कौम को तुम्हारे माल व दौलत का वारिस बना देगा, युनांचे यह नाइरमान और धमंडी कौम आठ दिन और सात रातों तक चलने वाली शदीद तूफ़ानी हवाओं से हलाक कर दी गढ़, लिहाज़ा वकत के रसूल की नाइरमानी से भयना चाहिये.

﴿١٦﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُكُوعًا لِلَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبُنَّ السَّيِّئَاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرُ الَّذِي لَدُنَّ كَرِيمٍ ﴿١٦﴾ وَأَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٧﴾

● **नेकियां पुराधियों को मिटा देती हैं :** सू-अ-हूद आयत नंबर : ११४, ११५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अ (पैगम्बर!) दिन के दोनों किनारों पर और रात के डिस्सों में नमाज काधम करो, यकीनन नेकियां पुराधियों को मिटा देती हैं, यह अक नसीहत है उन लोगों के लिये ज़े नसीहत मानें और सभ्र से काम लो, इस लिये के अल्लाह नेकी करने वालों का अज़ आयेब् नहीं करता.

﴿١٨﴾ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

● **अल्लाह तआला को हमारे सभ्र कामों की पंखर है :** सू-अ-हूद आयत नंबर : १२३ में अल्लाह तआला ने इरमाया : ज़े कुध तुम कर रहे हो, तुम्हारा रभ उस से भे-अंभर नहीं है.

﴿١٩﴾ قَالَ يُبَيِّنُ لَكُمْ تَفْصِيلَ رُءْيَاكُمْ عَلَىٰ أَحْوَابِكُمْ ذِكْرًا لِمَنْ كَرِهَ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٩﴾

● **तापीर ज़ानने वाले हमदई ही के सामने प्वाभ भयान करना चाहिये :** सू-अ-यूसुफ़ आयत नंबर : ५ में यह नसीहत की गढ़ है के हर शप्स के सामने प्वाभ भयान करना मुनासिभ नहीं है: हर शप्स के सामने अपना प्वाभ भयान करने से मना किया गया है, क्यूं के कभी प्वाभों के अरीया अल्लाह तआला अपने भंदों की रेलनुमाई भी करना चाहता है, इस लिये प्वाभ उसी शप्स से भयान करना चाहिये, ज़े उस की तापीर ज़ानता हो और तापीर अताने की सलाहियत रभता हो और प्वाभ देभने वाले से हमदई रभता हो, लिहाज़ा हर शप्स के सामने प्वाभ भयान करने से भयना चाहिये.

﴿٢٠﴾ وَرَأَوْهُ تَتَّخِذُ الْوُجُوْهُنَّ عُقْبًا وَعَلَّقَتْ الْأَكْبَابُ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۚ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٠﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْيَهَا رَرَبِّهٖ ۖ كَذَّبَكَ لِغَصْبِ فَعَنْهُ السُّوءُ وَالْفَحْشَاءُ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢١﴾

● **गुनाहों से भयने के लिये अल्लाह से मदद मांगो :** सू-अ-यूसुफ़ आयत नंबर : २३, २४ में यह रेलनुमाई की गढ़ है के गुनाहों से भयने के लिये भी अल्लाह ही से मदद मांगना चाहिये: धन्सान को चाहिये के गुनाहों से भयने और नेकी पर काधम रेलने के लिये हर हाल में अल्लाह तआला से मदद मांगे और उसी की तरफ़ इत्तु करे, ज़भ धन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जे हो कर उस से इरयाद करता है, तो अल्लाह तआला अज़र उस की मदद करते हैं, युनांचे ज़भ अज़रत यूसुफ़ عليه السلام धितिहाई सभ्त आउमाइश में मुअतला हुये और उन के भरीदार अजीजे मिरर की नौजवान व हसीन तरीन भीवी ने अं कभरे की तनहाई में उन को गुनाह की दावत दी, तो अज़रत यूसुफ़ عليه السلام इरन अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जे हो कर उस की पनाह मांगने लगे, युनांचे अल्लाह तआला ने उनकी मदद इरमाई और अं दरवाजों को अपनी कुदरत से उन के लिये भोल दिया, इस तरह अज़रत यूसुफ़ عليه السلام गुनाह में मुअतला होने से भय गये.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १३

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَخُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ لِيُنزِلَ عَلَيَّ الْوَحْيَ وَإِنَّهُ لَا يَأْتِي النَّبِيَّ مِنَ اللَّهِ إِلَّا الْوَحْيُ وَاللَّهُ الْكَفِيُّونَ ﴿٢٦﴾

● अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद नही होना चाहिए : सूर-अ-यूसुफ़ आयत नंबर : ८६, ८७ में यह सभक दिया गया है के मुसीबत में अल्लाह ही से इर्याद करना चाहिए और अल्लाह की रहमत से मायूस नही होना चाहिए: अजरत याकूब عليه السلام के दूसरे लडके बिन्यामीन भी उन से बुदा हो गये, तो उन्होंने यही कहा के मैं अपनी परेशानी और गम की इर्याद अल्लाह तआला ही के सामने पेश करता हूँ, इस से सभक मिलता है के मुश्किल हालात में अल्लाह तआला ही की तरफ़ इबू करना चाहिए, अजरत याकूब عليه السلام को अपने दोनो बेटों यूसुफ़ عليه السلام और बिन्यामीन की बुदाई का बडा सहमा हुवा, मगर वो अल्लाह की रहमत से फिर भी मायूस नही हुये और अपने बेटों को तलाश करने का हुकम दे कर इरमाया के अल्लाह तआला मुजे धन दोनो से अजर मिलायेगा, अंबिया عليهم السلام की तालीम व सुन्नत से पता चलता है के रंज व गम और नुकसान के मौका पर इन्सान को अल्लाह की रहमत से मायूस नही होना चाहिए, बल्के इस पर मुकम्मल बरोसा रचना चाहिए.

لَهُ مَعْقِبَاتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرَ أَمْرًا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ آفَاكَ مَا رَدَدْنَاهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ آلٍ ﴿٩٩﴾

● जब कोई कौम भुद ही अपने हालात दुइस्त न कर लें, उस वक्त तक अल्लाह की मदद नही आती : सूर-अ-रअद आयत नंबर : ११ में यह अहम बात बताई गई है के हर इन्सान भुद अपने आमाल का जिम्मेदार है: जब तक किसी कौम के आमाल अच्छे होते हैं, तो अल्लाह तआला उस के साथ अच्छा सुलूफ़ करता रहता है, लेकिन जब कोई कौम इसाद और बिगाड की राह धिंतयार करती है, तो फिर अल्लाह तआला भी उस के साथ सभ्ती का मुआमला इरमाता है, उसी बात को इस तरह बयान किया गया के अल्लाह तआला किसी भी कौम की हालात उस वक्त तक नही बदलते, जब तक के वो भुद अपने अंदर तब्दीली न लाये और जब कोई कौम अपने गुनाहों की वजह से अजाब की मुस्तहिक हो जाती है, तो फिर अल्लाह तआला के अजाब को कोई टाल नही सकता.

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ

● रिजक का कुशादा और तंग होना अल्लाह की तरफ़ से होता है : सूर-अ-रअद आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अल्लाह तआला जिस के लिये चाहता है रिजक में वुस्वत कर देता है और (जिस के लिये चाहता है) तंगी कर देता है.

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٧﴾

● अल्लाह का जिंक दिल के इत्मीनान का हकीकी जरीया है : सूर-अ-रअद आयत नंबर : २८ में यह भुश-भबरी दी गई है के अल्लाह की याद से दिल को सुकून मिलता है: किसी इन्सान को दौलत व हुकूमत, धज्जत व शोहरत और औश व धशत के नशों से दिली सुकून हासिल नही हो सकता, अल्लाह तआला ने जिन लोगों को इमान की दौलत अता इरमाई और वो हुन्या की चीजों के मुकाबले में अल्लाह की याद में लग गये, तो अल्लाह के जिंक का नूर उन के दिलों से हर किस्म की हुन्यवी परेशानी और वलशत व घबराहट दूर कर के हकीकी सुकून व राहत अता इर्मा देता है, लिहाजा हमें अपना जयादा से जयादा वक्त अल्लाह की याद में लगा कर अपने दिल को सुकून पहुंचाना चाहिए.

وَالَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ كِتَابٌ يُفْرَحُونَ بِهِ إِذْ نَزَّلَ إِلَيْهِمْ مِنْ أَوْلَادِهِمْ بَعْضُهُمْ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمُوتُنَا أَعْبُدُ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكُ بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَعُدُّونَ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣١﴾

● कुर्आन अल्लाह की सखी किताब है और उस के सारे मजामीन हक हैं : सूर-अ-रअद आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अ पैगम्बर!) जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वो उस कलाम से भुश होते हैं, जो तुम पर नाजिल किया गया है और उन्ही गिरोहों में वो भी हैं, जो उस की बाअ्ज बातों को मानने से इन्कार करते हैं, केल दो के मुजे तो ये हुकम दिया गया है के मैं अल्लाह की इबाहत कइँ और उस के साथ किसी को भुदाई में शरीक न मानूँ, इसी बात की मैं दावत देता हूँ और उसी (अल्लाह) की तरफ़ मुजे लौट कर जाना है.

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٣٢﴾

● नेअ्मत के शुक्र पर मज्दीद इन्आम का वअ्दा : सूर-अ-इब्राहीम आयत नंबर : ७ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: वो वक्त भी (याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने अेलान इर्मा दिया था के अगर तुमने वाकई शुक्र अदा किया, तो मैं तुम्हें और जयादा दूंगा और अगर तुमने नाशुकी की तो यकीन जानो, मेरा अजाब बडा सभ्त है.

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَهُمُ اللَّيْلُ لَا يَجِدُ عَلَيْهِمْ طَوْلًا وَلَا جُلًّا ﴿٣٣﴾

● कियामत में नेकियां काम आयेगी : सूर-अ-इब्राहीम आयत नंबर : ३१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: मेरे जो बंदे इमान लाये हैं, उन से केल दो के वो नमाज काधम करें और हम ने उनको जो रिजक दिया है, उस में से छुप कर भी और भुल्लम भुल्ला भी (नेकी के कामों में) अर्थ करें (और यह काम) उस दिन (कियामत) के आने से पेहले पेहले (कर लें) जिस में न कोई अरीद व इरोप्त होगी और न कोई दोस्ती काम आयेगी.

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ ۖ نَحْنُ دَعْوَتِكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۖ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا كُنتُمْ مِّنْ ذَوَالِ ﴿٣٤﴾

● कियामत के दिन हुनिया में दोबारा आकर नेक-आमाल की मोहलत नही दी जायेगी : सूर-अ-इब्राहीम आयत नंबर : ४४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अ पैगम्बर! तुम) लोगों को उस दिन से भबरेदार करो जब अजाब उन पर आन पड़ेगा, तो उस वक्त ये जालिम कहेंगे के अ हमारे परवरदिगार! हमें थोड़ी सी मुदत के लिये और मोहलत दे दीज्ये ताके हम आपकी दावत कुबूल करलें और पैगम्बरों की पैरवी करें, (यानी उनकी बताई हुई बातों पर अमल करें, उस वक्त उन से कहा जायेगा के) अरे क्या तुम लोगों ने इरमें आ आ कर पेहले ये नही कहा था के तुम्हें हुन्या से कही जाना नही है (यानी तुम और तुम्हारे माल व अस्बाब कभी अत्म नही होंगे).

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १४

نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنَّ عَدَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۝

● अल्लाह तआला बहुत बर्षाने वाला भी है और उस का अजाप भी बड़ा सभ्त है : सू-अ-इ-आयत नंबर : ४८, ५० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: मेरे बंधों को बता दो के मैं ही बहुत बर्षाने वाला, बड़ा महेरबान हूँ और ये भी बता दो के मेरा अजाप ही दर्दनाक अजाप है (ताके इस बात को जान कर ईमान और तकवा की रगपत और गुनाहों का भौंक पैदा हो)।

لَا تُمَدَّنْ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِلدُّعَاءِ ۝

● दूसरों के माल व अस्वाम्य देभ कर अइसोस नहीं करना याहिये : सू-अ-इ-आयत नंबर : ८८ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: (अ-रसूल!) तुम उन चीजों की तरफ इरगिअ ऑप उठा कर भी न देभो जे हम ने इन (गेर ईमान वालों) में से मुप्तलिक लोगों को मजे उडाने के लिये दे रभी हैं और उनकी (इस हालत) पर (कुछ) गम न करो और जे लोग ईमान ले आये हैं, उन के लिये अपनी शकत का बाजू डेला दो।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

● मौत तक अल्लाह तआला की इबादत में लगे रहो : सू-अ-इ-आयत नंबर : ८८, ८९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: तुम अपने परवरदिगार की इहफ के साथ उस की तस्बीह करते रहो और सजदा करने वालों में शामिल रहो और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहो, यहाँ तक के तुम पर वो चीज (यानी मौत) आ जये जिसका आना यकीनी है (यानी मरते दम तक जिह व इबादत में मशगूल रहो)।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِيَتَأْتِيَ كُلُّ أُمَّةٍ لِحِمْلٍ طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُ مِنْهُ حَبًا وَسَبْغًا وَآمِنًا وَنَخْلًا وَأَصْنًا ۝ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاجِدًا يَمُوجُ فِيهِ وَنَبْتًا مُتَشَابِهًا وَوَالْعَلَّكَ تَشْتَبِهُونَ ۝

● अल्लाह तआला ने समंदर में भी रोजी के दरवाजे भोल रभे हैं : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : १४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अल्लाह) वही है जिस ने समंदर को काम पर लगाया ताके तुम इस से ताजा गोशत पाओ और इस से वो जेवरात निकालो जे तुम पहनेते हो और तुम देभते हो के इस में कस्तियां पानी को थीरती हुई चलती हैं ताके तुम अल्लाह का इजल (यानी रोजी) तलाश करो और ताके शुक्रगुजार बनो।

وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الرِّبٰنُ وَالْاِصْبٰغُ ۝ اَفَغَيَّرَ اللّٰهُ تَتٰفُؤُنَ ۝ وَمَا يَكْفُرُ مِنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاَلَيْسَ تَجْعُرُونَ ۝

● अल्लाह की इताअत हर हाल में लाजिम है : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : ५२, ५३ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: आरमानों और जमीन में जे कुछ है, सब उसी (अल्लाह) का है और उसी की इताअत हर हाल में लाजिम है, क्या फिर भी तुम अल्लाह के सिवा औरों से उरते हो? और तुम को जे नेअमत भी हासिल होती है, वो अल्लाह की तरफ से होती है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचती है, तो उसी से इरयाद करते हो।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهِمْ مِنْ دَابَّةٍ وَّالَّذِينَ يَزُؤْنَ فِي السُّبْحِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ لَهُمْ ۝ فَاِذَا جَاءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُوْنَ ۝ سَاعَةً وَّوَلَا يَسْتَنْقِذُوْنَ ۝

● अल्लाह तआला गुनाह पर इरान पकड नहीं करता : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : ६१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अगर अल्लाह लोगों को उन के जुल्म की वजह से (इरान) अपनी पकड में ले लेता, तो जमीन पर कोई जानदार बाकी न छोडता, लेकिन वो उन को अक मुतअय्यन वक्त तक मोहलत दे देता है, फिर जब उनका वो मुतअय्यन वक्त (यानी मौत का वक्त) आ जयेगा, तो वो घडी-लर भी इस से आगे पीछे नहीं हो सकेंगे (यानी फिर उनको किसी तरह की मोहलत नहीं मिलेगी)।

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تَبْيٰتًا ۝ لِكُلِّ شَيْءٍ وَّهَدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِّلْمُسْلِمِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يٰمُرُ بِالْعَدْلِ وَّالْاِحْسٰنِ وَّاِيْتٰى ذٰى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشٰءِ وَّالْمُنْكَرِ وَّالْبَغْيِ ۝

● अल्लाह तआला अ-इयाई, बुराई और जुल्म करने से मना करता है : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : ८९, ९० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: हम ने तुम पर ये किताब उतार दी है ताके वो हर बात भोल भोल कर बयान कर दे और मुसलमानों के लिये हिदायत, रहमत और भुश-भूरी का सामान हो, बेशक अल्लाह अ-इयाई का, अइसान का और रिशतेदारों को (उन के लुक्क) देने का हुक्म देता है और अ-इयाई, बुराई और जुल्म से रोकता है, वो तुम्हें नसीहत करता है ताके तुम नसीहत कुबूल करो।

مَا عُنَدَكُمْ يَنْفَعُكُمْ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ يٰق ۝

● दुन्या की नेअमते अत्म हो जअंगी; लेकिन नेक-आमाल का सवाप बाकी रहेगा : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : ९६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जे कुछ तुम्हारे पास है, वो सब अत्म हो जअयेगा और जे कुछ अल्लाह के पास है, वो बाकी रहेने वाला है।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّؤْءَ بِجَهٰنَّمَ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

● तौपा करने वालों को अल्लाह तआला माफ़ कर देते हैं : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : ११९ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: फिर भी तुम्हारा रभ अइसा है के जिन लोगों ने नाहानी में बुराई कर ली और उस के बाद तौपा कर ली और अपनी इस्लाह कर ली, तो इन सब बातों के बाद भी तुम्हारा परवरदिगार बहुत बर्षाने वाला, बड़ा महेरबान है।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَّالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَّجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ وَّهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝

● दावत व तप्तीग के आदाप : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : १२५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अपने रभ के रास्ते की तरफ लोगों को हिकमत के साथ और अच्छे तरीके से नसीहत कर के दावत दो और (अगर बहस की नौबत आये तो) उन से बहस भी अइसे तरीके से करो जे बेहतरीन हो, यकीनन तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को भी भूष जन्ता है जे उस के रास्ते से लटक गये हैं और उन से भी भूष वाकिफ है जे राह रास्त पर काठम हैं।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا اِمْثِلْ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهِ ۝ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝

● अदला लेने के अजये सप्र करना बेहतर है : सू-अ-न-इ-आयत नंबर : १२६ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: अगर तुम लोग (किसी के जुल्म का) अदला लो, तो उतना ही अदला लो जितनी अयादती तुम्हारे साथ की गथ थी और अगर सप्र ही कर लो, तो यकीनन ये सप्र करने वालों के हक में बहुत बेहतर है।

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १५

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ لِلَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ قَوْمَهُ وَيُذَكِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝

● कुर्आन सीधे रास्ते की रेखनुमाई करता है : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : एकीकत यह है के यह कुर्आन वो रास्ता दिभाता है, जो सब से जयादा सीधा है और जो लोग (धस पर) धमान लाकर नेक अमल करते हैं, उन्हें भूश-भभरी देता है के उन के लिये (अल्लाह के यहाँ) बडा अज्र व सवाब है.

وَيَذُرُّ الْإِنْسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَ الْبَلْخَيْرِ، وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝

● भुराई की दुआ नहीं करना याहिये : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: धन्सान भुराई धस तरह मांगता है जैसे उसे भलाई मांगनी याहिये और धन्सान बडा जल्दबाज वाकेम् हुवा है.

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مِمَّا مَدَّ مَوْمَادًا حُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

● दुन्या का तलबगार नाकाम और आभिरत का तलबगार काभ्याब है : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : १८, १९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जो शप्स दुन्या के झैरी इधदे ही याहता है, तो हम जिस के लिये याहते हैं, जितना याहते हैं, उसे यहीं पर (यानी दुन्या में) जल्दी दे देते हैं फिर उस के लिये हमने जल्दम रभ छोडी है जिस में वो जलील व पवार हो कर दाभिल होगा और जो शप्स आभिरत (का इधदा) याह और उस के लिये वैसी ही कोशिश करे जैसे उस के लिये करनी याहिये, जब के वो मोमिन भी हो, तो जैसे लोगों की कोशिश की पूरी कदरदानी की ज़येगी (यानी उन्हें धनामात से नवाजा ज़येगा).

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا آيَاةَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا، إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٌ وَلَا تَنْهَهُمَا عَنْ مَعْرَافَةِ اللَّهِ قَوْلًا كَرِيمًا ۝ وَخُفِّضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلِيلِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْتَنِي صَغِيرًا ۝

● वालिदैन के साथ बुढापे में भी अच्छा बरताव करो : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : २३, २४ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: तुम्हारे परवरदिगार ने ये हुकम दिया है के उस के सिवा किसी की धबाहत न करो और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर वालिदैन में से कोई अक या दोनों तुम्हारे पास बुढापे को पहुंच ज़ये, तो उन्हें उइ तक न कलो और न उन्हें जिडको, बल्के उन से धज्जत के साथ बात किया करो और उनके साथ मुहब्बत का बरताव करते हुये उन के सामने अपने आप को आजिजी से बुकाओ और ये दुआ करो के ये रभ! जिस तरह उन्हें मेरे बचपन में मुझे पाला है, आप भी उन के साथ रहमत का मुआमला कीजिये.

وَأَذِ الْقُرْآنِ حَقَّهُ وَالْمُسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذُرُوا ثَمَرَهُمْ إِذَا تَشَبَدُوا تَبْذِيرًا ۝ إِنَّ الْمُبْدِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ، وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝

● इजूल भर्या करने वाले शैतान के भाई हैं : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : २६, २७ में अल्लाह तआला का इरशाद है: रिस्तेदार को उस का एक दो और भिस्कीन और मुसाकिर को (उनका एक) और अपने माल को बेहुदा कामों में न उडाओ, यकीन ज़ानो के जो लोग बेहुदा कामों में माल उडाते हैं, वो शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार का बडा नाशुका है.

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ۝

● अतिहाल के साथ भर्य करना याहिये : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : २९ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: न तो (जैसे कंभूस बनो के) अपने हाथ को गर्दन से बांध कर रभो और न (जैसे कुजूल भर्य बनो के) हाथ को बिलकुल ही भुला छोड दो जिस के नतीजे में तुम्हें काभिले मलामत और भाली हाथ हो कर भैठना पडे.

وَلَا تَقْرُبُوا الرِّبَا إِذْ كَانَ فَاحِشَةً، وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

● जिना तक ले जानेवाले अरप्याब से भी बचो : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ३२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जिना के करीब भी मत ज़यो, वो यकीनी तौर पर बडी बे-हयाई और भलुत भुरा रास्ता है.

وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ، وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ، إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

● पूरी अमानतदारी के साथ यतीम के माल की लिहाजत करो : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: यतीम के माल के पास भी मत ज़यो (यानी यतीम के माल को धस्तेमाल न करो) मगर जैसे तरीके से जो (उस के एक में) बेहतर हो, यहाँ तक के वो बालिग हो ज़ये (और उस के अंदर समज पैदा हो ज़ये) और अहद (जधज वज्हा) को पूरा किया करो; भेशक (जैसे) वज्हे के बारे में (तुम से) पूछताछ होने वाली है.

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كُنْتُمْ وَرَثًا بِالْقِسْطِ، أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقِينَ، ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

● नाप तौल पूरा पूरा करो : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ३५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जब किसी को कोई चीज पैमाने से नाप कर दो, तो पूरा नापो और तौलने के लिये सही तराजू धस्तेमाल करो, यही तरीका दुइस्त है और धसी का अ-ज्राम बेहतर है.

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ، إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝

● कियामत में कान, आंभ और दिल के बारे में सवाल होगा : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जिस बात का तुम्हें यकीन न हो (उसे सच समज कर) उस के पीछे मत पडो, यकीन रभो के कान, आंभ और दिल सब के बारे में (तुम से) सवाल होगा.

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِ اللَّهِ، إِذَا قُضِيَ الْقَوْلُ، إِنَّ الْقُرْآنَ الْفَجْرَ، إِنَّ الْقُرْآنَ الْفَجْرَ كَانَ مَشْهُودًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ تَأْفِيلًا لَّكَ ۝

● पांथों वक्त की नमाज का अहतिमाम करो : सू-अ-बनी धर्राईल आयत नंबर : ७८, ७९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अ पैगम्बर!) सूरज ढलने के वक्त से लेकर रात के अंधेरे तक नमाज काधम करो और इज के वक्त कुर्आन पढने का अहतिमाम करो, याद रभो के इज की तिलावत में (इरिस्तों का) मजमा लाजिर होता है और रात के कुछ हिस्से में तलज्जुद पढा करो जो तुम्हारे लिये अक नइली धबाहत है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १६

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْيُنُهُمْ فَلَا تُبْصِرُونَ هُمُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَرَأَىٰ

● आभिरत में नेक अमल की काम्याबी के लिये धिमान ज़रूरी है: सू-अ-कड़ आयत नंबर : १०५ में यह सबक दिया गया है के धिमान के बगैर कोरि नेकी मकबूल नहीं होगी: आभिरत में किसी ली अमल के कुबूल होने के लिये धिमान शर्त है, कोरि अमल कितना ही अच्छा क्यों न हो, मगर धिमान न होने की वजह से अल्लाह के यहां उस की कोरि हैसियत नहीं होगी और न उस पर कोरि अज्र मिलेगा तिल्लाज्ज ह में धिस अजीम नेअमते धिमान पर अल्लाह का शुक्र अदा कर के जयादा नेकियों का जभीरा करना थालिये और अल्लाह तआला से धिमान की सलामती और धिमान पर आत्मा की हुआ करनी थालिये.

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَقَدْ آتَىٰ ۖ وَنَسُوهُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَرَدَا ۖ لَا يَلْبَسُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۖ

● आभिरत में अल्लाह के नेक धंदों का धिकाम और नाइरमानों का अंजाम: सू-अ-मरथम आयत नंबर : ८५ ता ८७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (धिस दिन को न भूलो) जिस दिन हम सारे मुत्तकी लोगों को मेहमान बना कर भुदा-अ-रहमान के पास जमा करेंगे और मुजरिमों को ध्यासे ज्ञानवरों की तरह लंका कर दोअभ की तरह ले जअंगे, (धिस दिन) लोगों को किसी की सिफारिश करने का धिपितयार ली नहीं होगा, सिवाये उन लोगों के जिन्होंने भुदा-अ-रहमान से कोरि धिज्जत हासिल करली हो.

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۖ

● कियामत का धिलम सिर्फ अल्लाह ही को है: सू-अ-ताला आयत नंबर : १५ में अल्लाह तआला धरशाद इरमाते हैं: यकीन रभो के कियामत की घडी आने वाली है, मैं उस (के वक्त) को पोशीदा रभना थालता हूं ताके हर शप्स को उस के किये का भदला मिले.

وَلَا يُفْلِحُ السَّاجِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۖ

● जदूगर को कली काम्याबी नहीं मिलती: सू-अ-ताला आयत नंबर : ६६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जदूगर थाले कहीं थला जअये, उसे काम्याबी हासिल नहीं होती.

كُلُّوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَنْ يَحِلُّ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۖ

● गलत तरीके से कमाई का अंजाम तयाही व यभाई है: सू-अ-ताला आयत नंबर : ८१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जो पाकीजा रिज्ज ह म ने तुम्हें अता किया है, उस में से भाओ और उस में हद से आगे न भदो, जिस के नतीजे में तुम पर मेरा गज्ज नालिज हो जअये और जिस किसी पर मेरा गज्ज नालिज हो जाता है, वो तयाह हो कर रेहता है.

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۖ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۖ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْ لَهُمْ حِرْحَاءٌ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۖ

● हुन्या सिर्फ थंद रोज की जिंदगी है: सू-अ-ताला आयत नंबर : १०२ ता १०४ में अल्लाह तआला धरशाद इरमाते हैं: जिस दिन सूर डूका जअयेगा और उस दिन हम सारे मुजरिमों को घेर कर धिस तरह जमा करेंगे के वो नीले पडे होंगे (थानी धितिलाई भदसूरत होंगे), आपस में भात थीत कर रहे होंगे के तुम (क्यों में या हुन्या में) हस दिन से जयादा नहीं हलरे, जिस (हुन्या की जिंदगी के) बारे में वो भातें करेंगे, उस की हकीकत ह में भूय मालूम है, जभके उन में सभ से जयादा सही राय रभने वाला कहेगा के तुम अक दिन से जयादा नहीं हलरे.

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۖ لَا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۖ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ أَوْجًا لَهُ ۖ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۖ يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ۖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۖ وَعَدَّتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخْفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۖ

● कियामत का हाल: सू-अ-ताला आयत नंबर : १०५ ता ११२ में अल्लाह तआला धरशाद इरमाते हैं: लोग तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (के कियामत में उनका क्या हाल होगा?) जवाभ में केह दो के मेरा परवरदिगार (अैसी कुदरत रभता है के) उनको धूल की तरह उडा देगा और जमीन को अैसा हभवार थटियल मैदान बना कर छोडेगा के उस में तुम्हें न कोरि नालमवारी नअर आयेगी और न कोरि भुलदी, उस दिन सभ के सभ अक आवाज देने वाले के पीछे धिस तरह थले आअंगे के उस के सामने (किसी का) कोरि टेढापन न रहेगा (जैसे हुन्या में उल्टी सीधी भातें करते थे, अब वो अैसी भातें नहीं कर सकेंगे) और भुदा-अ-रहमान के आगे तमाम आवाजें हभ कर रहे जअंगी थुनांये तुम्हें पांव की सरसराहाट (थानी पांव थलने की आवाज) के सिवा कुध सुनाई नहीं देगा, उस दिन किसी की सिफारिश काम नहीं आयेगी, सिवाये उस शप्स (की सिफारिश) के जिसे भुदा-अ-रहमान ने धिज्जत दे दी हो और जिस के भोलने पर वो राजी हो, वो अल्लाह लोगों की सारी अगली पिछली भातों को ज्ञानता है और वो लोग अल्लाह के धिलम का धिलाता नहीं कर सकते (थानी अल्लाह तआला को कितना धिलम है? वो उन्हें कली मालूम नहीं हो सकता) और (धिस दिन) सारे के सारे येरहे हमेशा जिंदा और पाकी रेहने वाले अल्लाह के आगे भुके हुअे होंगे और जो कोरि जुल्म का भोज उहा कर लायेगा, वो नाकाम होगा और जिसने नेक अमल किये होंगे, जभ के वो भोभिन ली हो, तो उसे न किसी जयादती का भौड़ होगा और न किसी हक तलई का (थानी अैसा शप्स कामयाभ हो जअेगा).

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۖ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۖ قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ ۖ

● कुर्आनी अलकामात पर अमल न करने की वजह से रोजी में तंगी और आभिरत में अजाभ होगा: सू-अ-ताला आयत नंबर : १२४ ता १२६ में अल्लाह तआला धरशाद इरमाते हैं: जो शप्स मेरी नसीलत से भुँल भोडेगा, तो उस को भडी तंग जिंदगी मिलेगी और कियामत के दिन हम उसे अंधा कर के उहाअंगे, वो कहेगा के या-रभ! तूने मुजे अंधा कर के क्यू उहाया, हालाके मैं तो आँभों वाला था? अल्लाह कहेगा : धसी तरह हमारी आयतें तेरे पास आई थीं, मगर तूने उन्हें भुला दिया और आज धसी तरह तुजे भुला दिया जअेगा.

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ

● नमाज की पाबंदी करने के साथ साथ घर वालों को ली नमाज का लुकम करो: सू-अ-ताला आयत नंबर : १३२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अपने घर वालों को नमाज का लुकम दो और भुद ली धिस के पाबंद रहे.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १७

فَسَعَلُوا أَهْلَ الدُّكُرَانِ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

● शरीअत का हुकूम मालूम न होने पर किसी जानकार आलिम से मालूम करो: सू-अ-अंबिया आयत नंबर : ७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अगर तुम्हें भुद धलम नहीं है, तो नसीहत का धलम रभने वालों से पूछ लो.

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا، وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا، وَكَفَىٰ بِنَا حَسِيبِينَ ﴿٨٧﴾

● कियामत के दिन किसी पर जुल्म नहीं किया जायेगा: सू-अ-अंबिया आयत नंबर : ४७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: हम कियामत के दिन औसी तराजूअें ला रभेंगे जो सरापा धन्साइ लोंगी, युनांचे किसी पर कोई जुल्म नहीं होगा और अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर ली होगा, तो हम उसे (कियामत के दिन सभ के) सामने ले आयेगे और हिसाब लेने के लिये हम काई हैं.

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٤٢﴾ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ، كُلُّ الْبِنَاءِ لِرَبِّهِمْ ﴿٤٣﴾

● तमाम धन्सानों का रभ अेक अल्लाह है: सू-अ-अंबिया आयत नंबर : ६२, ६३ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं: (लोगो!) यकीन रभो के यह (दीन जिस की ये तमाम अंबिया दावत देते रहे हैं) तुम्हारा दीन है जो अेक ही दीन है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, लिहाजा तुम मेरी धबाहत करो और लोगों ने अपने दीन को आपस में टुकडे टुकडे कर के पांट लिया, (भगर) सभ हमारे पास (भौत के बाह) लौट कर आने वाले हैं.

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ، كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعَدُّوا عَلَيْنَا، إِنَّآ كَنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٨﴾

● कियामत का आना; अल्लाह का सख्या वअ्दा है: सू-अ-अंबिया आयत नंबर : १०४ में अल्लाह तआला का इरशाद है : उस दिन (का ध्यान रभो) जब हम आस्मान को धस तरह लपेट देंगे, जिस तरह लिपे हुअे मजाभीन का कागज लपेट दिया जाता है (और) हमने जिस तरह पेहली बार पैदा किया (धसी तरह आसानी से) धस को दोबारा पैदा कर देंगे, ये हमारे अिभ्मे अेक वअ्दा है और हम अउर उस को पूरा करेंगे.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ، إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٩﴾ يَوْمَ تَرُؤُنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَنَّا أَرْضَعَةً وَنَكُوعٌ كُلُّ حَنَلٍ حَنَلًا، وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ وَمَهُمُ بِسُكْرَىٰ وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ﴿١١٠﴾

● कियामत का अलजला बडा भौइनाक होगा: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : १, २ में अल्लाह तआला कियामत की होलनाकी बयान करते हुअे इरमाते हैं : अे लोगो! अपने परवरदिगार (के गजब) से डरो, यकीन जानो के कियामत (के दिन) का अलजला बडी लारी थीअ होगी, जिस दिन तुम धस अलजले को देभोगे, उस दिन हर दूध पिलाने वाली उस बअ्ये (तक) को लूल जायेगी जिसको उसने दूध पिलाया, और हर धमल वाली (उस दिन के भौइ से) अपना धमल गिरा देगी और लोग तुम्हें यूँ नउर आयेगे के वो नशे में बहलवास हैं, लालाके वो नशे में नहीं लोंगे, बल्के अल्लाह का अजाब बडा सप्त होगा (धस लिये औसे सप्त दिन से बयने के लिये नेक आमांल कर के पेहले से तय्यारी कर लो).

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ، إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١١٤﴾

● अरधे काम करने वाले भोभिन भंइों के साथ अल्लाह का वअ्दा: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : १४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जो लोग धमान लाअे हैं और उनलोंने नेक अमल किये हैं, अल्लाह तआला यकीनन उन को औसे भागात में दाभिल करेंगे, जिनके नीचे नहरें भेहती लोंगी, यकीनन अल्लाह हर वो काम करता है, जिस का इरादा कर लेता है (कोई उसे रोक नहीं सकता).

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُبِلُوا أَوْ مَا تَوَّابِينَ أُولَئِكَ نُفِقُهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا، وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ خَيْرُ الرُّزْقِينَ ﴿١١٥﴾ لَيْدٌ خَلَقْتَهُمْ مُدَّ خَلَايَئِهِمْ، وَإِنَّ اللَّهَ لَكَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١١٦﴾

● अल्लाह के रास्ते में जान व माल भर्य करने वालों के लिये भेहतरीन बहला: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : ५८, ५९ में यह बतया गया है के अल्लाह की राह में जान व माल भर्य करने वालों के लिये भेहतरीन बहले और जन्नत का वअ्दा है: जो लोग दीन की हिलाअत व सरभुवंडी के लिये अपना धर-भार छोड कर दीन की मेहनत और अल्लाह के कलिमे को भुवंद करने के लिये निकलते हैं और अपना जान और माल लगाते हैं, आभिरत में अल्लाह तआला उनलें उनकी रजाभंदी के भुताभिक भेहतरीन बहला और जन्नत में दाभिला अता इरमायेगा, धस लिये धमान वालों को अल्लाह की राह में जान व माल भर्य करने से पीछे नहीं हटना चाहिये.

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَآ فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرٍ، وَيُنسِبُكَ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَّ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا يَذُنُّهُ، إِنَّ اللَّهَ لِلنَّاسِ لَرءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٠﴾

● अल्लाह ने काधनात की सारी थीअों को धन्सानों के काम में लगा रभा है: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : ६५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : क्या तुम ने नहीं देभा के अल्लाह ने अमीन की सारी थीअें तुम्हारे काम में लगा रभी हैं और वो कश्तियां ली जो उस के हुकूम से समंहर में अलती हैं और उसने आस्मान को धस तरह थाम रभा है के वो उस की धजजत के बगैर अमीन पर नहीं गिर सकता, हकीकत यह है के (यह सभ थीअ अल्लाह ने तुम्हारी अउरत के लिये बना रभी है, धस लिये के) अल्लाह लोगों के साथ शकत का भरताव करने वाला, बडा भहेरभान है.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ صُورٌ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ، إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَا يُجْتَمِعُونَ لَهُ، وَإِنْ يَسْلُبْنَهُمْ ذَبَابٌ شَيْئًا لَا يَسْتَفِيدُونَ مِنْهُ، صُغْفُ الطَّالِبِ وَالْبَطُولِ ﴿١٢١﴾

● अल्लाह के अलावा जिनकी धबाहत की जाती है, वो सभ कमजोर व भेभस हैं: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : ७३ में अल्लाह तआला का इरशाद है : लोगो! अेक भिसाल बयान की जा रही है, अब उसे कान लगा कर सुनो! तुम लोग अल्लाह को छोड कर जिन जिन को दुआ के लिये पुकारते हो, वो अेक भभ्भी ली पैदा नहीं कर सकते, याह धस काम के लिये सभ के सभ धकडे हो जाये और अगर भभ्भी उन से कोई थीअ धीन कर ले जाअे, तो वो उस से छुडा ली नहीं सकते, औसा दुआ भांगने वाला ली कमजोर और जिस से दुआ भांगी जा रही है वो ली (कमजोर और भेभस है).

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ، وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٢٢﴾

● काम्याभी हासिल करने के लिये लले काम करो: सू-अ-अ-ल-आयत नंबर : ७७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अे धमान वालो! इकु करो और सजदा करो और अपने परवरदिगार की भंहगी करो और ललाई के काम करो ताके तुम्हें काम्याभी हासिल हो.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १८

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّو مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاَعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥٨﴾

● **हलाल रिजक भाओ और नेक अमल करो :** सू-अ-मोमिनून आयत नंबर : ५१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अये पैगाम्बरो! पाकीजा थीजों में से (जे चाही) भाओ और नेक अमल करो यकीन रभो के जे कुछ तुम करते हो, मुजे उस का पूरा पूरा ठल्म है.

إِدْفَعْ بِالَّذِي هِيَ أَحْسَنُ السَّبِيَّةَ ﴿٥٩﴾

● **पुराई का जवाब अरखाई से देना चाहिये :** सू-अ-मोमिनून आयत नंबर : ६६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: तुम पुराई को जैसे तरकी से दूर करते रहो, जे (तरीका) बहुत ही अरखा हो.

فَإِذَا نَفَخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَسْأَلُونَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦١﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٦٢﴾

● **कियामत के दिन रिश्ते नाते काम नहीं आयेगे :** सू-अ-मोमिनून आयत नंबर : १०१ ता १०३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : फिर जब सूरूँका ज़अेगा, तो उस दिन न उनके दरमियान रिश्ते नाते पाकी रहेंगे और न कोई किसी को पूछेगा, उस वक्त जिनके (आमाल के) पलडे भारी निकले, तो वही होंगे जे काम्याबी पायेगे और जिनके (आमाल के) पलडे हल्के पड गये, तो ये वो लोग होंगे, जिनहोंने अपने आपको घाटे में डाल रभा था (और) वो होजभ में हमेशा हमेशा रहेंगे.

قَالُوا رَبَّنَا عَلِمَتْ عَيْنَا شِفْوَتَنَا وَكُنَّا قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿٦٣﴾ رَبَّنَا آخِرُ جَنَاتِنَا إِنَّا نَعُدُّكَ وَأَنَا ظَالِمُونَ ﴿٦٤﴾ قَالَ احْسَبُوا فِيهَا وَلَا تَكْفُرُونَ ﴿٦٥﴾

● **गैर ईमान वाले कियामत के दिन अइसोस करेंगे :** सू-अ-मोमिनून आयत नंबर : १०६ ता १०८ में अल्लाह तआला का इरमान है: वो (गैर ईमान वाले) कहेंगे : हमारे परवरदिगार! (दुन्या में) हम पर हमारी बढबपती छा गई थी और हम गुम्राह लोग थे, हमारे परवरदिगार! हमें यहां (होजभ) से बाहर निकाल दीज्ये, फिर अगर हम दोबारा वही काम करें, तो बेशक हम जालिम होंगे, अल्लाह इरमायेगा: ठसी (होजभ) में जलील हो कर पडे रहो और मुजे से बात भी न करो.

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٦﴾ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

● **ईमान वालों में पुराई आम करनेवालों का अंजाम :** सू-अ-नूर आयत नंबर : १६ में अल्लाह तआला का इरमान है: याद रभो के जे लोग यह चाहते हैं के ईमान वालों में बे-हयाई डैले, उन के लिये दुन्या और आभिरत में दईनाक अजाब है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ ۖ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۖ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٨﴾

● **बेहयाई और पुराई की तरगीब देना शैतान का काम है :** सू-अ-नूर आयत नंबर : २१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अये ईमान वालो! तुम शैतान के पीछे पीछे मत चलो और अगर कोई शय्स शैतान के पीछे चलता है, तो (सुन लो!) शैतान (का काम) तो हमेशा बे-हयाई और पुराई का हुकम करना ही है और अगर तुम पर अल्लाह का इजल और रहमत न होती, तो तुम में से कोई भी कभी पाक न होता, लेकिन अल्लाह जिस को चाहता है, पाक साफ़ कर देता है और अल्लाह हर बात सुनता, हर चीज जानता है.

وَلَا يَأْتِلْ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٩﴾

● **माफ़ करने वाले को अल्लाह भी माफ़ कर देता है :** सू-अ-नूर आयत नंबर : २२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: तुम में से जे लोग अहले भैर हैं और माली वुस्अत रभते हैं, वो जैसे करमें न भाये के वो रिश्तेदारों, मिरकीनों और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को कुछ नहीं देंगे और उनहें चाहिये के माफ़ी और दर-गुजर से काम लें, क्या तुम्हें यह पसंद नहीं है के अल्लाह तुम्हारी भताये बपश दे? और अल्लाह बहुत बपशने वाला, बडा महरबान है.

إِنَّ الَّذِينَ يُرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْفُطُلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧٠﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

● **तोहमत लगाने वालों का अंजाम :** सू-अ-नूर आयत नंबर : २३, २४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : याद रभो के जे लोग पाक दामन भोली-भाली मुसलमान औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुन्या और आभिरत में इटकार पड चुकी है और उन को उस दिन जबरदस्त अजाब होगा, जिस दिन भूद उन की जभानें, उन के हाथ और उन के पांव; उन के भिलाइ उन के किये हुये कामों की गवाही देंगे, जे वो (दुन्या में) करते रहे हैं.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ ۖ وَتَسْبَحُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٧٢﴾ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۗ

وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ اذْجِعُوا فَاجْزِعُوا ۗ هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

● **किसी के घर जाने से पहले ठज्जत लेना चाहिये :** सू-अ-नूर आयत नंबर : २७, २८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अये ईमान वालो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में उस वक्त तक दाभिल न हो जब तक ठज्जत न ले लो और उन में बसने वालों को सलाम न कर लो, यही तरीका तुम्हारे लिये बेहतर है, उम्मीद है के तुम (ठस नसीहत का) अयाल रभोगे और अगर तुम उन घरों में किसी को न पाओ तब भी उन में उस वक्त तक दाभिल न हो, जब तक तुम्हें ठज्जत न दे दी जाये और अगर तुम से (घर के अंदर से) कडा जाये के वापस चले जाओ, तो वापस चले जाओ, यही तुम्हारे लिये पाकीजा तरीन तरीका है और तुम जे अमल भी करते हो अल्लाह को उस का पूरा पूरा ठल्म है.

قُلْ لِلَّهِ مِنَ الْعِزَّةِ مَا عِزَّتْ لَهُ ۖ وَحِطُّوا لَهُمْ ۚ ذَلِكُمْ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٧٤﴾

● **अपनी नजरों और शर्मगालों की हिफाजत करो :** सू-अ-नूर आयत नंबर : ३० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: मोमिन भईं से केह दो के वो अपनी निगाहें नीची रभें और अपनी शर्मगालों की हिफाजत करें, यही उन के लिये पाकीजा तरीन तरीका है, वो जे काम करते हैं, अल्लाह उन सब से पूरी तरह बाभबर है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर १९

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿١٧٠﴾ يَا لَيْتَنِي لَمَّا كَذَبْتُ لَمْ أَخَذْ فُلًا نَّحْمِلُهُ لَكَ ﴿١٧١﴾ لَقَدْ أَضَلَّتْني عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿١٧٢﴾

● **पुुरे से दोस्ती का अंजाम** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : २७ ता २९ में अल्लाह तआला का इरमान है: (वो दिन अैसा होगा) जिस दिन जालिम (हस्तर से) अपने हाथों को काट भायेगा और कहेगा: क्या अच्छा होता के मैं रसूल के साथ हीन के रास्ते पर लग लेता! हाय मेरी बर्बादी! काश मैंने कुलां शप्स को दोस्त न बनाया होता! मेरे पास नसीहत आ चुकी थी, मगर उस (दोस्त) ने मुझे षस से लटका दिया और शैतान तो है ही अैसा के वक्त पडने पर ष-सान को बे यारो मददगार छोड जाता है.

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿١٧٣﴾ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لَبَّيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ؕ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿١٧٤﴾ لِنُنْفِثَ بِهِ بَلَدًا مَّيِّتًا وَنُنْفِثُ بِهِ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿١٧٥﴾

● **अल्लाह की कुदरत** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : ४७ ता ४९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिये रात को लिबास बनाया और नींद को सरापा सुकून और दिन को होबारा (नींद से) उठ भडे होने का उरीया बना दिया और वही अल्लाह है जिसने अपनी रहमत (यानी बारिश) से पेलले हवाओं लेखुं जे (बारिश की) भुश-भबरी लेकर आती हैं और (अल्लाह इरमाते हैं) हमने ही आस्मान से पाकीजा पानी उतारा है ताके हम उस के उरीये मुर्दा जमीन को जिंदगी भपशें और अपनी मफ्लूक में से भहुत से ज्ञानवरों और ष-सानों को षस से सेराभ करें.

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿١٧٦﴾

● **नसबी और ससुराली रिस्ते अल्लाह तआला बनाता है** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : ५४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: वही (अल्लाह) है जिस ने पानी से ष-सान को पैदा किया, फिर उस को नसबी और ससुराली रिस्ते अता किये हैं और तुम्हारा परवरदिगार बडी कुदरत वाला है.

وَتَوَكَّلْ عَلَى النَّحْيِ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَيَحْيِي بَعْدِي ؕ وَكَفَى بِهِ بَدْءَ نُوْبٍ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿١٧٧﴾

● **हमेशा जिंदा रेहने वाले अल्लाह पर भरोसा रभो** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : ५८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: तुम उस (अल्लाह की) जात पर भरोसा रभो जे जिंदा है, जिसे कभी मौत नहीं आयेगी और उसी की हम्द के साथ तस्बीह करते रहो और वो अपने बंदों के गुनाहों की भबर रभने के लिये काड़ी है.

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ أَنْ يَدَّكُرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿١٧٨﴾

● **रात व दिन का अेक दूसरे के पीछे आना अल्लाह की निशानी है** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : ६२ में अल्लाह तआला ये भबर हेते हैं : वही (अल्लाह) है जिस ने रात और दिन को अैसा बनाया के वो अेक दूसरे के पीछे यले आते हैं, (मगर यह अल्लाह की कुदरत की सारी जातें) उस शप्स के लिये (काम की हैं) जे (धन चीजों में गौर व किंक कर के) नसीहत हासिल करने का षरादा रभता हो या शुक् अदा करना चाहता हो.

وَعبَادِ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿١٧٩﴾ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿١٨٠﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۗ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿١٨١﴾ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿١٨٢﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿١٨٣﴾ وَالَّذِينَ لَا يُدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ؕ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿١٨٤﴾ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ﴿١٨٥﴾

● **अल्लाह के भास बंदों की निशानियां** : सू-अ-कुर्आन आयत नंबर : ६३ ता ६९ में अल्लाह तआला यह तजकिरा इरमाते हैं: रहमान के बंदे वो हैं जे जमीन पर आबिजी से यलते हैं और जब जालिल लोग उन से जालिलाना भिताभ करते हैं, तो वो सलामती की जात केलेते हैं और जे रातें षस तरह गुजारते हैं के अपने परवरदिगार के आगे (कभी) सन्हे में होते हैं और (कभी) कियाम में और जे यह केलेते हैं के अे हमारे परवरदिगार! जहन्नम के अजाभ को हम से दूर रभिये, हकीकत यह है के उस का अजाभ पूरी तबाही है, भेशक वो जहन्नम भुरा ठिकाना और भुरा मकाम है और जे भर्थ करते हैं, तो न कुञ्जल भर्था करते हैं, न तंगी करते हैं, बल्के उन का भर्थ करना षस (कभी जयादती) के दरभियान अेतिहाल का तरीका है और जे अल्लाह के साथ किसी भी दूसरे भाबूद की षबादत नहीं करते और जिस ज्ञान को अल्लाह ने हुर्मत भपशी है, उसे नाहक कतल नहीं करते और न वो जिना करते हैं और जे शप्स भी ये काम करेगा, उसे अपने गुनाह के वबाल का सामना करना पडेगा, कियामत के दिन उस का अजाभ भढा भढा कर दुगना कर दिया जायेगा और वो जलील हो कर उस अजाभ में हमेशा हमेशा रहेगा.

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْغُلَامَ ۚ إِنَّهُنَّ أَتْبَعُوكَ ۖ فَاتَّبَعُوهُم مَّا كَرِهَ اللَّهُ لِعِبَادِهِ ۚ تَمَتَّعُوا بِالْعَالَمِينَ ﴿١٨٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ آلِ هَارُونَ أَنِ اضْرِبُوا حُرَّاسًا وَمَا كَانُوا عَابِدِينَ ﴿١٨٧﴾ وَنُوحٍ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَيْهِ سِرًّا بِأَن يُخَيِّرَ قَوْمَهُ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ تُجِيبُونَ مَثَلِ كُلِّ شَيْءٍ وَإِنِّي أَخَافُ أَنَّكُمْ تُبَدِّلُونَ ﴿١٨٨﴾ قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿١٨٩﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۚ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿١٩٠﴾ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿١٩١﴾ وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٩٢﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٩٣﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٤﴾

● **हक पर रेहते हुअे अल्लाह तआला की मदद उरर आती है** : सू-अ-शुअरा आयत नंबर : ५२ ता ६७ में यह भुश-भबरी ही गई है के हर तकलीक के भाद राहत आती है : हउरत भूसा ^{عليها} की कौम ने फिरऔन के जुल्म को भदश्त किया और षमान पर जभे रहे तो अल्लाह तआला ने उन्हें भहुत से षनामात से नवाजा, उन के लिये दरिया में रास्ते बना दिये, उन के दुश्मन फिरऔन को षसी दरिया में दुभो दिया और फिर उन को षसी मुल्क में भादशाहत अता इरमा दी, जब ष-सान हीन के लिये तकलीक उठाता है और षस्लामी अहकाम पर अमल करता है, तो अल्लाह तआला उस को अपनी जमीन का वारिस व मालिक बना देता है, लिहाजा हीन की मेहनत करने में आने वाली इकावटों से घबराना नहीं चाहिये और अल्लाह से मदद की उम्मीद रभनी चाहिये.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २०

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي السُّمُورِ فَفَزَعَمَن فِي السَّمَلُوتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ الْأَمَنُ شَاءَ اللَّهُ، وَكُلُّ أُمَّةٍ دُخِرِينَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدًا وَهِيَ تَمْرٌ مِّنَ السَّحَابِ، صُفِعَ اللَّهُ الَّذِي آتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝

● **क्रियामत का मंत्र:** सूर-अ-नमल आयत नंबर : ८७, ८८ में अल्लाह तआला घरशाह इरमाते हैं : जिस दिन सूर डूँका जायेगा, तो आरमानों और जमीनों के सब रेलने वाले घबरा उठेंगे, सिवाये उन के जिन्हें अल्लाह चालेगा और सब उस के पास भुके हुये हाजिर होंगे, तुम पहाड़ों को द्रुते हो तो समझते हो के यह अपनी जगह जमे हुये हैं, हालांकि वो इस तरह इर रहे होंगे जैसे बादल फिरते हैं, यह सब अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज को मजबूत तरीके से बनाया है, यकीनन उसे पूरी जबर है के तुम काम करते हो.

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا، وَهُم مِّن فَرَعِ يَوْمِئِذٍ آمِنُونَ ۝ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَيْتٌ وَجُوهُهُم فِي النَّارِ، هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

● **नेकी पर धन्या और बुराई पर सजा:** सूर-अ-नमल आयत नंबर : ८९, ९० में अल्लाह तआला ने इरमाया : जो कोई नेकी लेकर आयेगा उसे उस से बेहतर बदला मिलेगा और जैसे लोग उस दिन हर किरम की घब्राहट से मडकूज होंगे और जो कोई बुराई लेकर आयेगा, तो जैसे लोगों को भुँह के पल आग में डाल दिया जायेगा तुम्हें किसी और बात की नहीं, उन्ही आमाह की सजा दी जायेगी जो तुम किया करते थे.

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي كَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَن ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝

● **दाई का काम सीधी राह दिखाना है:** सूर-अ-नमल आयत नंबर : ९१, ९२ में अल्लाह तआला का घरशाह है: (ये पैगम्बर! उन से केह दो के) मुझे तो यही हुकम मिला है के मैं इस शहर के रम की धमाहत कइं जिसने इस शहर को हुर्मत बपशी है और हर चीज का मालिक वही है और मुझे यह हुकम मिला है के मैं इरमांवरदारों में शामिल रहूँ और यह के मैं कुर्आन की तिलावत कइं, अब जो शप्स लिहायत के रास्ते पर आये, वो अपने ही इाई के लिये रास्ते पर आयेगा और जो गुम्राही धपितचार करे, तो केह देना के मैं तो बस उन लोगों में से हूँ जो जबरदार करते हैं.

وَمَا أُرِيْتُمْ مِّن شَيْءٍ فَمَتَّاعٌ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا، وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ، أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

● **दुन्या की जेय व जीनत पलोत मामूली चीज है:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ९० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : तुम को जो कुछ भी दिया गया है, वो दुन्यवी जिंदगी का भजाना और इस की भूबसूरी है और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो कहीं जयादा बेहतर और कहीं जयादा बाकी रेलने वाला है, क्या फिर भी तुम अकल से काम नहीं लेते?

فَأَمَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَحَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝

● **तौबा कर के धमान लाने और अरछे काम करनेवाले जइर काम्याप होंगे:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ९७ में अल्लाह इरमाते हैं : यकीनन जिन लोगों ने तौबा कर ली और धमान ले आये और नेक अमल किये, तो पूरी उम्मीद है के वो उन लोगों में शामिल होंगे जिन्हें काम्यापी हासिल होगी.

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ، وَلَهُ الْحُكْمُ وَالْيَوْمُ تَرْجَعُونَ ۝

● **दुन्या व आभिरत में सारी तारीक के लाईक अल्लाह ही है:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ७० में अल्लाह का इरमान है : अल्लाह वही है, उस के सिवा कोई धमाहत के लाईक नहीं, तारीक उसी की है दुन्या में भी और आभिरत में भी और हुकम उसी का चलता है और उसी की तरफ तुम सब वापस लेजे जाओगे.

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْبَيْتَ سَدًّا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنَ اللَّهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ، أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَدًّا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنَ اللَّهِ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِاللَّيْلِ تَسْكُونُونَ فِيهِ، أَفَلَا تَبْصُرُونَ ۝ وَمَنْ رَّحِمْتَهُ جَعَلَ لَكُمُ الْبَيْتَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ، وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

● **रात दिन का आना जाना अल्लाह की पडी नेअमत है:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ७१ ता ७३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (ये पैगम्बर! उन से) कही : जरा यह पतलाओ के अगर अल्लाह तुम पर रात को हमेशा के लिये क्रियामत के दिन तक बाकी रहे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूह (असा) है जो तुम्हारे पास रोशनी लेकर आये? भला क्या तुम सुनते नहीं हो? कही : जरा यह पतलाओ के अगर अल्लाह तुम पर दिन को हमेशा के लिये क्रियामत के दिन तक बाकी रहे, तो अल्लाह के अलावा कौन माबूह है, जो तुम्हें वो रात ला कर दे दे, जिस में तुम सुकून हासिल कर सको? भला क्या तुम्हें समझ में नहीं आता, उसी ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात भी बनाई है और दिन भी ताके तुम रात में आराम करो और दिन में रोजी तलाश करो और (यह सारी चीजें इस लिये ही हैं) ताके तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो.

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنَ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ، إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝

● **अल्लाह तआला इसाह करने वालों को पसंद नहीं करता:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ७७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अल्लाह ने तुम्हें जो कुछ दे रमा है, उस के जरीये आभिरत वाला घर बनाने की कोशिश करो और दुन्या में से अपने हिस्से को (आभिरत में ले जाने के लिये) मत लूतो और अल्लाह ने जिस तरह तुम पर अहसान किया है, तुम भी अहसान करो और जमीन में इसाह भयाने की कोशिश न करो, यकीन जानो अल्लाह इसाह भयाने वालों को पसंद नहीं करता.

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا، وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝

● **आभिरत में अरछा अंजाम परहेजगारों का है:** सूर-अ-कसस आयत नंबर : ८३ में अल्लाह तआला का पैगाम है : वो आभिरत वाला घर तो हम उन लोगों के लिये आस कर देंगे, जो जमीन में न तो बुराई चालते हैं और न इसाह और आभरी अंजाम (यानी अरछा इंसला) परहेजगारों के हक होगा.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २१

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوا وَهَآءِ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٦٠﴾

● पिछली उम्मतों से उग्रत हासिल करो: सू-अ-३म आयत नंबर : ६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: क्या यह लोग जमीन में यत्ने किए नहीं ताके वो यह देभते के इन से पहले जे लोग थे, उन का अंजाम कैसा हुवा? वो ताकत में इन से ज्यादा मजबूत थे और उनहोंने जमीन को भी जेतता था और जितना इन लोगों ने उसे आबाद किया, इस से ज्यादा उनहोंने इस को आबाद किया था और उन के पास उन के पैगाम्बर भुले भुले दलाएल लेकर आये थे, युनांचे अल्लाह तो जैसे नहीं था के उन पर जुल्म करे, लेकिन वो भुद अपनी जनों पर जुल्म करते रहे.

﴿٦٠﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا كَذَّبُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالْعُرُوفَاتِ وَاللَّيْلِ فِي الْعَدَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٦١﴾

● क्रियामत के दिन मोमिन भुशालाल और मुनिरमीन बहलाल होंगे: सू-अ-३म आयत नंबर : १४ ता १६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जिस दिन क्रियामत परपा होगी, उस दिन लोग भुप्तलिक जमातों में बट जायेंगे, युनांचे जे लोग ईमान लाये थे और उनहोंने नेक अमल किये थे, उन को तो जन्नत में जैसे भुशियां दी जायेंगी, जे उनके चेहरों से इट पड रही होंगी और जिन लोगों ने कुद अपना लिया था और हमारी आयतों को और आभिरत का सामना करने को जुटलाया था, तो जैसे लोगों को अजाब में गिरफ्तार किया जायेगा.

﴿٦١﴾ فَسَبِّحْ لِلَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿٦٢﴾ وَكَانَ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿٦٣﴾

● सुबह व शाम और दोपहर में अल्लाह की तस्बीह करो: सू-अ-३म आयत नंबर : १७, १८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : लिहाजा अल्लाह की तस्बीह करो उस वक्त भी, जब तुम्हारे पास शाम आती है और उस वक्त भी जब तुम पर सुबह तुलूज होती है और उसी की इम्फ होती है आस्मानों में भी और जमीन में भी और सूज बलने के वक्त भी और उस वक्त भी जब तुम पर जुहर का वक्त आता है.

﴿٦٣﴾ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحِمَهُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَسْتَجِئُوا اللَّهَ فَنُفِثَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٥﴾

● मुसीबत के बाद राहत मिलने पर अल्लाह तआला को मत लूल जाओ: सू-अ-३म आयत नंबर : ३३, ३४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जब लोगों को कोई तकलीफ पहुंचती है, तो वो अपने परवरदिगार की तरफ मुतवज्जे हो कर उसी को पुकारते हैं, फिर जब वो अपनी तरफ से उन्हें किसी रहमत का मजा यभा देता है, तो उन में से कुछ लोग अयानक अपने परवरदिगार के साथ शिक करने लगते हैं ताके हमने उन्हें जे कुछ दिया था, उस की नाशुकी करें, अच्छा! कुछ मजे उडालो, फिर वो वक्त दूर नहीं जब तुम्हें सभ पता चल जायेगा.

﴿٦٥﴾ وَأَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٦﴾ قَاتِلُوا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ ۗ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّذِيئِرِّ يُدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦٧﴾

● रिश्तेदार, भिरकीन और मुसाफिरों पर अर्थ करना बडी ललाई है: सू-अ-३म आयत नंबर : ३७, ३८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : क्या उनहोंने यह नहीं देभा के अल्लाह जिस के लिये चालता है, रिज्ज कुशादा कर देता है और तंग कर देता है, इस में यकीन उन लोगों के लिये बडी निशानियां हैं जे ईमान लायेंगे, लिहाजा तुम रिश्तेदार को उन का हक दो और भिरकीन और मुसाफिर को भी, जे लोग अल्लाह की भुशानूदी चालते हैं, उन के लिये यह बेहतरे है और वही काम्याबी पाने वाले हैं.

﴿٦٧﴾ وَمَا آتَيْنَهُمْ مِّن رِّبَا يَزِيدُ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَزِيدُ فِي عِندِ اللَّهِ ۗ وَمَا آتَيْنَهُمْ مِّن زَكَاةٍ تَزِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٦٨﴾

● सूद से माल घटता है और जकात से माल बढ़ता है: सू-अ-३म आयत नंबर : ३९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : यह जे तुम सूद देते हो ताके वो लोगों के माल में शामिल हो कर बढ़ जाये, तो वो अल्लाह के नजदीक बढ़ता नहीं है और जे जकात तुम अल्लाह को भुश करने के इरादे से देते हो, तो उनही लोगों को कर्द गुना बढ़ा कर दिया जायेगा (यानी सूद लेने और देने से आभिर कर माल में जड़र कमी आयेगी और जकात देने से माल में भूषण परकत होगी).

﴿٦٨﴾ وَأُولَٰئِكَ فِي الْأَرْضِ لَشَجَرَةٌ أَقْلَامٌ ۗ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُمِنْ بَعْدِ سَبْعَةِ أَبْحُرٍ مَّا نَفَعَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٩﴾

● अल्लाह तआला की बडाई हमेशा बडी रहेगी: सू-अ-लुक्मान आयत नंबर : २७ में अल्लाह तआला का इरशाद है : जमीन में जितने दरभत हैं, अगर वो कलम बन जायें और ये जे समंदर है, इस के अलावा सात समंदर उस के साथ और मिल जायें (और वो रोशनाई बन कर अल्लाह की बडाई लियें) तब भी अल्लाह की बातें (और अल्लाह की तारीफ) अत्म नहीं होंगी, हकीकत ये है के अल्लाह हुकूमत का भी मालिक है और हिकमत का भी मालिक है.

﴿٦٩﴾ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَ عِلْمِ السَّاعَةِ ۗ وَيُنزِّلُ الْغَيْثَ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۗ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۗ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٧٠﴾

● पांच चीजों का यकीनी इल्म सिर्फ अल्लाह तआला ही को है: सू-अ-लुक्मान आयत नंबर : ३४ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : यकीनन (क्रियामत आने के) वक्त का इल्म अल्लाह ही के पास है, वही बारिश परसाता है और वही जन्नता है के मायों के पेट में क्या है और किसी शप्स को यह पता नहीं के वो कल क्या कमायेगा और न किसी शप्स को यह पता है के कौन सी जमीन में उसे मौत आयेगी, भेशक अल्लाह हर चीज का मुकम्मल इल्म रबने वाला, हर बात से पूरी तरह बाबबर है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २२

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ

● औरतें बिला मजबूरी और उजर के घर से आहर न निकलें: सू-अ-अहज्ज् आयत नंबर : ३३ में अल्लाह तआला ने इरमाया : (अ औरतों!) तुम अपने घरों में इरार के साथ रहो (यानी घरों के अंदर ही रहो) और (गैर मर्दों को अपना) बनाओ सिंधार दिभाती न इरिरो, जैसा के पेलली जलिलियत में (यानी नबी ﷺ को नबी बनाये जाने से पेलले के जमाने में) दिभाया जता था और नमाज काठम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल की इरमांभरदारी करो.

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَىٰ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا مُّبِينًا ۝

● अल्लाह व रसूल के हुक्म की ना-इरमानी करना भुली गुमराही है: सू-अ-अहज्ज् आयत नंबर : ३६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : ज्ब अल्लाह और उस का रसूल किसी काम का हुक्म दे दें, तो किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को अपने मुआमले (का इंसला करने) में कोरि ठभितयार बाकी नही है और जिस किसी ने अल्लाह और उस के रसूल की नाइरमानी की, वो भुली गुमराही में पड गया.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝

● अल्लाह का जिक्र सुबाह व शाम कररत से करो: सू-अ-अहज्ज् आयत नंबर : ४१ ता ४४ में अल्लाह तआला हुक्म इरमाते हैं : अे ठमान वालो! अल्लाह को भूभ कररत से याद करो और सुबाह व शाम उस की तस्बीह करो, वही है जे भूद ली तुम पर रहमत लेजता है और उस के इरिस्ते ली ताके वो तुमहें (जहालत की) अंधेरों से निकाल कर (धल्म की) रोशनी में ले आये और वो मोमिनों पर बहुत महेरमान है, जिस दिन मोमिन लोग अल्लाह से (जन्नत में) मिलेंगे, उस दिन उनका ठस्तिकबाल सलाम से होगा और अल्लाह ने उनके लिये बाठज्जत ठन्म तय्यार कर रभा है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ مَا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۚ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ فَذَرُوا عَظِيمًا ۝

● सखी पात केहन से आमाह अरथे और गुनाह माइ होंगे: सू-अ-अहज्ज् आयत नंबर : ६६ ता ७१ में अल्लाह तआला नसीहत इरमाता है: अे ठमान वालो! उन लोगों की तरह न बन जाना, जिनहोंने मूसा (عليه السلام) को सताया था, इर अल्लाह ने उनको उन पातों से बरी कर दिया, जे उन लोगों ने (मूसा के बारे में) कही थीं और वो अल्लाह के नजदीक भडे इत्मे वाले थे, अे ठमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी सखी पात कडा करो, अल्लाह तुमहारे इाठदे के लिये तुमहारे काम संवार देगा और तुमहारे गुनाहों को माइ कर देगा और जे शप्स अल्लाह और उस के रसूल की ठतायत करे, उसने वो काम्यापी हासिल करली जे जभरदस्त काम्यापी है.

قُلْ إِنْ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُكُمْ عِنْدَ تَأْتِي الْآمِنِ وَاعْمَلْ صَالِحًا ۚ قُلْ لَكُمْ لِهْمُ جَزَاءِ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝

● नेक काम करने वाले मोमिन अंदों के लिये जन्नत के आलाभानों में घर: सू-अ-सबा आयत नंबर : ३६, ३७ में अल्लाह तआला ठरशाह इरमाते हैं : (अे पैगम्बर!) केह दो के मेरा परवरदिगार जिस के लिये याहता है, रिज्क की जयादती कर देता है और (जिस के लिये याहता है) तंगी कर देता है लेकिन अक्सर लोग ठस पात को समजते नही हैं और न तुमहारे माल तुमहें अल्लाह से करीब करते हैं न तुमहारी औलाह, हां! मगर जे ठमान लाये और नेक अमल करे, तो जैसे लोगों को उन के अमल का दोहरा सवाभ मिलेगा और वो (जन्नत के) आलाभानों में येन से रहेंगे.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنَ الْمُضِلِّينَ ۝

● शैतान ठन्सान का दुश्मन है: सू-अ-इतिर आयत नंबर : ५, ६ में अल्लाह तआला का इरमान है : अे लोगो! यकीन जाने के अल्लाह का वअ्द सख्या है, लिहाजा तुमहें यह दुन्यवी जिदगी हरगिज धोके में न डाले और न अल्लाह के मुआमले में तुमहें वो (शैतान) धोके में डालने पाये जे बडा धोकेबाज है, यकीन जाने के शैतान तुमहारा दुश्मन है, ठस लिये उस को दुश्मन ही समजते रहो, वो तो अपने मानने वालों को जे दावत देता है, वो ठस लिये देता है ताके वो लोग जहन्नमियों में से हो जायें.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ إِنْ يَشَاءُ يُغْنِكُمْ وَيَأْتِي بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَلِكُ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝

● अल्लाह गनी है और तमाभ मज्जूक उस की मोहताज है: सू-अ-इतिर आयत नंबर : १५ ता १७ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अे लोगो! तुम सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह बेनियाज और हर तारीफ का मुस्तहिक है, अगर वो याहे तो तुम सब को भत्म कर दे और अेक नठ मज्जूक पुजूद में ले आये और यह काम अल्लाह के लिये कुछ ली मुश्किल नही है.

وَلَا تَرَوْا زُرَّارَةً وَرَأَىٰ آخَرَىٰ ۚ وَإِنْ تُلْعَقُ مَثْقَلَةً إِلَىٰ حِنْطِهَا لَا يَحْمِلُ مِنْهُ شَيْئًا ۚ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

● कियामत के दिन कोरि किसी के गुनाह का भोज नही उठायेगा: सू-अ-इतिर आयत नंबर : १८ में अल्लाह तआला ठरशाह इरमाते हैं : (कियामत के दिन) कोरि भोज उठाने वाला किसी दूसरे का भोज नही उठायेगा और जिस किसी पर बडा भोज लदा हुवा हो, वो अगर किसी और को उस के उठाने की दावत देगा, तो उस में से कुछ ली उठायी नही जायेगा, याहे वो (जिसे भोज उठाने की दावत दी गई थी) कोरि करीबी रिस्तेदार ही क्यूं न हो, (अे पैगम्बर!) तुम उन्ही लोगों को भबरदार कर सकते हो, जे अपने परवरदिगार को देभे भगैर उस से डरते हों और जिनहोंने नमाज काठम की हो और जे शप्स (ठमान लाकर) पाक होता है, वो अपने ही इाठदे के लिये पाक होता है और आभिर कार सब को अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २३

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَؤُا أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٤٠﴾ وَأَنْ اعْبُدُونِي ۗ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

● अल्लाह के अताये हुअे अहकाम पर चलना ही सीधा रास्ता है: सू-अे-यासीन आयत नंबर : ६०, ६१ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अे आहम के अेटो! कया मेंने तुभहें यल ताकीह नही कर ही थी के तुम शैतान की ँभाहत न करना, वो तुभहारा भुला दुश्मन है और तुम भेरी ँभाहत करना, यही सीधा रास्ता है.

أَلَيْسَ لَكُمْ نُحْتَمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيَهُمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٤٢﴾

● अहन के आजा क्रियामत के हिन गवाही हेंगे: सू-अे-यासीन आयत नंबर : ६५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : आअ (यानी क्रियामत के हिन) हम उन के भुँल पर ताला लगा हेंगे, उन के हाथ हम से आत करेंगे और उन के पांल उस की गवाही हेंगे जे कुअ वो क्रिया करते थे.

أَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْقَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۚ قَالَ مَنْ يُعْطِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٤٤﴾ قُلْ يُخْبِئُهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٤٥﴾

● अल्लाह के लिये ँभारा ज़िंदा करना कोर भुक्तिल काम नही: सू-अे-यासीन आयत नंबर : ७७ ता ७८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : कया ँन्सान ने यल नही ँभा के हमने उसे नुह्के से पैदा क्रिया था? क्रि अयानक वो भुललम भुल्ला अगडा करनेवाला अन गया, हमारे आरे में वो आते अनाता है और अूद अपनी पैदाअश को भुला भैठा है, केहता है के: ँन हहीयों को कौन ज़िंदागी ँगा अअ के वो गल चुकी होंगी? केह ँो के उनको वही ज़िंदागी ँगा अिस ने उनहें पेहली आर पैदा क्रिया था और वो (अल्लाह) पैदा करने का हर काम जानता है.

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٤٦﴾

● नेक औलाद की दुआ: सू-अे-साक़ात आयत नंबर : १०० में यल नसीहत की गह के हभेशा अल्लाह से नेक औलाद की दुआ करना आहिये : अअ हउरत ँभ्राहीम عليها السلام ने अल्लाह तआला से नेक औलाद की दुआ की तो अल्लाह तआला ने भुढापे के आलम में निलायत हसीन व अमील, होनहार इरूद ँस्माहल उन को अता इरमाया, अल्लाह तआला भुढापे में ली औलाद अता करने पर काहिर है, अेऔलाद लोगों को मायूस न हाना आहिये, अल्ले अल्लाह तआला से पूरी उम्मीद के साथ दुआ करते रेहना आहिये.

إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا أَيَّامَ الْإِحْسَابِ ﴿٤٧﴾

● गुम्राह लोगों के लिये सप्त अजाअ: सू-अे-साद आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला ँरशाद इरमाते हैं : यकीन रभो के जे लोग अल्लाह के (अताये हुअे) रास्ते से लटक जाते हैं, उनके लिये सप्त अजाअ है, कयू के उनहोंने हिसाअ के हिन को भुला हिया था.

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارُ ﴿٤٨﴾ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٤٩﴾

● दाह ँवत के हौरान तौहीद की भूअ ँवत ँे: सू-अे-साद आयत नंबर : ६५, ६६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (अे पैगअर!) केह ँो के में तो अेक अअरदार करने वाला हूँ और उस अल्लाह के सिवा कोर ँभाहत के लाठक नही जे अेक है, जे सअ पर गाहिये है, जे तमाम आस्मानों और अमीन और उनके हरभियान भौजूद हर थीअ का मालिक है, अिसका ँकतिहार सअ पर ँया हुवा है, जे अहुत अअशने वाला है.

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٥٠﴾

● ँभ्लास के साथ क्रिया हुवा अमल ही भकभूल है: सू-अे-अुमर आयत नंबर : २ में यल अहम आत अतार गह है के अमल की कुभूहियत का मदार ँभ्लास पर है: अल्लाह तआला ने कुअाने करीम की अहुत सी आयात में अंहों को अपनी ँभाहत ँभ्लास के साथ करने का हकम हिया है. ँभ्लास यल है के ँन्सान जे ली नेक काम करे सिई अल्लाह की रजामंदी के लिये करे, लोगों को हिआने के लिये या अपनी शोहरत के लिये न करे. आमाल में ँभ्लास को अडी अेहभियत हासिल है, किसी ली नेक अमल की कुभूहियत का मदार ँभ्लास पर है, ँभ्लास के अगैर किसी ली अमल का सवाअ नही भिलता. ँस लिये हमें हर काम को ँभ्लास के साथ करना आहिये.

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُبِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّیُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ

● तकलीफ में अंदा भुदा को याद करता है और नेअमत आने पर उसे भूल जाता है: सू-अे-अुमर आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला ँरशाद इरमाते हैं : अअ ँन्सान को कोर तकलीफ पहुंचती है, तो वो अपने रअ की तरफ मुतवअजे हो कर पुकारना शुरु कर ँेता है, क्रि अअ अल्लाह तआला ँन्सान को अपनी तरफ से कोर नेअमत अता इमा ँेता है, तो वो उस को भूल जाता है, अिसके लिये पेहले अल्लाह को पुकार रहा था और अल्लाह के साथ दूसरे माअहों को शरीक करने लगता है, अिसके नतीजे में दूसरों को ली अल्लाह के रास्ते से गुम्राह करना शुरु कर ँेता है.

قُلْ يٰۤأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۚ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٥١﴾

● सप्र करने वालों के लिये अे-हिसाअ अअ है: सू-अे-अुमर आयत नंबर : १० में अल्लाह तआला ँरशाद इरमाते हैं : (अे नभी!) केह ँो के अे भेरे ँमान वाले अंदा! अपने परवरहियार का भौफ हिल में रभो, भलार उनही की है अिनहोंने ँस दुआ में भलार की है और अल्लाह की अमीन अहुत वसीअ है, जे लोग सप्र से काम लेते हैं, उनका सवाअ उनहें अेहिसाअ हिया जअेगा.

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿٥٢﴾ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ هُوَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٣﴾

● ह्रिदायतयाक़ता लोगों की पेहयान: सू-अे-अुमर आयत नंबर : १७, १८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अिन लोगों ने तागत (शैतान और हर आतिल थीअ) की ँभाहत करने से परहेअ क्रिया और उनहोंने अल्लाह से हिल लगाया है, भुशाभअरी उनही के लिये है, लिलाअा भेरे उन अंहों को भुशी की अअर सुना ँो जे आत को गौर से सुनते हैं तो उस में जे अेहतरीन होती है, उस की अेरवी करते हैं, यही वो लोग हैं अिनहें अल्लाह ने ह्रिदायत ही है और यही हैं जे अकल वाले हैं.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २४

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۖ فَصِنِّهْتَ لِي فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهِ ۖ

● **हिदायत का झंझा और गुमराही का वप्नाल भुद धन्सान ही को होगी:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ४१ में अल्लाह तआला धरशाह इरमाते हैं: (अ पैगाम्बर!) हमने लोगों के झंझा के लिये तुम पर यह किताबे भरलक नाज़िल की है, अब जो शरफ़ सीधे रास्ते पर आ जायेगा, वो अपनी ही ललाई के लिये आयेगा और जो गुमराही धिन्तयार करेगा, वो अपनी गुमराही से अपना ही नुकसान करेगा.

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ وَبَدَّ اللَّهُ مَا لَهُمْ يَكُونُوا يَخْتَسِبُونَ ۖ ﴿٤٠﴾ وَبَدَّ اللَّهُ مَا كَسَبُوا وَكَانَ بِهِمْ مِمَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ ﴿٤١﴾ فَإِذَا مَسَّ الرَّسُولَ مِنْهُ دَعَاءٌ إِذْ كَانَ إِذَا حَوْلَهُ رُغْمَةٌ مِمَّنَّ قَالُوا إِنَّمَا أَوْتِيَتْهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۖ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ ﴿٤٢﴾

● **माल व दौलत हासिल होने पर अपना कमाल न समर्थे:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ४० ता ४६ में अल्लाह तआला ने इरमाया : जिन लोगों ने जुल्म किया है, अगर उन के पास वो सब कुछ हो जो जमीन में है और धस के साथ धतना ही और भी (हो), तो क्रियामत के दिन बदतरन अजाब से बचने के लिये वो सब इधिया के तौर पर देने लगेंगे और अल्लाह की तरफ़ से वो कुछ उनके सामने आ जायेगा, जिस का उन्हें गुमान भी नहीं था, उन्होंने ने जो कमाई की थी, उस की बुराईयां उन के सामने उल्टि हो जायेंगी और जिन बातों का वो मजाक उड़ाया करते थे, वो उन्हें चारों तरफ़ से घेर देंगी, फिर धन्सान (का लाल यह है के ज़ब उस) को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वो धमें पुकारता है, धस के बाद ज़ब धम उसे किसी नेअमृत से नवाजते हैं, तो वो केहता है के यह तो मुझे धुनर की वजह से मिली है, नहीं! बल्के ये आज़माईश है, लेकिन उन में से अकसर लोग नहीं जानते.

قُلْ يُعْبَادُوا الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۖ ﴿٤٣﴾

● **अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिये:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ५३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (अे नबी!) केह दो के अे भेरे वो बंदो! जिनहोंने अपनी जानों पर जयादती कर रभी है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो (सच्चे दिल से तौबा कर लो), यकीन जानो अल्लाह सारे के सारे गुनाह माफ़ कर देता है, यकीनन वो बहुत बपशने वाला, बडा महेरबान है.

وَآتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْإِسْلَامَ وَاسْلَمُوا ۗ وَآسَلِمُوا آلَ مَرْيَمَ إِذْ نَبَأْنَ بِهَا فَأَنصَرْنَاهُنَّ إِذْ يَبْلُغْنَ الْحَمْلَ وَتَمَرَّنَ فِيهِ ۖ فَتَذَرْنَهَا فِئْتَانِ يَمْشِيانِ صَوَابًا وَكُنَّ مِنَّا حَمِيمًا ۖ ﴿٤٤﴾

● **अजाब आने से पेहले तौबा कर लो:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ५४ में अल्लाह तआला धरशाह इरमाते हैं : तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जे हो जाओ और उस के इर्माबरदार बन जाओ, धस से पेहले के तुम्हारे पास अजाब आ पहुंचे, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी.

وَآتَيْنَا الْحَسَنَ مَا أَنْزَلَ الْبُيُوتَ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بِغَتَّةٍ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۖ ﴿٤٥﴾ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحَسِّرُنِي عَلَىٰ مَا فَتَرْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِن كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ۖ ﴿٤٦﴾ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۖ ﴿٤٧﴾ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۖ ﴿٤٨﴾

● **क्रियामत में अइसोस करने से कोई झंझा नहीं होगा:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ५५ ता ५८ में अल्लाह तआला ने इरमाया : तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास जो बेहतरीन बातें नाज़िल की गई हैं, उनकी पैरवी करो, कपल धस के के तुम पर अयानक अजाब आ जाये और तुम्हें पता भी न चले, कहीं अइसा न हो के किसी शरफ़ को यह केहना पडे के हाथ अइसोस भेरी धस कोताही पर, जो मैंने अल्लाह के मुआमले में की! और सच्ची बात यह है के मैं तो मजाक उड़ाने वालों में शामिल हो गया था, या कोई यह केह के अगर मुझे अल्लाह हिदायत देता, तो मैं भी मुत्तकी लोगों में शामिल होता, या ज़ब अजाब आओ से धेप ले, तो यह केह के काश मुझे अक मर्तबा वापस जाने का मौका मिल जाये, तो मैं नेक लोगों में शामिल हो जाऊँ!

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَجِقَ مِنَ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ ۚ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ۖ ﴿٤٩﴾ وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجَاءَتْ السَّجْدَةُ وَالْمُنُفِقُونَ كَالْحَصَىٰ ۖ ﴿٥٠﴾ وَوَقَيْتُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۖ ﴿٥١﴾

● **क्रियामत का मंजर:** सू-अ-जुमर आयत नंबर : ६८ ता ७० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : (क्रियामत के दिन) सू में डूंक मारी जायेगी, तमाम आरमान और जमीन वालों के लोश उड जायेंगे, मगर अल्लाह जिसको चाहे, फिर (कुछ मुदत के बाद) धस (सूर) में दूसरी मर्तबा डूंक मारी जायेगी, तो पल लर में सब के सब अडे हो जायेंगे और (चारों तरफ़) धेपने लगेंगे और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से यमक उठेगी और नाम-अे-आमाल रभ धिया जायेगा और पैगाम्बर और गवाह हाज़िर किये जायेंगे और लोगों के दरमियान ठीक ठीक इंसला क्रिया जायेगा और उन पर जरा जुल्म न होगा और हर शरफ़ को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला धिया जायेगा और अल्लाह सब कामों को भूब जानता है.

يَقُولُ إِنَّمَا ظَنَنْتُ أَنَّ السَّيِّئَةَ أَدْفَعُ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۖ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۖ ﴿٥٢﴾ وَمَا يُبَلِّغُهَا إِلَّا الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِزْبٍ عَظِيمٍ ۖ ﴿٥٣﴾

● **आभिरत का धर ही असल ठिकाना और रेलने की जगह है:** सू-अ-मोमिन आयत नंबर : ३६, ४० में अल्लाह तआला अक मोमिन की बात नकल करते हुवे धरशाह इरमाते हैं: अे भेरी कौम! ये दुनवी ज़िदगी तो अस थोडा सा मजा है और यकीन जानो के आभिरत ही रेलने बसने का असल धर है और जिस शरफ़ ने कोई बुराई की होगी, उसे उसी के बराबर बदला धिया जायेगा और जिसने नेक काम क्रिया होगा, चाहे वो मर्द हो या औरत, ज़ब के वो मोमिन हो, तो अइसे लोग जन्त में दाभिल होंगे, वहां उन्हें बे-हिसाब रिजक धिया जायेगा.

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۖ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۖ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۖ ﴿٥٤﴾ وَمَا يُبَلِّغُهَا إِلَّا الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِزْبٍ عَظِيمٍ ۖ ﴿٥٥﴾

● **दुश्मन के साथ अरध्या बरताव करने से वो अरध्या दोस्त बन जाता है:** सू-अ-हामीम सजदा आयत नंबर : ३४, ३५ में अल्लाह तआला धरशाह इरमाते हैं : नेकी और बुराई बराबर नहीं होती, तुम बुराई का मुकाबला अइसे तरीके से करो जो बेहतरीन हो, नतीज यह होगा के जिस के और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी थी, वो धेपते ही धेपते अइसा हो जायेगा जैसे वो जिगरी दोस्त हो और ये बात सिई उन्ही को अता होती है, जो सप्र से काम लेते हैं और ये बात उसी को अता होती है, जो अडे नसीबे वाला हो.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २५

وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٠﴾

● **कियामत में जालिमों का कोई मददगार न होगा:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जो जालिम लोग हैं, उनका न कोई रभवाला है और न कोई मददगार.

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٧١﴾

● **अल्लाह तआला अपने बंदों पर बडा महेरबान है:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : १९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महेरबान है, वो जिसको चाहता है, रिजक देता है और वही है जो कुव्वत का भी मालिक है, इकतिदार का भी मालिक है.

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَتَّ الْأَخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَتَّ الدُّنْيَا نُزِّلْهُ مِنْهَا ۚ وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ﴿٧٢﴾

● **दुन्या तलब करने वाले का आभिरत में कोई हिस्सा नहीं:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : २० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जो शप्स आभिरत की भेती चाहता हो, हम उस की भेती में और थडाका करेगे और जो शप्स (सिर्क) दुन्या की भेती चाहता हो, हम उसे उसी में से दे देंगे और (किर) आभिरत में उस का कोई हिस्सा नहीं होगा.

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتٍ الْجَنَّاتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٧٣﴾

● **कियामत में जालिम लोगों को अपनी बदन्यामाली का डर होगा:** सू-अ-शूरा आयत नंबर: २२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (उस वक्त) तुम उन जालिमों को देभोगे के उनहोंने जो कमाई की है, उस (के वबाल) से डरे हुये होंगे और वो (वबाल) उन पर पड कर रहेगा और जो लोग र्भमान लाये हैं और उनहोंने नेक अमल किये हैं, वो जन्नतों की कियारियों (भागों) में होंगे, उनहें अपने परवरदिगार के पास वो सब कुछ मिलेगा, जो वो चाहेंगे, वही बडा इजल है.

وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٧٤﴾

● **अल्लाह तआला नेकी की कदर करता है:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : २३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जो शप्स को र्भलाई करेगा, हम उस र्भलाई को और भूबसूरत बना देंगे, यकीन ज्ञानो अल्लाह बहुत बज्शने वाला, बडा कदर दां है.

إِنَّهُ عَلَيْهِمْ يَذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧٥﴾ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٧٦﴾

● **अल्लाह तआला तौबा करने पर गुनाह माफ़ करता है:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : २४, २५ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : यकीनन वल अल्लाह सीनों में छिपी हुई बातों तक को ज्ञानता है और वही है जो अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है और गुनाहों को माफ़ करता है और जो कुछ तुम करते हो, उस का पूरा र्भल रभता है.

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ

● **नेक काम करने वाले को अल्लाह तआला बढ कर सवाब देते हैं:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : २६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जो लोग र्भमान लाये हैं और जिनहोंने नेक अमल किये हैं, वो उन की दुआ सुनता है और उनहें अपने इजल से और जयादा देता है.

فَمَا أَوْتِيْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعٌ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٧٧﴾ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا عَصُوا هُمْ يَغْفُرُونَ ﴿٧٨﴾

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٧٩﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٨٠﴾

● **भोभिन बंदों की सिझात:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : ३६ ता ३९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: गर्ज तुभें जो को र्भ चीज दी गई है, वो दुन्यवी जिंदगी का सामान है और जो कुछ अल्लाह के पास है, वो कहीं बेहतर और हमेशा रहेने वाली है, उन लोगों के लिये जो र्भमान लाये हैं और अपने परवरदिगार पर लरोसा करते हैं और जो बडे बडे गुनाहों से बचते हैं और जब उन को गुरसा आता है, तो वो माफ़ कर देते हैं और जिनहोंने अपने परवरदिगार की बात मानी है और नमाज का र्भम की है और उन के मुआमलात आपस के मश्वरे से तै होते हैं और हमने उनहें जो रिजक दिया है, उस में से वो (नेकी के कामों में) अर्थ करते हैं और जब उन पर को र्भ जयादाती होती है, तो वो अपना बचाओ करते हैं.

وَلَمَنْ اتَّخَذَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٨٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ ۚ

ذَلِكَ لِمَنْ عَزَمِ الْأُمُورَ ﴿٨٣﴾

● **नाहक जुल्म करने वालों के लिये दर्दनाक अजाब है:** सू-अ-शूरा आयत नंबर : ४१ ता ४३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : जो शप्स अपने र्भपर जुल्म होने के बाद (बराबर का) बदन्या ले, तो जैसे लोगों पर को र्भ र्भजाम नहीं है, र्भजाम तो उन पर है जो र्भमीन में नाहक जुल्म करते हैं, जैसे लोगों के लिये दर्दनाक अजाब है और यह र्भकीकत है के जो को र्भ सब से काम ले और माफ़ कर दे, तो यह बडी हिम्मत की बात है.

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إناثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٨٤﴾ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإناثًا ۚ وَيَجْعَلُ لِمَنْ يَشَاءُ عَاقِبَةً ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٨٥﴾

● **औलाद देना; अल्लाह ही के हाथ में है :** सू-अ-शूरा आयत नंबर : ४९, ५० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : सारे आरमानों और र्भमीन की सल्तनत अल्लाह ही की है, वो जो चाहता है, पैदा करता है, वो जिस को चाहता है, लडकियां देता है और जिसको चाहता है, लडके देता है, या फिर उनको मिला-जुला कर लडके भी देता है और लडकियां भी और जिस को चाहता है, बांज बना देता है, यकीनन वो र्भल का भी मालिक है, कुदरत का भी मालिक है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २६

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَنَانُهُ وَقُضِيَ لَهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۗ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ اَشْدَدًا ۖ وَبَلَغَ اَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِي اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى الْوَالِدَيْنِ ۗ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ ۗ وَاَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۗ اِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى الْكَرِيمِ ۙ ﴿١٠٠﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اِحْسٰنًا مَّا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سِيْئَاتِهِمْ فِيْ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۗ وَغَدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾

● **वालिदैन के साथ अच्छे बरताव पर गुनाह माफ़ होते हैं:** सूरा-अ-अहक़ाफ़ आयत नंबर : १५, १६ में अल्लाह तआला ने इरमाया: हमने इन्सान को अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करने का हुक़्म दिया है, उस की माँ ने ज़री मशक़्कत से उसे (पेट में) उठाये रखा और ज़री मशक़्कत से उस को जन्मा और उस को उठाये रखने और उस के दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने होती है, यहाँ तक के जब वो अपनी ज़वानी को पलुंय गया और चालीस साल की उम्र को पलुंय तो वो केलता है : या रब! मुझे तौफ़ीक़ दीजिये के मैं आपकी इस नेअमत् का शुक्र अदा कऊँ, जो आपने मुझे और मेरे माँ आप को अता इरमाई और ऐसे नेक अमल कऊँ, जिन से आप राज़ी हो ज़रों और मेरे (नफ़ा के) लिये मेरी औलाद में ली सलाहियत पैदा कर दीजिये (यानी उन औलाद से मुझे दुन्या और आभिरत में येन व सुकून हासिल हो), मैं आप के सामने तौबा करता हूँ और मैं इर्माबरदारों में शामिल हूँ, यह वो लोग हैं जिन से हम उनके बेहतरीन आमाह कुबूल करेंगे और उन की बुराईयों को माफ़ करेंगे (जिस के नतीजे में) वो जन्नत वालों में शामिल होंगे, उस सच्ये वअद्दे की वजह से जो उन से किया जाता था.

وَإِن طَافْتُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۗ فَإِن بَعَثَ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْآخَرَىٰ فَتَقَاتِلُوا الَّتِي تَبَغَىٰ حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۗ فَإِن فَاءَتْ فَاصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿١٠٢﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٠٣﴾

● **मुसलमानों की दो जमातों में टकराव के वक़्त उन में सुलह कराओ:** सूरा-अ-हजुरात आयत नंबर : ९, १० में अल्लाह तआला इरशाद इरमाते हैं : अगर मुसलमानों की दो जमातें आपस में लड पड़ें, तो उन के दरमियान सुलह कराओ, फिर अगर उन में से अक जमात दूसरे के साथ जयादती करे, तो उस जमात से लडो जो जयादती कर रही हो, यहाँ तक के वो अल्लाह के हुक़्म की तरफ़ लौट आये, युनांचे अगर वो लौट आये, तो उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ सुलह करा दो और हर मुआमले में इन्साफ़ से काम लिया करो, बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है, हकीकत तो यह है के तमाम मुसलमान भाई भाई हैं, इस लिये अपने दो भाईयों के दरमियान ताल्लुक़ात अच्छे बनाओ, ताके तुम्हारे साथ रहमत का मुआमला किया जाये.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَر قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ قَوْمٌ عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِنْ نِسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۗ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِاللِّقَابِ ۗ بئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۗ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١٠٤﴾

● **दूसरों का मज़ाक़ मत उड़ाओ और न बुरे अल्काब से पुकारो:** सूरा-अ-हजुरात आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला ने इरशाद इरमाया: ये इर्मान वालो! न तो मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाओ, हो सकता है के वो (जिनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो) भूढ़ उन (मज़ाक़ उड़ाने वालों) से बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाओ, हो सकता है के वो (जिन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है) भूढ़ उन (मज़ाक़ उड़ाने वालियों) से बेहतर हों और तुम अक दूसरे को ताना न दिया करो और न अक दूसरे को बुरे अल्काब से पुकारो, इर्मान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना (यानी किसी मुसलमान के साथ यह नाम लगना के ये गुनाहगार है) बहुत बुरी बात है और जो लोग इन बातों से न ड़कें, तो वो ज़ालिम लोग हैं.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ ۗ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا ۗ وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۗ

● **अहगुमानी से बचो:** सूरा-अ-हजुरात आयत नंबर : १२ में अल्लाह तआला इरमाता है : ये इर्मान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, आज गुमान गुनाह होते हैं और किसी (का औब तलाश करने के लिये उस) की ज़सूसी न करो और अक दूसरे की गीबत न करो.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۗ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٠٥﴾

● **इअ व इज्जत की चीज़ भानदान नहीँ; तकवा है:** सूरा-अ-हजुरात आयत नंबर : १३ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: ये लोगो! हकीकत यह है के हमने तुम सभ को अक मर्द और अक औरत से पैदा किया है और तुम्हें मुफ़्तलिफ़ कौमों और भानदानों में इस लिये तकसीम किया है ताके तुम अक दूसरे की पेहचान कर सको, हर हकीकत अल्लाह के नज़दीक तुम में सभ से जयादा इज्जत वाला वो है, जो तुम में सभ से जयादा मुत्तकी हो, यकीन रखो के अल्लाह सभ कुछ ज़ानने वाला, हर चीज़ से बाबबर है.

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلْنَاهُ مَأْكُونًا ۖ وَسَوَّيْنَاهُ سَوَاءً ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٠٦﴾ اِذْ يَتَلَفَّى الصُّبُرُ الَّذِيْنَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٠٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اَلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَابِدٌ ﴿١٠٨﴾ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ ذٰلِكَ مَا كُنْتُمْ مِنْهُ تَحِيدُونَ ﴿١٠٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۗ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعْدِ ﴿١١٠﴾ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿١١١﴾

● **हर इन्सान के साथ नेकी और बुराई लिखने वाले दो इरिशते मौजूद होते हैं:** सूरा-अ-क़ाफ़ आयत नंबर : १६ ता २१ में अल्लाह तआला ने इरमाया: हकीकत यह है के हमने इन्सान को पैदा किया है और उस के हिल में जो भयालात आते हैं, उनको हम भूब ज़ानते हैं और हम उस की शेररग (गर्दन की नस) से ली जयादा उस के करीब हैं, उस वक़्त ली जब (आमाह को) लिखने वाले दो इरिशते लिख रहे होते हैं, अक दाअें ज़ानिब और दूसरा बाअें ज़ानिब पैदा होता है, इन्सान को ह लज़्ज ज़बान से निकाल नहीं पाता मगर इस पर अक निगरां मुक़रर होता है, हर वक़्त (लिखने के लिये) तथ्यार और मौत की सपती सचमुच आने ही वाली है, (ये इन्सान) ये वो चीज़ है जिस से तू भागता था और सूरा डूँक़ ज़ाने वाला है, यह वो दिन होगा, जिस से उराया जाता था और हर शप्स (उस दिन) इस तरह आयेगा के उस के साथ अक हाँकने वाला होगा और अक गवाही देने वाला.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २७

وَذِكْرُ قَانَ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝

● पैदाईश का मकसद अल्लाह की ध्यादत और उस की मअरिफत है: सू-अ-अरियात आयत नंबर : ५५ ता ५८ में अल्लाह तआला ने इरमाया : नसीहत करते रहे, क्यूं के नसीहत धमान लाने वालों को इधदे देती है और मैंने जिन्नात और इन्सानों को इस के सिवा किसी और काम के लिये पैदा नहीं किया के वो मेरी ध्यादत करें (और मेरे रब होने को जाने), मैं उन से किसी किसम का रिजक नहीं चाहता और न ये चाहता हूँ के वो मुझे भिलायें, अल्लाह तआला तो भूद ही रज्जक है, अबरदस्त ताकत वाला है.

إِنَّ الْمُبْتَلِينَ فِي جَنَّتٍ وَعَنِيمٍ ۝ فَكَيْهِنُ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۝ وَوَقَّهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ كَلُوا وَشَرِبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ مَتَّكِبِينَ عَلَى سُرُرٍ مَصْفُوفَةٍ ۝ وَرَوَّحْنَهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلْتَنَّهُمْ مِنْ شَيْءٍ عِوَابِهَا كَسَبَ رَهِيئًا ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا فَسَمَّاكُهَا شَتْمٌ يُذَمُّونَ ۝ يَتَنَزَّلُونَ فِيهَا كَأَسَا لَأَعُوذُ فِيهَا وَلَا تَأْتِيهِمْ ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَكْنُونٌ ۝ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلَ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمُ وَلَوْ أَنَّكَ مِنَ قَبْلِ نَدْعُوهُ ۝ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝

● मुत्तकी लोग जन्नत में अैश के साथ रहेंगे: सू-अ-तूर आयत नंबर : १७ ता २८ में अल्लाह तआला इरमाता है : मुत्तकी लोग बेशक भागों और नेअमतों में होंगे, वो लुत्फ उठा रहे होंगे, इस वजह से के उनके परवरदिगार ने उन्हें नवाजा और उन्हें दोज़भ के अजाब से बचाया, (उन से कदा जअेगा के) भूभ मजे से भाओ पियो, उन आमाल के बदले में जे तुम किया करते थे, वो अेक लाइन से लगे हुअे तपत्तों पर तकिया लगाये हुअे होंगे, और हम बडी बडी आँभों वाली हूरों से उनकी शादी कर देंगे और जे लोग धमान लाये हैं और उनकी औलाद ने भी धमान में उनकी पैरवी की है, तो उनकी औलाद को हम उनही के साथ शामिल कर देंगे और उनके अमल में से किसी चीज की कमी नहीं करेंगे और (काइरों में से) हर शप्स अपने आमाल में गिरइतार रहेगा और हम उन्हें (यानी उन जन्नत वालों को) अेक के बाद अेक इल और गोस्त जे भी उनका हिल चालेगा देते चले जअेंगे, वहां वो अैसे शराभ के ज़म पर (हिल लगी करते हुअे) छीना-अपटी कर रहे होंगे, जिस में न कोई बेलूदगी होगी और न कोई गुनाह होगा और उन के आस पास वो नौजवान फिर रहे होंगे जे उनही (की भिदमत) के लिये पास होंगे, (वो) अैसे (भूभसूरत लोगे) जैसे छुपा कर रभे हुअे मोती और वो अेक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जे हो कर हलात पूछेंगे, कहेंगे के हम जभ अपने घर वालों (यानी दुन्या) में थे, तो उरे सहमे रहते थे, आभिर अल्लाह ने हम पर बडा अेहसान इरमाया और हमें दोज़भ के अजाब से बचा लिया, हम इस से पेहले उस (अल्लाह) से दुआअें मांगा करते थे (के हम को दोज़भ के अजाब से बचा), इकीकत ये है के वही (अल्लाह) बडा अेहसान करने वाला, बहोत महेरबान है.

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكُهُونَ ۝ إِنَّا لَمَغْرُمُونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝ ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجْحًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۝ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۝ ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَمَتَاعًا لِلْمُقَرَّبِينَ ۝

● भेती, पानी और आग अल्लाह तआला की बडी नेअमतें हैं: सू-अ-वाकिया आयत नंबर : ६३ ता ७३ में अल्लाह तआला इरमाता है: अरथा यह बताओ के जे कुछ तुम जमीन में बोते हो, क्या उसे तुम उगाते हो, या उगाने वाले हम हैं? अगर हम चालें तो उसे यूरा यूरा कर डालें, जिस पर तुम ताज्जुब करते रहे जअे के हम तो कर्ज़दार रहे गअे बले हम भिलकुल ही मइज़म रहे गअे, अरथा ये बताओ के ये पानी जे तुम पीते हो, क्या उसे बादलों से तुमने उतारा है, या उतारने वाले हम हैं? अगर हम चालें तो उसे कडवा बना कर रभ दें, फिर तुम क्यूं शुक्र अदा नहीं करते? अरथा ये बताओ के ये आग जे तुम जलाते हो, क्या उस का दरभत तुमने पैदा किया है, या पैदा करने वाले हम हैं? हमने ही इस को नसीहत हासिल करने की चीज और मुसाफ़िरों के लिये इधदे की चीज बनाया है.

إِعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۝ كَيْتَلِبُ عَلَيْهَا غَيْثٌ عَجَبٌ أَلْقَاهُ رَبُّهَا ثُمَّ يَخْتِجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ۝ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَمَتَاعٌ الْعُورُ ۝ سَابِقَةٌ إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۝ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۝ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۝ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

● आस्मान व जमीन से भी यौडी जन्नत हासिल करने के लिये जल्दी करो: सू-अ-हदीद आयत नंबर : २०, २१ में अल्लाह तआला इरशाद इरमाता है: भूभ समज लो के इस दुन्या वाली जिंदगी की इकीकत अस यह है के वो नाम है भेल कूद का, ज़ाहिरि सज्जवट का, तुमहारे अेक दूसरे पर इभ्र जताने का और माल और औलाद में अेक दूसरे से बढने की कोशिश करने का, उस की मिसाल अेसी है जैसे अेक बारिश जिस से उगने वाली चीजें किसानों को बहुत अरथी लगती हैं, फिर वो अपना ओर दिभाती है फिर तुम उस को देभते हो के पीली पड गइ है, फिर वो यूरा यूरा हो जाती है और आभिरत में (अेक तो) सभ्त अजाब है और (दूसरे) अल्लाह की तरफ़ से बभिशश है और भूभनूदी और दुन्या वाली जिंदगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है, लिहाज़ा दौडो अपने परवरदिगार की बभिशश की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी यौडाई सारे आस्मानों और जमीन की यौडाई जैसी है, ये उन लोगों के लिये तय्यार की गइ है जे अल्लाह और उस के रसूलों पर धमान लाये हैं, यह अल्लाह का इजल है, वो जिसको चाहता है, देता है और अल्लाह बडे इजल वाला है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २८

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا لِبِئْسَ مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۗ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَافْتَشِرُوا

● मजलिस के आदाय का अयाल रभो: सू-अ-मुजदला आयत नंबर: ११ में अल्लाह तआला मजलिस का अदय अिक करते हुअे इरमाते हैं: अे धमान वालो! जब तुम से कहा जाअे के मजलिसों में दूसरों के लिये गु-नगश पैदा करो (जिस में आने वालों को भी जगल मिल जाअे), तो गु-नगश पैदा कर दिया करो, (आनेवाले को जगल दे दिया करो) अल्लाह तुम्हारे लिये (जन्नत में) वुस्वत पैदा करेगा और जब कहा जाअे के उठ जाओ, तो उठ जाया करो.

وَمَنْ يُؤْتِكُمْ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

● अुषल व कंबूसी से अयने वाला काम्याअ है: सू-अ-इर आयात नंबर : ९ में अल्लाह तआला कंबूसी की अुराई करते हुअे इरमाते हैं : अे लोग अपनी तभीयत की कंबूसी से मलकूअ हो जाअें, वही हैं अे इलाह पाने वाले हैं.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝

● अल्लाह को अूल कर अिदगी न गुआरो: सू-अ-इर आयात नंबर : १८, १९ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अे धमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और हर शअ्स देअलाल ले के कल (कियामत) के वास्ते उस ने क्या (अपीरा) लेअ (यानी नेक आमाल में कोशिश करो अे के आअिरत का अपीरा है) और अल्लाह से डरते रहो, अेशक अल्लाह तआला को तुम्हारे सअ आमाल की अअर है, तुम उन लोगों की तरल मत हो जाना अे अल्लाह को अूल भैठे थे, तो अल्लाह ने उनहें अूअ अपने आपसे गाकिल कर दिया, वही लोग हैं अे नाइरमान हैं.

لَنْ تَنْفَعَكُم أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ يُفَصِّلُ بَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

● कियामत के दिन रिश्ता नाता काम नहीं आअेगा: सू-अ-मुतलिनल आयत नंबर : ३ में अल्लाह तआला का इरमान है : तुम्हारे रिश्तेदार और औलाद कियामत के दिन काम न आवेंगे, अुदा ही तुम्हारे दरमियांन इंसला करेगा और अल्लाह तुम्हारे सअ आमाल को अूल देअता है.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِمَّا تَأْتُوا مَالَ تَتَلَوْنَهَا وَلَا تَتَلَوْنَهَا ۗ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝

● दाई को अुद ली अमल करना आलिये: सू-अ-सइ आयत नंबर : २, ३ में अल्लाह तआला लिदायत देते हैं: अे धमान वालो! अैसी आत अुं केलते हो अे करते नहीं हो, अुदा के नअदीक ये आत अलुत नाराअी की है के अैसी आत कलो अे करो नहीं.

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَتَّقُونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مَلَقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

● मौत से कितना ही दूर आगो, वो आकर ही रहेगी: सू-अ-जुमा आयत नंबर : ८ में अल्लाह तआला का इरशाद है : अे नभी आप केल दो! जिस मौत से तुम आगते हो, वो तुमको पकड कर रहेगी, किर तुम्हें उस (अल्लाह) की तरइ लौटाया जाअेगा, जिसे तमाम पोशीदा और अुली लुई आतों का पूरा इल्म है, किर वो तुम्हें अताअेगा के तुम क्या कुअ किया करते थे.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

● जब जुमा की अआन हो जाअे, तो कारोआर अंद कर दो: सू-अ-जुमा आयत नंबर : ९ में अल्लाह तआला जुमा की नमाअ के मुतात्विक लुकम अयान करते हुअे इरमाते हैं: अे धमान वालो! जब जुमा के रोज नमाअ के लिये अआन कही जाया करे, तो तुम अल्लाह की याद की तरइ अल पडा करो और अरीद व इरोअत छोड दिया करो, यल तुम्हारे लिये अयादा अेअतर है अगर तुम को कुअ समज हो.

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

● जुमा की नमाअ पढने के आद कारोआर कर सकते हैं: सू-अ-जुमा आयत नंबर : १० में अल्लाह तआला ताअिरों को लिदायत देते हैं: जब (जुमा की) नमाअ पूरी हो अुके, तो तुम अमीन में अलो किरों और अुदा की रोजी तलाश करो और अल्लाह को कस्रत से याद करते रहो ताके तुम कामयाअ हो.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتْلُوا آيَاتِهَا لَعَلَّكُمْ أَتَقُونَ ۗ وَلَا تَقُولُوا بِغَيْرِ الْحَقِّ حَسْرَةً ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ فَأَصَدَّقَ وَأَكُن مِنَ الْمَصْلِحِينَ ۝ وَلَنْ يُؤَخَّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

● अल्लाह के दिअे हुअे रिअक में से मौत आने से अेलेले अर्थ कर लो: सू-अ-मुनाकिकून आयत नंबर : १०, ११ में अल्लाह तआला ये नसीलत करते हैं : अे धमान वालो! तुम्हारी दौलत और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से गाकिल न करने पाअें और अे लोग अैसा करेंगे, वो अडे नुक्सान का मुआमला करने वाले होंगे और हमने तुम्हें अे रिअक दिया है, इस में से अर्थ करो, इस से अेलेले के तुम में से किसी के पास मौत आ जाअे तो वो यल कले के अे अेरे अरवरदिगार! तूने मुअे थोडी देर के लिये अोललत कूं न दे दी के मैं अूल सदका करता और नेक लोगों में शाअिल हो जाता और जब किसी शअ्स का मुअअयन वकत आ जाअेगा तो अल्लाह उसे हरगिअ अोललत नहीं देगा और अे कुअ तुम करते हो अल्लाह इस से पूरी तरल आअअर है.

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوْرَكُمْ ۗ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْكِنُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝

● इन्सान काईनात की सअसे अूलसूरत मअलकू है: सू-अ-तगाअुन आयत नंबर : ३, ४ में अल्लाह तआला अयान करते हैं: अल्लाह तआला ने आस्मानों और अमीन को अरलक पैदा किया है और तुम्हारी सूरतें अनाई हैं और तुम्हारी सूरतें अअधी अनाई हैं और उसी की तरइ आअिर कार पलट कर जाना है, आस्मानों और अमीन में अे कुअ है वो उसे जानता है और अे कुअ तुम अुप कर करते हो और अे कुअ अुल्लम अुल्ला करते हो, उस का ली उसे पूरा इल्म है और अल्लाह दिलों की आतों तक का अूल जानने वाला है.

مَا آصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

● हर मुसीअत अल्लाह के लुकम से आती है: सू-अ-तगाअुन आयत नंबर : ११ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: कोई मुसीअत अल्लाह के लुकम के अगैर नहीं आती और अे कोई अल्लाह पर धमान लाता है, वो उस के दिल को (सअ की) राल दिआता है और अल्लाह हर अीअ को अूल जानने वाला है.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर २९

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٠﴾

● **दुन्या आज़माईश और आभिरत बढले की जगह है:** सू-अ-मुल्क आयत नंबर : २ में यह सभक दिया गया है के दुन्या धमिलान की जगह है : अल्लाह तआला ने बंदों का धमिलान लेने के लिये दुन्या में मौत व हयात का सिलसिला जारी इरमाया है, जो शप्स अच्छे आमााल करेगा, वो इस धमिलान में काम्याल होगा और जो बुरे आमााल करेगा वो नाकाम होगा और वहां की नाकामी में ही हमेशा हमेशा की नाकामी और इस्वाह है, लिहाज़ा धन्सान को चालिये के अपनी जिंदगी को गनीमत जान कर इस धमिलान में काम्याली के लिये जयादा से जयादा नेक काम करने की कोशिश करे.

إِنْ جَاءَ اللَّهُ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۚ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

● **मौत का तै शूदा वक्त कोई टाल नहीं सकता:** सू-अ-नूह आयत नंबर : ४ में अल्लाह तआला का इरमान है: भेशक जब अल्लाह का मुकरर किया हुवा (मौत का) वक्त आ जाता है तो फिर वो मुअज्जर नहीं होता (यानी उसे रोका नहीं जा सकता), काश के तुम समजने वाले होते.

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠٢﴾ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ﴿١٠٣﴾ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَيُبَيِّنْ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٠٤﴾

● **तौबा व धरिगहार करने से अल्लाह तआला भूब नेअमते देते हैं:** सू-अ-नूह आयत नंबर : १० ता १२ में अल्लाह तआला हज़रत नूह की बात नकल करते हुअे धरशाद इरमाते हैं: अपने परवरदिगार से माई मांगो, यकीन जानो वो बहुत अज्जने वाला है, वो तुम पर आस्मान से भूब बारिशों बरसायेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा और तुम्हारे लिये बागात पैदा करेगा और तुम्हारे लिये नहरों का धमिलान करेगा.

وَادُّرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ﴿١٠٥﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿١٠٦﴾

● **पाबंदी के साथ अल्लाह की ध्यादत और जिक् करो:** सू-अ-मुज्जिमिल आयत नंबर : ८, ९ में अल्लाह तआला का इरमान है : अपने परवरदिगार के नाम का जिक् करो और सभ से अलग हो कर पूरे के पूरे उसी के हो के रहो (वही अल्लाह है जो) मस्कि व मस्बि का मातिक है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इस लिये उसी को काम बनाने वाला समजो.

وَتَبَايَكَ فَطَهَّرْ ﴿١٠٧﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿١٠٨﴾

● **जाहिरी व आतिनी गंदगियों से दूर रहो:** सू-अ-मुदस्सिर आयत नंबर : ४, ५ में अल्लाह तआला का धरशाद है : अपने कपड़ों को पाक रभो और गंदगी से दूर रहो. (भुलासा यह है के अपने आप को गुनाह और मअसियत से बचाये रभें और पाक साफ रहें)

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الْمَرْءَاتُ ﴿١٠٩﴾ وَقِيلَ لهنَّ رَاقٍ ﴿١١٠﴾ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿١١١﴾ وَالتَّقَفَّتِ السَّمَاءُ بِالسَّاقِ ﴿١١٢﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقِ ﴿١١٣﴾

● **अेक दिन भुदा के पास जाना ही है:** सू-अ-कियामल आयत नंबर : २६ ता ३० में अल्लाह तआला इरमाते हैं : अबरदार! जब जान हलक तक पहुंच जायेगी और कडा जायेगा के हे कोई जड इंक करने वाला? और धन्सान समज जायेगा बुदाई का वक्त आ गया और (अेक) पिंडली (दूसरी) पिंडली से लिपट जायेगी, तो उस दिन तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ रवानगी होगी.

إِنَّ الْأَكْرِبَ إِذْ يَبْسُزُ ﴿١١٤﴾ وَمَنْ كَأْسٍ كَانَ مَرْجُوهًا كَفُورًا ﴿١١٥﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿١١٦﴾

● **जन्तियों को कडूर मिलाई हुई पाकीजा शराब पिलाई जायेगी:** सू-अ-दहर आयत नंबर : ५, ६ में अल्लाह तआला भूश-अबरी सुनाते हुअे इरमाते हैं : भेशक नेक लोग (जन्त में) जैसे जाम से मशइबात पिअेंगे जिस में कडूर की मिलावट होगी, ये मशइबात अेक जैसे यश्मे के होंगे, जिस से भुदा के भास अंदे पिअेंगे, वो उसे (जहां चालेंगे) आसानी से बहा कर ले जायेंगे.

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ﴿١١٧﴾ مُتَشَكِّينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَابِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١١٨﴾ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلِّكَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ﴿١١٩﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانْبِيَاءٍ مِّنْ قِبْطٍ وَأَكُوبَ كَانَتْ قَوَارِيرًا ﴿١٢٠﴾ قَوَارِيرًا مِّنْ فِضَّةٍ قَدْرُوهَا تَقْدِيرًا ﴿١٢١﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مَرْجُوهًا زَنْجَبِيلًا ﴿١٢٢﴾ عَيْنًا فِيهَا تُسْقَىٰ سَلْسَبِيلًا ﴿١٢٣﴾ وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ وَلَدًا مِّمَّكَدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّامْنُونًا ﴿١٢٤﴾ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمَلَكًا كَبِيرًا ﴿١٢٥﴾ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُدُوسٌ خُضْرٌ مُّسْتَبْرَقٌ ۚ وَخُلُقُوا نَارًا مِّنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿١٢٦﴾ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ مَشْكُورًا ﴿١٢٧﴾

● **जन्त की नेअमते:** सू-अ-दहर आयत नंबर : १२ ता २२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं : उनहोंने जो सभ से काम लिया था, उस के बढले (अल्लाह तआला) उनहें जन्त और रेशमी लिबास अता इरमायेगा, वो उन बागों में आराम देने वाले तपतों पर तकिया लगाये बेंहे होंगे, जहां न धूप की गर्मी देभेंगे और न कडाके की सर्दी और हललत ये होगी के इन बागों के साथे उन पर बुके हुअे होंगे और उन के इल मुकम्मल तौर से उन के डामू में कर दिये जायेंगे और उन के पास चांदी के बर्तन लाये जायेंगे और वो प्याले लाये जायेंगे जो शीशे के होंगे, शीशे ली चांदी के जिन्हें लरने वालों ने मुनासिब अंदाज में लरा होगा और वहां उन को शराब का ऐसा जाम पिलाया जायेगा, जिस में सौंद मिला हुवा होगा (और ये जाम) वहां के जैसे यश्मे से (होगा) जिस का नाम सलसलील है, उनके सामने जैसे लडके धूम रहे होंगे जो हमेशा लडके ही रहेंगे, जब तुम उनहें देभोगे, तो यह मलसूस करोगे के वो मोती हैं जो बिभेर दिये गये हैं और जब तुम वो जगह देभोगे, तो तुम्हें नेअमतों की अेक दुन्या और अेक बडी सलतनत नजर आयेगी, उन के ठीपर बारीक रेशम का सभ्ज लिबास और दबीज (मोटे) रेशम के कपडे ली होंगे और उनहें चांदी के कंगन पहनाने जायेंगे और उनका परवरदिगार उनहें निहायत पाकीजा शराब पिलायेगा (और इरमायेगा के) ये है तुम्हारा धन्आम! और तुम ने (दुन्या में) जो मेहनत की थी, उस की पूरी कदरदानी की गई है.

وَادُّرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿١٢٨﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿١٢٩﴾

● **सुबह व शाम अल्लाह का जिक् किया करो:** सू-अ-दहर आयत नंबर : २५, २६ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अपने परवरदिगार का सुबह व शाम जिक् किया करो और कुछ रात को ली उस के आगे सजदे किया करो और रात के बडे हिस्से में उस की तस्बीह करो.

कुर्आन का पैगाम । पारा नंबर 30

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ عَلَيْكَ قُرْآنًا فَارْتَبِطْ بِهِ وَلَا يُغْنِيَنَّكَ كُفْرُكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ يَقُولُ الْكَافِرُ إِنِّي كُنْتُ تَرَاهُ ۗ

● **हर अरब्या व पुरा अमल आभिरत में सामने होगा:** सू-अ-नबा आयत नंबर : ४० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: (लोगो!) हमने तुम को नऊदीक आने वाले अऊाब से उरा दिया है (जे के जैसे दिन में वाके होने वाला है) जिस दिन हर शप्स उन आमाल को (अपने सामने लाजिर) देभ लेगा जे उसने अपने हाथों किये होंगे और काफिर (अइसोस की वजह से) कलेगा के काश में भिड़ी हो जाता (ताके सजा से बच जाता).

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاعِقَةُ قُلُوبُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَرْعَبَةً ۖ وَخُوفٌ يُغْنِيهِمْ ۖ وَخُوفٌ يُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمُؤْمِنِينَ كَفَرُوكَافِرِينَ ۚ

● **कियामत के दिन कोई किसी की मदद नहीं करेगा:** सू-अ-अबस आयत नंबर : ३३ ता ४२ में कियामत का एक भौकनाक मंजर बयान करते हुअे अल्लाह तआला इरमाते हैं: जब कानों को भेहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा (यानी कियामत का दिन आ जायेगा) जिस रोज आदमी अपने भाई से और अपनी माँ से और अपने बाप से और अपनी बीवी से और अपने बेटों से भागेगा (यानी कोई किसी की मदद नहीं करेगा) क्यूं के उनमें हर एक को उस दिन अपनी ऐसी झिंक पडी होगी के उसे दूसरों का लोश नहीं होगा और अलुत से चेहरे उस रोज (ईमान की वजह से) थमकते दमकते होंगे, हंसते, पुरशी मनाते हुअे और अलुत से चेहरों पर उस रोज भाक (भिड़ी) पडी होगी, स्याही (कालिक) ने उन्हें ढांप रभा होगा, यह वही लोग होंगे, जे काफिर थे, बहकार थे.

يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَى رَبِّكَ كَدًّا كَمَا فِي الْقَبْرِ ۚ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِرَيْبِنِهِ ۖ فَسَوْفَ يُعَاسِبُ حَسَابًا يَسِيرًا ۖ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مُسْتُرًا ۖ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَأَاهُ فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۖ وَيَصْلُحُ سَاجِدًا ۖ

● **नाम-अ-आमाल दाअें या प्वाअें हाथ में दिये जाने वालों का हाल:** सू-अ-इन्शिकाक आयत नंबर : ६ ता १२ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: अे इन्सान! तू अपने परवरदिगार के पास पहुंचने तक मुसलसल किसी मेलनत में लगा रहेगा, यहां तक के उस से ज मिलेगा, फिर जिस शप्स को उस का आमाल-नामा उस के दाअें हाथ में दिया जायेगा, उस से तो आसान हिसाब लिया जायेगा और वो अपने घरवालों के पास पुरशी मनाता हुवा वापस आयेगा, लेकिन वो शप्स जिस को उस का आमाल-नामा उस की पुस्त (पीठ) के पीछे से दिया जायेगा, वो मौत को पुकारेगा और लडकती लुई आग में दाभिल होगा.

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْعَاقِبَةِ ۖ وَالْحَقِيقَةُ كَالْحَقِيقَةِ ۖ تَصْلِي نَارًا حَامِيَةً ۖ تَسْتَقِي مِنْ عَيْنِ آيَةٍ ۖ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيحٍ ۖ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كُفْرُهُمْ

● **दोअभियों का हाल:** सू-अ-गाशियल आयत नंबर : १ ता ७ में अल्लाह तआला का इरमान है: क्या तुम्हें उस वाकिये (यानी कियामत) की भबर पहुंची है जे सब पर छा जायेगा? अलुत से चेहरे उस दिन उतरे हुअे होंगे, मुसीबत जेलेते हुअे थकन से यूर! वो दलेकती लुई आग में दाभिल होंगे, उन्हें भोलते हुअे (गर्म) यश्मे से पानी पिलाया जायेगा, उन के लिये एक कंटेदर जड के सिवा कोई पाना नहीं होगा, जे न जिसम का वजन बढ़ायेगा और न लूक मिटायेगा.

فَذَاقَ أَحْسَنَ رُكْحٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مِنْ دَلْسِهَا ۖ

● **काम्याप और नाकाम शप्स:** सू-अ-शप्स आयत नंबर : ९, १० में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जे शप्स (अल्लाह की इरमांभरदारी कर के) नइस (के जालिर व पातिन) को पाकीजा बनायेगा, वो काम्याप हो जायेगा और जे शप्स इस (नइस) को (गुनाह के दलदल में) धंसायेगा, वो नाकाम हो जायेगा.

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۖ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۖ

● **यतीम और मांगने वालों के साथ अरब्या बरताव करो:** सू-अ-जुहा आयत नंबर : ९, १० में अल्लाह तआला नसीहत इरमाते हैं: आप यतीम पर सभ्ती न कीजिये और मांगने वाले को मत जिडकिये (अगर कोई उजर हो तो नरमी के साथ माजिरत कर लो).

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ

● **जरा बराबर ली नेकी या बुराई करने वाले कियामत में उस का अंजाम देभ लेंगे:** सू-अ-जिलजाल आयत नंबर : ७, ८ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: जिस शप्स ने (दुन्या में) जरा बराबर कोई ललाई की होगी, वो उसे (आभिरत में) देभ लेगा और जिस शप्स ने (दुन्या में) जरा बराबर ली कोई बुराई की होगी, वो उसे (आभिरत में) देभ लेगा.

وَالْعَصْرِ ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُفٍ ۚ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۖ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۖ

● **नेक अमल करने वाले भोमिन अंदे काम्याप हैं:** सू-अ-असर में अल्लाह तआला ताकीद के साथ इरमाते हैं: कसम है जमाने की, इन्सान (अपनी उम्र जायेअ करने की वजह से) बडे भसारे में है मगर वो लोग जे ईमान लाअे और उनहोंने अरबे काम किये और एक दूसरे को एक पर (काथम रेलने की) नसीहत करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाभंदी की नसीहत करते रहे.

وَيَأْتِي لِكُلِّ هُمْزٍ لَمْرَةٌ ۖ

● **अैब लगाने और ताना देने वाले के लिये वईद:** सू-अ-हुमजल आयत नंबर : १ में अल्लाह तआला इरमाते हैं: हर अैसे शप्स के लिये बडी भराबी है, जे पीठ पीछे दूसरों पर अैब लगाने वाला (और) मुँह पर ताना देने वाला हो.

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۖ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۖ

● **नमाज में सुस्ती करनेवालों का अंजाम पुरा है:** सू-अ-माउन आयत नंबर : ४ ता ६ में अल्लाह तआला नमाज से गइलत व सुस्ती बरतने वाले को तंबीह करते हुअे इरमाते हैं: बडी भराबी है अैसे नमाज पढने वालों के लिये, जे अपनी नमाज से गइलत व सुस्ती बरतते हैं, जे दिभावा करते हैं.